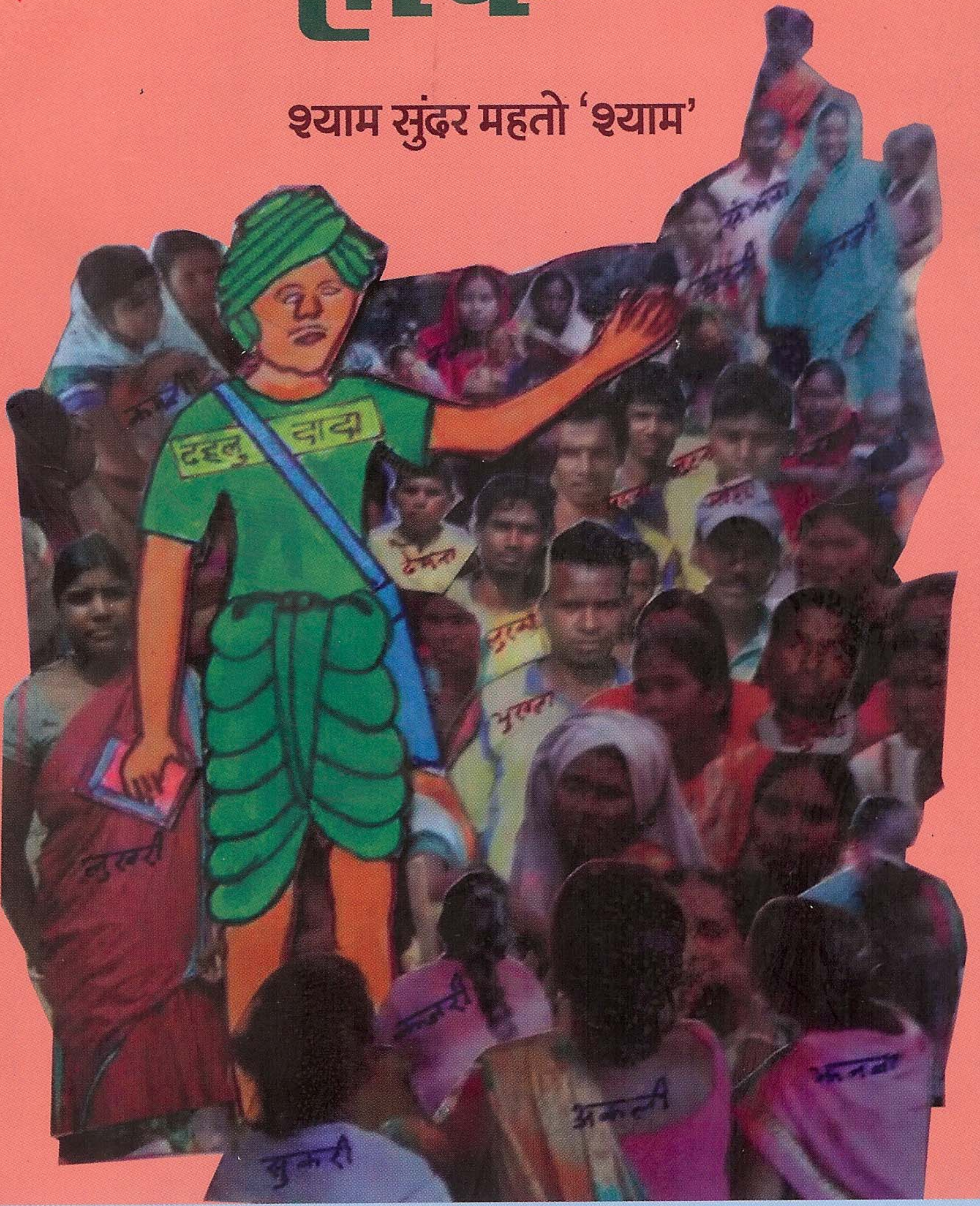
टहलु दादाक हाँक

श्याम सुंदर महतो 'श्याम'



1

टहलु दादाक हाँक

आदिवासी कथा संसार

3

टहलु दादाक हाँक

श्याम सुंदर महतो 'श्याम'

PYARA FOUNDATION

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
राँची (झारखंड)

मूल्य : ₹ 120

प्रकाशक:
प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, चेशायर होम रोड, बरियातु, राँची-834009,
दूरभाष : 0651-2201261, ई-मेल : pkfranchi@gmail.com,
वेब पता : www.kharia.in प्रथम संस्करण : जनवरी 2017
टाईपसेटिंग/आवरण : बिर बुरु ओम्पाय मीडिया 9234301671
मुद्रक : कैलाश पेपर कन्वर्सन प्रा. लि., रांची

TAHLU DADAK HANK

(Khortha articles by **Shyam Sundar Mahto 'Shyam'**)

ISBN : 978-93-81056-66-0

टहलु दादा हँकवो-हथ

खोरठा साहितेक भुइँएँ श्याम सुंदर महतो 'श्याम' बाबू भासा आर बिचारेक झारखंडी नदी लागथ। जे नदी लागाइत तीन दसक ले निरखँड़-निरधइक बोहे लागल हइ। ई नदिक धार बड़ी जोरगर-दमगर, जे हाड़पा लेखें समाजेक आपतार-झापतार के बोहवेक आर काइ परल जड़ ढीपा-टुँगरी के उखराइ के सम करेक खेमोता राखेहे। श्याम जीक अजगुत जाँगरा भरल चोंख कलम साहितेक दुइयो रूपें चलो हइन। जे झारखंडेक महान संसकीरति आधारित समतावादी समाज निरमानेक लेल उलगुलानेक लहरल बाँबरा ले कम नाँइ। तोहर एखन तइक छपल सभे रचना गुला झारखंडी पछान आर मानववादी समाजी मुइल के ओकिल रूपें मुखर भइके झारखंडी जन के बाइबी नेहाइत सवारथी समुदायेक खड़जंतर आर कुटिचाइलेक रंगचंगिया ओहाइर के उघराइ के खबरदार करेहे। सामाजिक कानापतियार आर धरमेक नामें जुग-जुग ले पइरचावल पसरावल-ढढ़नच आर छावाइंद के ओइसने उखरावेक कोरनिस करेहे, जइसन कोनो चासा आपन धान खेत ले मेरंडा के। ई लेताइरें लगाइत दरजन भइर छोट-बोड़ कितापें तोहें आपन बिचारेक आइग के आखर बनाइ के सोंपल हा। ई किताप टा तकरे अइगला खेप बुझाहे।

झारखंडी चेतना के खोरठा समाजें पसरावेक लेल जिरिंगजिद लागल श्याम बाबुक ई नावा किताप 'टहलु दादा हँकवो-हथ' ओहे बिचार आर भभना के ओइसने तेवारें आगु बढ़ावे हे। इनखर खास लेखन सइली, जे हमराँ बड़ी पसिंद हे, एकरो में गनगनाहे। अलाठी फिंगाठिक रसे पगाइल उनखर गढ़िया बिचारेक हदहदी आर तुकांत सइलीं लिखल लेख गुलाइं एक संगें गइद-पइद दुइयोक आनंद देइ।

'टहलु दादा हँकवो-हथ' केर लगाइत सभे रचना गुला के पढ़ेक बतर हिंदुस्तान अखबार पइल्हीं देल हल। मकिन किताप रूपें देखि के दोहरी खुसी भेल। एक ठिनें आलोअक सइंतल गोछी पइलों। कितापेक लेख गुलाइँ श्याम

जीक जगतउपजोगी समाजी नजइर बिसेस रूपें उपलल-छउपलल हइन। ई रचनवइनें ई हाँक दइके बतवल हथ जे झारखंडी संसकीरति कइसें महान हे आर बरतमानें, कहेक सइभ समाजेको लेल की रूपें उपजोगी हे।

हामें कामना करोहों जे श्याम जीक कलमेक ई उरजा बाढ़इते जाइ आर कलमकार के निफुट गतिसील आर जसें भरल ढाँगा जिनगी मिले।

- दिनेश दिनमणि

खोरठा की निर्झरणी रचनाएँ

मेरे बंधु साहित्यकार श्याम सुन्दर महतो 'श्याम' के व्यक्तित्व में जिन सद्‌गुणों का पारस्परिक सहयोग है इसका प्रत्यक्ष अनुभव उन्हीं लोगों को होगा जो कुछ दिनों तक उनके साथ रहकर उनके जीवन को बहुत निकट से देख चुके होंगे। मैं तो बरसों उनसे बराबर मिलता-जुलता रहा हूँ, उनके संसर्ग-सुख का अनुभव करता रहा हूँ, उनके राग-द्वेष रहित हृदय का उद्‌गार सुनता रहा हूँ, उनके सदाचार और सौहार्द्र का सुगन्ध पाता रहा हूँ।

यह रहा महतो जी का खेसमी गाँव। ये ऊंचे-नीचे पक्के मकान, बिजली का प्रकाश, बीते युग की यादगारों की तरह यहाँ-वहाँ अब भी माटी की झोपड़ी वाली बस्ती, पिछवाड़े सहिजन और केले का गाछ। उनके भी पीछे ऊबड़-खाबड़ जमीन और ऊंचे-नीचे धनखेत। पर इन सब के बीच भी वे मकान पैठ रहे हैं, नये-नये मकान खड़े किये जा रहे हैं। शहर बढ़ता जा रहा है, गाँव सिकुड़ रहा है। सामने पक्की सड़क है। जोड़-जोड़ा रौशनी के साथ चांदनी रात को चीरते हुए तूफान की तरह हड़हड़ाते, रौंदते आते हैं ये ट्रक, एक बाद एक। पहाड़ों को तोड़-तोड़कर पत्थर लाये जा रहे हैं, ट्रैक्टरों की ट्रालियों में और लाये जा रहे हैं लोहे के छड़, ईंटों के चट्टों पर चट्टे। धूल के बादल में कुछ लोगों के स्वर सुनाई पड़ते हैं, उसके बाद साँस तक लेना मुश्किल इतनी धूल उड़ती रह जाती है। इसी बीच टेलीविजन पर समाचार भी आने लगे, कहीं किसी मजदूर के मोबाइल पर, गाने बजने लगे।

इन्हीं के बीच शब्द-साधक श्याम सुन्दर महतो जी अपने मन के भीतर गहरे तक उतर कर अतीत के किसी कुंज में से शब्दों, वाक्यों, सँवादों को निकाल लाते हैं। मन में ही उसे झाड़-बुहारकर, धो-पोंछकर आपने निजी शब्द-कोश में सुरक्षित कर लेते हैं। उनके इस विराट् शब्द-कोश का सार्वजनिक हित में प्रकाशन अभी बाकी है। श्याम सुन्दर जी की एक महत्वपूर्ण कृति 'खोरठा वृहत् प्रकीर्ण सहित्य' सन् 2015 में आई है। इस पुस्तक की रचना

उन्होंने अपनी विदुषी पुत्री डॉ. कुमुद कला मेहता के साथ मिलकर की है। यह पुस्तक खोरठा भाषा की शक्ति का परिचय तो देती ही है, छात्रों, शोध कर्त्ताओं या खोरठा में रुचि रखने वाले लोगों के लिए सदा ही मार्गदर्शिका का काम करेगी।

महतो जी अपने पुरखे-पुरनियां, ग्रामीण पड़ोसियों, दूरस्थ ग्रामों से आये नाते-रिश्तेदारों से बातचीत के क्रम में बड़े सचेत रहते हैं। किसी का उच्चरित कोई शब्द-अचानक उन्हें चमत्कृत कर देता है फिर कहते हैं- "ददा तनि फिर से कह तो।" ऐसे शब्द उन्हें आनन्दित करते हैं उन्हें सम्पन्न बनाते हैं। इनकी अनेक कवितायें मैंने पढ़ी हैं। खोरठा के अनेक कवियों को मैं निकट से जानता हूँ लेकिन जितना श्याम सुन्दर जी ने मुझे प्रभावित किया है उतना श्रीनिवास पानुरी जी के अलावा शायद किसी और ने नहीं।

श्याम सुन्दर महतो जी का प्रांजल गद्य में लिखा लघु निबंधों का संग्रह 'टहलु दादाक हाँक' आपके हाथों में है। कहावतों, मुहावरों से सज्जित खोरठा की अच्युत छवि के दर्शन इस पुस्तक में होते है। अनुप्रास, लय, तुक और सहचर शब्द तो मानो महतो जी के गद्य की चेरी हैं। खोरठा के शब्दों से वे इस तरह खेलते हैं जैसे कोई बालक अपनी हथेली से गेंद को उछालता-लपकता है। इनकी भाषा में अविछिन्न प्रवाह है। इनको पढ़ते हुए कानों में कभी बंसी, कभी मांदल तो कभी नगाड़े की आवाज भी सुनाई पड़ने लगती है।

कलाकार का वास्तविक व्यक्तित्व उसकी रचनाओं में ही प्रतिफलित होता है। श्याम सुन्दर जी के लेखों में उनका विचार-वैभव, भाव-सौष्ठव, कल्पनाशक्ति और सबसे बड़ी चीज उनका अभिव्यंजन कौशल सर्वत्र उनके व्यक्तित्व की सुरुचि ही प्रदर्शित करती रहती है। चाहे वह उनकी कोई छोटी सी कविता हो, कहानी हो या किसी भी विषय पर लिखा गया कोई लेख। श्याम सुन्दर जी को अपनी भूमि, भाषा, संस्कृति, इतिहास और परम्पराओं का ज्ञान है और उनपर गर्व भी। स्वाभिमान तो इनकी अतिशय विनम्रता में भी स्पष्ट झलकता रहता है।

श्याम सुन्दर जी मूलतः खोरठा भाषा के कवि हैं। किन्तु खोरठा में लिखित साहित्य की विपन्नता उन्हें बराबर भीतर-बाहर मराती रही है। इस भाषा में व्याकारण का न होना, छन्द अलंकार, कहावतों के कोश, यहाँ तक

की शब्द-कोश का अभाव इन्हें बराबर चिन्तित करता रहा है। लेकिन श्याम सुन्दर जी तो चिन्ता में निष्क्रिय पड़े रहना जानते ही नहीं। वे जानते हैं कि प्रायः सभी लोक भाषाओं और हिन्दी बांगला, उड़िया जैसी आधुनिक भाषाओं को भी इन अभावों से कभी न कभी गुजरना ही पड़ा है किन्तु तथ्यान्वेषी और खोजी मेहनतकश मनीषी साहित्यकारों ने विभिन्न प्रकार के अभावों, विरोधों, छिद्रान्वेषणों से जूझते हुए इसे सफलतापूर्वक पूरा किया है। किसी न किसी को तो यह बीड़ा उठाना ही पड़ेगा, यहाँ तो खोरठा की जिन्दगी का सवाल है। श्याम सुन्दर जी ने यह बीड़ा हंसते-मुस्कुराते उठाया है।

यद्यपि झारखंड की भूगर्भीय और वन संपदा की तरह संस्कृति और भाषा पर भी लगातार हमले हुए हैं, बाहर से भी भीतर से भी। बांगला और मगही इन दो पड़ोसी भाषाओं से खोरठा को बचाये रखने के लिए खोरठा के सच्चे वंशजों को बहुत मेहनत करनी पड़ी है। बांगला के अनेक शोधार्थियों ने अपने क्षुद्र ज्ञान के अहंकार में कभी इसे बांगला का ही एक अपभ्रंश बताया है तो मगही के शोधार्थियों ने पूर्व मागधी जैसा नामकरण कर इसके स्वतंत्र अस्तित्व से ही इनकार किया है। श्याम सुन्दर जी ने अपनी इस खोरठा रचना से सबको माकूल जबाब दिया है और खोरठा की स्वतंत्रता का झंडा ऊँचा किया है।

अंत में में यही कहूंगा कि प्रत्येक भाषा में प्रचलित-अप्रचलित शब्दों का, उनकी अन्तर्निहित ध्वनि का, संगीत का कई प्रकार से अर्थ प्रकाशित होता है। ऐसे एक-एक शब्द अपनी भाषा में जीवन और समाज से जुड़कर अपने अविधानिक/अभिधानिक अर्थ के अलावा भिन्न-भिन्न अर्थ निरूपित करते हैं। शब्दों के स्वर संगीत से रूप रस गंध स्पर्शमय जीवन छलकता है। झारखंड की खोरठा भाषा से ऐसी ही निर्झरणी बहती रहे इसी कामना के साथ श्याम सुन्दर महतो जी को बार-बार साधुवाद।

- मनमोहक पाठक

विसइ सूची

समरपन

तोर से सुनल सबद मात्र, तोरे मुँहेक भासा।
तोरे सेवें जिनगी जाय एहे मनेक आसा।
तोरे माटीं बाप करल, जिनगिक धन पूरा।
तोरे भसें मांगो मात्र, तोहनिक गाड़ेक धूरा।

पेंदल झगरा

1 जनवरी 2009

हल अनगुते, मुँह-आँधार, ढहलु दादा जागला देला डांगर के घाँस-पोंआर, आर बाहिर ताकला पंसगी में, करमु, कइला कँदना, खेदनी रूदनी दलनी हथ झरकें सेंकाइ के तइयार। दादाक देखते सभीने कहला, जोहार। तातले दलनी कहली, दादा बड़ी कन-कनी, सेंस भेल सबके कटनी-मइड़नी। धान रखाइ गेल मोराइ डेमनी, आवा सुनुवा एगो तातल कहनी। आइज लागइ अंग्रेजी बछर के पहिला दिन, सइले नेहोर कर-हिओ सभीन। दादा कहला हाँ, तो सुना, आइज देखइबो देसेक पेंदल झगराक एगो नमूना।

ढेमना आर जुमना, हला जबरजस इआर। एगो गोर, एगो कार। जोते नाञ् जानऽ हला हार- फार। ढोवे नाञ् जानऽ हला सिका-भार। दुइओ हला बेकार, एकदम आलाचार, केव नाञ दे हल

रिन-धार। एक दिन ढेमना कहल-संगी, कइसें चलतइ घर-पइरवार। एसों करना हे, नुनिक जोर-नार, खरच हे ढांगा-ओंसार। जुमना कहल- अइसों हइ खेतिक बेस सुतार, खुब बरिआर। सइले तोर धार धारीं, आपन बारीं, हाम बुनबो बुट, उपज हतइ कचरकुट।

ढेमना कहल- हामर घार गेल हे धंइस, हामें गेल हों करजें फँइस, सइले किनबो भइआ भँइस। जुमना कहल -भँइस किनबें तो बेस कइर टेकबें, करबें नाञ् कोताही, हामर बुट तनिको चरेक नाञ् चाही।

ढेमना कहल- कतनो टेकब, कतनो देखब, मगुर तोर बारी, हइ हामर घार-धारीं, सइले चरबे करतो कखनु खेतें, कखनु आरीं। भंइस नाञ चिन्हतो दोसती इयारी।

जुमना कहल - देखिहें तनि चराइ, देबो मजा चखाइ। ढेमना कहल- देखबो तोर हिआव, तनि बुट बुइन के तो देखाव।

जुमना मलकल- एगो झुरी बिछल, भुइएँ एगो चइर-खुट्टा रेघा टानल, आर हकइंद के कहल- ले हाम बुइन देलिओ बुट। ढेमना उठवल एगो पथल, आर जुमनाक रेघा भितर लबदल, आर कहल दाँत मंइस, ले छोइड़ देलिओ हाम आपन भँइस। जुमना भेल बेहाल, कहल, तोर ई मजाल। कइर देल गड़बड़, लगाइ देल एक थपड़।

सुरू भइ गेल गारा-गारी, मारा-मारी। दुइओ बाटे सें कचर-कुटा माइर, भितर-कुटा माइर, कुँढ़ा- कुटा माइर, बिटा-गुड़ा माइर आर खाइट-सुता माइर। जुमना देल ढेमना के भुएँ बजाइर, ढेमना भी देल जुमना के थसाइर। ढेमना देल हाँकाइर, दोइड़ अइला ढेमनाक भाइ लुरका आर फुचा, देला जुमना के पछाइर।

सुइन के गुइल गोहाइर, जुइट गेला गँवाइआ जते हला अजवाइर,भइ गेल बोड़ गोंठवाइर, कइ झान अइला लइ के तीर-तरवाइर, दुइओ जाति बाढ़े लागल दराइर। दुइओ जाइत बुने लागला ताना-बाना, ढेमना कहल-दिए हतइ जुमना के जइरबाना। जुमना गेल थाना।

दरोगा हल बरिआर, करल दुइओक गिरिफतार। कहल ई लड़ाइ नाञ् लागो खेला-मामा, चलतो कइ बछर मोकोरदामा। बिकाइ जितो धोती पइजामा। सुरू भेल कचहरिक चक्कर, चलल कई बछर।

बिकाइ गेल गाय-गरू छगरी-पठरू, धान धुर। बाइद बहिआर टाँइड़-

टिकुर। दुइओक धन झइर गेल, दू-दू बछर जेहल भेल, जेहलें दुइओ रहऽ हला पास-पास, खेलऽ हला संगे तास। दू बछर भेल पार, भेलइ घर घुरेक सुतार, लागतो नात्र् पतिआर, दुइओ फइर भइ गेला जनम-जनम के इआर। ●

झारखंडी परब-परथा

14 जनवरी 2009

आइज अंधरे-पराते ढेमना-लुरका मोहर माहतो, लेपा, टेपा, फुचना, वितना, देवा, लुखरी, सुकरी, झनवां, सुगनी, कजरी, संझवा, गेंदिया, पसंगी में टहलु दादा से पुछला कि दादा ई झारखंडे बँउड़ी, टुसु, पुस-परब , सोहराइ, आखाइन-जतरा, हार-पुनाहा, एते परब एके ठिन काहे डिंगाइल हइ, फुरछाइ के बतावा। दादा कहला - हां, तो सुना, ऐ हरिआ, तनि हुंकारी देबें।

झारखंडी परब परथाक जनम जाने खातिर जाना कि ई झारखंड उबड़-खबड़ झार-झंखार आर खूँखार जानवर से भोरल हल। ई डरडरान धरती में पहिला गोड़ पसारे ओला हमनिक बुढ़-पुरान हला। जी-जानसे खइट-खखइट मानुसेक पहिला बथान सें महान हड़पा सइभताक निरमान तइक में हमनिके पुरखउती जुआन हला।

हाँ, हमनिक पुरबा-पुरूस ई धरतिक पहिला पहिचान हला।

पुरखा परकीरति परेमी हला। बहुत परिसरमी हला। कुसल करमी हला। आइर्जेक अतियाचार सें एखनिएँ हड़पा सें भाइग के झारखडेक झारें पहिला गोड़ धरला। बसकिता बाँधे खातिर झार-झंखार काटला। एखनो खुँटकटी आर कोंडकर जमीन पर हमनिक कबजा हे। पहिला घार गढ़ला, पहिला माटी कोड़ला, पहिला खेत खंड़ला। एखनी पहिला हार-फार जुआँइठ जोति नारन बनइला। बोनेक काड़ा-गरू के पालतु बनाइ दुआरी खुँटला। बिना खटल खाइब नाञ के **पन** लेला। काड़ा-गरू संगे खेतें खूब खटला। धान छिटला। सँवइ सिरें, ई मुठा-मुठी छिटल धान टा खँइचलाक-खइंचला पइला। पोवा-फुचएँ देल टा, कटाहीं नाइप के धान घार ढुकइला।

हामनिक पुरखा जानल हला कि अन, धरतिक रतन हे। एकरे से सिरजन हे, जीवन हे, एकरे अउरस सें माएक पेटें मानुसेक बिहिन पोरे हे। मानुस जिनगी जोरे हे। एहे जिनगी भोइर लालन-पालन करे हे। अन सकतिक खजाना हे, ई परकीरतिक देल दाना हे। एहे जीवन-जगत के खाना हे। घार, घर-करना हे, पिंधना-ओढ़ना हे। ओर-पुथना हे। सइले अन से अटुट रिसता हे, एकर अराधना हे। धान, मूंग, कुरथी, उरीद, लाहइर ,जोंढरा, कपास सें खाइ पिंधे-ओढ़ेक सोभे समइसा सुलइझ गेल तो बुझनगर आनंदे विभोर भेला। उबगारी पसु- पँइखी, फूल-फोर के 'गोतोर' कहला। समाज सें ई उबगारी गुला के सरधा-परेम सोंपेक नेहोर करला।

समाज विचार करल। परकीरति परेम सिकार करल। परब-परथा के रकम-रकम आकार देल, नेगाचार देल। किसान खेती सें उठल। कादा-माटी धोवल। काड़ा-गरू के आरामे पगुराइतें देखल। रिमझिम फुहारें झबरल पहार-परबत के नहाइल-धोवल देखल। नदी बाँध कुआँ टल-मल देखल। बोन-झारें हरियरी पसरल देखल। कठोर परिसरम सें रोपल-बुनल खेती के झबरल-पझरल देखल तो किसान ई फुरसइत में डंगुवा आर काँच-कुवाँर करमइतिक सोहान गीत-निरित से परकीरति के सरधा-परेम सें समरपन दिए खातिर 'करम परब' के सरंजाम करला। फइर पाकल धानेक बुदा काइट खरिहान भोरल तो अठेल धान देइख के कुरचल, आर अघन सँकराइतें धानेक आखरी बुदा के, काइट नाञ, कबाइर के बिध-बिधान सें, घरें आइन थापल। धानेक ई टुसा के पिआर सें 'टुसु' कहल। गाँवेक दादी, काकी, बेटी, पुतोह, काँच-कुँआर खुसिक-गीत

महिना भोइर गाइ के सरधा परेम सोंपला। आइ गेल पुसेक इंजरिया राइत, पुस सँकराइत। एकदम फुरसइत के साइत। टुसुक विदाइ, मकर सँकराइत आर संगे सोहराइ सँकराइत, तीन परबेक साइत। किसान संगे पँचपवनियाँ भी गेला खुसीं माइत। काहे कि सोब घारें बरकइत हे, सोब घारें सँपइत हे, सोब घारें धानेक बाइढ़-बढइत हे, आर सोब के फुरसइत हे।

सोभेक हिया हरसल हे। किसान सो -हजार गुना कइर, अनाज ढुकवल हे। बिटा बाँधल हे। पाड़ने सँइतल हे। मोराइ डेमनी भोरल हे। गनल-गुथल दाना परकीरतिक बरदान सें अदल-गदल हे। सोब पइरबार परफुल हे। सोब गाँव थलकुल हे। सगरे खुसिक गीत-निरित बिलकुल हे। गोला में चुहुल हे। गोलिनेक खोपें खोंसल फूल हे। धान देइख हिया उमके हे। मन चहके हे। देही मलके हे, ओंठें गीत छलके हे। नाचे खातिर गोड़ थिरके हे। मइना-मइनिक ठोरें-ठोर हे। जनि-मरद खुसी सराबोर हे। पोहना देइख छाती चाकर हे। खुसी डागर हे। घार गन-गन हे। चेंगा-चुटिया चनफन हथ। घारें-घार धान हे। धानेक खुसी अनठेकान हे।

"घरें आवे खुदी, तो बाइढ़ जाहे बुधि"।

हियाँ फुरछाइ जाहे झारखंडेक समरिध संसकीरतिक मतलब। **बारो महिने तेरो परब**। टुसुक संगे सोहराइ बँउड़ी तीन परब। काहे नाञ बाढ़तइ खुसिकर गरब। हाँ एखन तीन परबेक खुसी खदखदाइ उठल हे, हिया हुब-हुलइर हुलासें हदहदाइ रहल हे। गोझी अंगना निपाइ- बोढ़ाइ के चकचकाइ रहल हे। घर-दुआर पोताइ झँटाइ के झकझकाइ रहल हे। चाइरो बाटें डोहा चाँचइर गोलवारी खेमटा, झुमटा झुमइर टुसु गीत गनगनाइ रहल हे। **चउड़ल** सजाइ रहल हे। घारें-घार चिरा-दही गुर- खजारी, लाइ-पिठा महमहाइ रहल हे। गुँड़ी कुटाइ रहल हे। सोहराइ के गुँड़ी आर बँउड़ी के मुँड़ी, संगे सनाइ रहल हे। पिठा अइरसा घटरा छँकाइ रहल हे। कुल्हीं मरखँडिया काड़ा-बरद खुँटाइ रहल हथ। रसिक ढोल-माँदइर बजाइ रहल हथ। लोक होहाइर-गोहाइर से काड़ा-बरद के लिलियाइ रहल हथ। जनि-मरद गिदर गदगदाइ रहल हथ। ठेलमढेल खुसी गनमनाइ रहल हे। ई खुसी के पसारे खातिर चाइरो बाटें मेला छकछगाइ रहल हे। भेंडरा, भंडारीदह, भटिन दाहा, भलसूंधा, दिबधारा, सिसकारी, पारसनाथ, मधुबोन, हेंठ नगरें बँउड़ी मेलाक नगाड़ा गड़-गड़ाइ रहल हे। पालक-पाल लोक रसतें गदगदाइ रहल हथ। पहारें-परबतें पिरित के डोहा

हाँकाइ रहल हे। बनास, पम्पु घाट, चाँडिल मुसाबनी जयदा, बुंडु, कांची, हुंडरू, जोन्हा, राजरप्पा, सिलाइदह, नमीन-डीह, बाघा-पोल, देउलघाट, चपाइ सिनी, जामसोला, परकुल, सीता-पाँज, कोचो, तुलीन घाट, सती घाटें, टुसु मेला गजगजाइ रहल हे। रइसकाक रग-रग रितुवाइ गेल हे। रंग चंगिया गुला रदबदाइ रहल हथ। जनि-मरद चेंगइर डाँडा सकत कइर कनकन पानी मकर नहाइ रहल हथ। हुब हदहदाइ रहल हे। उमंग उधियाइ रहल हे। सुगा-सुगनी मिलन खातिर सुगबुगाइ रहल हथ। गोला-गोलिन मुनीस कमियाँ गोरखिया सोब मेला जाइले नितराइ रहल हथ। मरद-मेहरारू मिल-मेइस के मुचकी हाँसी मुसकाइ रहल हथ। गदराइल गिदर बुतरू, गदगदाइ रहल हथ। गुमन मुहाँक मन भी गुदगुदाइ रहल हे। हाँ, बँउड़ी, टुसु, सोहराइ सोब खुसी के परब हे। उपज के उतसब हे। ई संकराइत चासाक गउरव हे, एकर बहुत मतलब हे। ई सँकराइत पइरबरतन के पहर हे। हिएँ से दिन दमगर हे। रउद बलगर हे। बेरा हुबगर हे, बरतुपात के बतर हे। हियाँ तो खुसी डेगे-डेग हे। सँकराइत सेंस हवइते **"हार पुनाहा"** के नेग हे। पहिला माघ **"आखाइन जतरा"** हे। किसानी **नावा बछर** के चेहरा हे। नावा-नावा आसरा हे। ई एकदम फुरसइत के बेरा हे। घरें भोरल धान- धुरा हे। किसान नितरा हें, गुर-चिरा-दही पिठा अइरसा घटरा हे। संदेश साइज के, बेटी घार, मामा घार, मोसी घार घुरा-फिरा हे। सगरे मान-सनमान सगरे पानी-पिर्हा हे, दही-चिरा हे। मास-मछरी, चिचिभातेक चोंथा-चिरा हे, कधियो झुमरा कधियों डुमरा हे। कधियो घघरा कधियों चँदरपुरा हे। काहे कि एहे दिन से सुरू भइ जा हे जोरनारेक ताक-तिहा हे। धिया-पुताक लगन-बिहा हे। समधी-सोर जोरा-नारा हे। चउक पुरा हे, मँडवा छारा हे, सिनइ फेरा हे। वर-रियाती बहरा हे, कभुँ भइलमारा, कभुँ बइदमारा हे, तो कभुँ पँडिया-जारा हे। आसारें जाइ एकर थाह थिरा हे। एहे मकरे **'मकर'**, **फुल सहिया** जोरेक सपना हे। नावा बछरें, बेस बतर के, बेस बइरसा के, कामना हे। काहे कि कहल गेल हइ- **"मकरें पानी, टिकुरें धान"**।

पुरखउती परबें कोनों लुटे-कुटेक फचका-फाँदा नाञ हे। नाफा-मुनाफाक धाँधा नाञ हे। ढढ़नच के ढोल-ढाँक नाञ् हे। फोरी-फँदिक फाँक नाञ् हे। हिंगसा-निंगसा के मउका नाञ् हे। कोनो परखउका नाञ् हे। चंदा-बिहरिक माँग-चाँग नाञ् हे। कोन्हो अखरखँड़ उटपटाँग नाञ हे। फुच-फाच के फेव-फेचांग नाञ् हे। बिसाहा नेति नाञ् हे। मानुस-मारा चाइल नाञ् हे।

पुरखाक परब सोबले बेसी पुरान हे, महान हे। सोबले बेसी ओसान हे। सोबले बेसी सोहान हे। एकरे में आपन पुरखाक पहिचान हे। पाँच हजार बछर तइक अगियान के आँधारे नेसनाबुत भेल बाद भी, भेस्ताइल आर खाभड़ाइल बाद भी, एखनो सोबले बेसी गीत हे। कम खरच के रीत हे। ई सरल सहज सरस परबें सब जन के हित हे। पुरखाक परबें सोबले बेसी नइतिक मुइल निसचित हे। बिना खरचले हुबें भोरल दिन आर रीझें-रँगल राइत हे। समाजिक समता के साइत हे। आपन भासा संसकीरति हे। आपन जल, जंगल जमीन बपउती हे। परब-परथा पुरखउति हे। परकीरति परबें पिरति हे। सोब कुछ आपन बाप दादाक कीरति हे।

मगुर अफसोच कि आइज आपन में तेजी से बिसमिरति हे। आपन बाप-दादा छोइड़, गइर के बाप-दादा बनवेक परबिरति हे। ई आइर्जेक उपजुवल दुरमति हे।

हाँ, जाना कि आइर्ज खपतान, ई देसें आइ के पुरखाक पुरान आर सोहान संसकीरति के, सोसान कइर देल हथ। हियाँक हुब-हुलइर हुलास के हेंचइर हलुवा-हारान करल हथ। लाखो लाख पुरखाक जान के जिआन करल हथ। हजारो गाँव नगर नोकसान करल हथ। हियाँक हिरा-जवाहिरात के बनल डींड़ा- पिंड़ा के धाँइस-धुँइस डेरडरान करल हथ। विश्व-विखियात महान हड़पा-सइभता के ढिपाढान करल हथ। मूलवासी के धन आर गिआन से हीन करल हथ। मूलवासिक सिछा छिति-छिन करल हथ। आइज एखनिके हाथें हियाँक सिछा आर राज-पाट हे। मूल वासिक खटाली आर एखनिक ठाठ-बाट हे। एखनिके हाथें देसेक सोब-किताप, सोब-अखबार, सोब-टी.बी चेनल्स, सोब-फिलिम, सोब इलिम, सोब डिपलोमेटिक पद, सोब पइसा, सोव परतिसठा हे। बाजार बेबस्था अइग-टंगवा आइर्ज के बपउती हे। खाली ई देस नाञ, एखनिक बसें गोटे धरती हे। समुंदर हे, खनिज हे, पानी हे, सगरे मनमानी हे। एखनिए दाता हे, बिघाता हे। एखनिके पास सरग-नरक के खाता हे। कोनो भगवान आपने नाञ बनल हे। एखनिक बुइध रकम -रकम के अनगइन भगवान बनवल हे। माटिक मुरूत से मानुस के डेरवे हे। रकम-रकम के धरमें मानुस के फँसवे हे। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई बनाइ के लड़वे हे। आर बिना खटले अठेल पुंजी बढ़वे हे। पुंजिक बोलें मानुस के गरीब बनाइ, कादो-माटी, धुरें-गुँड़े, गुहें-गोबरें खटवे हे। एखनिक संकट मेटे खातिर **संकट मोचन** बनवे

हे। तारे खातिर आपन बाप-दादाक नाम रटवे हे। आपने सेठ सबर्न नरेस बइन के रहे हे। एहे तिकड़म सें एखनी बिना खटले जमींदार हथ, सरकार हथ, इज्जइत अपरमपार हे। एखनिक गोतिया गुला अवतार हथ। एखनिए लिख निहार हथ। महिमा अपार हे। एखनिक परब गुला फेर-बेपार हे। एखनिक सेवा करे ओला कुरमी-कहार हे, कमार हे, कुम्हार हे, चमार हे, सोंतार हे, खाली खटनिहार हे। कमाइ से पुंजीपतिक हाथे सोना-चाँदी हे, खटनिहार के हाथें सँकार हे। परकीरति परबें सउसन संभव नाञ हे। सइले एखनी परकीरति परब के घेंचा चाँपल हथ। मोरवे में लागल हथ। गीत-गुला भाँड़ल हथ। ओर-पुथान के ढाहल हथ।

मगुर एगो बहुत खुसी के बात हे कि हड़पा ढिपाढान भेल बाद ई पहिला मउका हे कि आजादिक बाद, एगो गइर आइर्ज के मदइत सें देसें संविधान बनल आर गोटे देंसे लागु भेल हे। ई संविधान धरम सें रिता हे। जाइत-पाइत, भिन-भेद, छुआछुत के निपा-पोता हे। समता हे। एकर में एते दिन से सँतवल, नेसनाबुत करल मूलबासी के विसेस अधिकार हे, पढ़ेक सुतार हे, बढ़ेक दरकार हे।

सइले आवा मूलवासी बुढ़ जुवान छउवा, ई संविधान के वॅचवा, माथा खटवा। बिना खटले खाइ ओलइन के खटवा। नांय तो हटवा। बना अगुवा, अपन भासा संसककीरति के पढ़ा आर पढ़ावा। अपन सबद के सिखा आर सिखावा। आपन इतिहास के लिखा आर दुनियॉइ के देखावा। दीया के उसकावा। आलों के बढ़ावा। आँधार के भगावा। देखा चोरवा लुइट लेलो बोनवाँ। ओकराँ गुल-गुलवा। आपन आजा परआजा के ओनवा, आपन जइर के जोगवा, देखा पुरखाक संसकीरति भइ गेल हे अधमोरवा, भरम के भगावा, सोहराइ, सरहुल, करम, बॅउड़ी, टुसु के दगदगवा। आपन जन के जगावा। आपन चेंगा चुटिया के सिखावा-पढ़ावा। हियाँक हुलइर के हँसावा। झुमइर के बढ़ावा। अखरें खेला बीर रसेक गधका-नटुवा। आपन संसकीरति के फुँइक नाञ् फुरवा। बपउती के बंचवा। संसकीरति के सजवां, बोला आपन भसवां, चलवा आपन रितवा। बाँधा आपन चेठवा। आपन दबदबी देखवा। नाञ् तो मिलतो ठेपवा। हाँ, ई चिकन मुहॉ गुला के बेस कइर चिन्हा। चेतल रहा, नाञ तो ई बइस-बुलुवा, अइग टंगवा बिगाइड़ देतो फइर सोब खेलवा। ●

सरहुल

23 अप्रैल 2008

बहुत महान हल हियांक हड़पा सइभता। पसु-पंइखी, गाछ-बिरिछ, फल-फूलेक बथाने हल मानुसेक बसकिता। सभीन के संग हल मानुसेक सहजीविता। मानुस आर परकीरतिं हल पिरित के पकिया रिसता। ई रिसता के समाजें चिरोक्काल जियंत राखे खातिर पुरखा जीव-जंतु, गाछ-बिरिछ, फल-फूल के नामे बनइला आपन गोतर, आपन गोतिया, आपन माञ-पिता। आर गाछ-बिरीछ के राजा **सखुआ समूह** के कहला आपन **देवता**। ई देवता के सजवे खातिर रितु के राजा आवे हे। सखुआ समेत सभे में हुब हरस हुलासेक उतसव मनवे हे। विसेस सखुआ के सितें नहवे हे, मधु रस मखवे हे, कोमल चिकन चकचक नावा-नावा पातेक परिधान पिधवे हे। सुगंधें सरोबोर फूल से सजवे हे। एहे आंनदेक चुहुल के नाम हे, सरहुल।

मधु मास, मधु-रसें टुले टुल हे। नतुन-नतुन चिकन चिकन पात-पाल्हा नरम गुलगुल हे। फुनगीं-फुनगीं फुल, आर फुलें-फुलें तितली-बगडुल हे। बेस धान, जोढरा, लाहइर, मुंग, महुआ सें गाँव थलकुल हे। मधु-रसें मातल रसिक परफुल हे। दुलरी दीदी लुखरी, सुकरी, झनवाँ, सुगनी, कजरी सोभेक गातें बेस-बेस पिंधान-ओढ़ान बिलकुल हे। सोभेक खोपें खोंसल फुल हे। टहलु दादा, मोहर महतों, ढेमना, लुरका, देवा, आर सभे चेंगा-चुटिआ में चुहुल हे। काहे कि गोटे झारखंडे हुब, हुलइर, हरस, हुलास लइ के आइ गेल महान परकीरति परब सरहुल हे। झार-बोन फुलें-फोरें महके हे, चरँइ चिनगिनी चहके हे। बाज-बजने हुबेक ढेव उमके हे। गीत गावे खातिर मन मलके हे। नाचे खातिर गोड़ थिरके हे। देखा ने गाछेक डारीं सुगा-सुगनिक ठोरें ढोर हे। गोटे झारखंडे सरहुल के खुसी सराबोर हे। नजिक सें देखा ढोकरा भूदा गाँव। हिआँ हे सरइ राख के सितल छाँव। मुख पोहना रूपें नेवतल गेल हथ, धनबाइद के एस. पी. मानिन शीतल उराँव संगे आइल हथ जिनगिक संगी मानिन रेशमा। सोभे लागथ परकीरति धरमा। सोव के मुख परब लागइ रीझें- रांगल सोहराइ, सरहुल बँउड़ी, करमा। धनबाइद के झारखंड-टाड़ीं मुख पोहरना रूपें आइ के कहला पूर्व समाहर्त्ता मानिन बिरसा ओडैया, कि आदिम जुग सें ई महान परकीरति परब के मनवल हथ हामनिक पुरना परिया। चाइरो बाटे सुनाइ रहल हे सरहुल के साड़ा। सगरे बाइज रहल हे ढोल, माँदइर, बाँसी आर नगाड़ा। जनी-मरद झुइम-झुइम के नाइच-गाइ रहल हथ झुमइर, जोइर-पकइर कें डाँड़ा, संगे झुइम उठल हथ, मानिन हेमन्त टोपो, एस पी जामताड़ा। आरो आइल हथ जोड़ा पोखइर थाना प्रभारी मा. बीर सिंह मुंडा। बेरमो दामुदा में भी सजल-बजल हे सोभेक घर-अंगना। बाइज रहल हे सरहुल के बाज-बजना। सरहुल मनवे खातिर आइल हथ बोकारो के उपायुक्त मानिन प्रवीण कुमार टोपो, बइन के मुख-पोहना। तोपचाँची परखंड के पाकेर बेड़ा। साखा टाँइड़ें, सरहुल मनवे खातिर जुटल हथ गोटे गाँवेक चेंगा-चुटिया, जनी-मरद, सगरे सुनाइ रहल हे सरहुल के साड़ा सबद। मुख पोहना रूपें एखन नेवतल गेल हथ पूर्व विधायक मानिन सब्बा अहमद। ई हुबें भोरल दिन टा देइख-देइख भइ गेल हथ गदगद। ई आनंदें भाइग गेल हे गाँवेक दुख-दरद। आपन गाँवे टहलु दादा कहला - जुमा-जुटा- माटिक सकत सावांग। सोभिन माथा खटवा। सँथाइ-साँथाइ के सोंचा। डाँड़ा सकत करा। इंजोर खातिर दीया के उसकुआ।

जाना कि सरहुल एगो बेस बतर लागइ। एहे परब के गोड़ा धइर माटिक इतिहास के ओनवे चाही। पुरखा के जाने खातिर धेआन गड़वे चाही। खोट खयानत सें बोन के बँचवे चाही। गाछ-बिरिछ सें पिरथिवी के सजवे चाही। सुन्दर पिरथिवी बनवे चाही। जन-जन के जगवे चाही। पिरथिवी के सरगतवे चाही। जाना, कालेक खोहें चाँताइल-चिपाइल हड़पा, मोहन-जोदड़ोक पुरना परिआ के, आपन गोतर-गोतिया के, चिन्हा, बाप-पितिआ के, खुँट दर खुँट के, पुस्त दर पुस्त के। ●

करमाक कदकदी

24 सितंबर 2007

भादर आइल हे। झारखंडेक मुख परब करमा आइ डाँड़ाइल हे। गाँवे-गाँवे गीत गनगनाइल हे। घरें-घरें खुसी खदखदाइल हे। अखरें-अखरें करम डाइर गाड़ाइल हे। आइज बलिया पुरेक इसकुल टाड़ीं। करम मिलन मेलाक हुइल माइल हे। कुसमा टाँइड़, कोइर टाँइड़, कनकनी, कुरमी डीह, कुसुंडा कुसतोर ... सो ओ गाँव सें गीदर, बुढ़, जुआन, जनि, मरद, बेस-बेस पींध-ओइढ़ बलियापुर सोझाइल हथ। मेलें दन दनाइल हथ। सरधें सन-सनाइल हथ। 30 गो झुमरिया दल नेताइल हथ। सोब नाचे-गावे ले मन-मनाइल हथा। धुंधाक दल मालकोंचा धोती पींध दस गो धमसा धमधमाइ रहल हथ। सो जन नगाड़ा गड़गड़ाइ रहल हथ। सो माँदइर तड़तड़ाइ रहल हथ। सो सोकिन बाँसी बजाइ रहल हथ। पुरना, पेपटीं सुर चढ़ाइ रहल हें,

मदना, मुरलीं गीत उठाइ रहल हे। गुडरा-मुडरा, मंदन-भेड़ीं जोर लगाइ रहल हथ। पोखना, ढाँक पड़पड़ाइ रहल हे। फोगला बुढ़ा, जाधें ताल तड़तड़ाइ रहल हे। दुलरी दादी, थपड़ी बजाइ रहल ही। होपना, हाथ मलकाइ रहल हे, सोब के हँसाइ रहल हे। सगरे नरसिंघा, ठेकचा, फेचका तिरिओ, गोड़ाम टोहिला रकम-रकम के पारम्परिक बाजा गजगजाइ रहल हे। कते अन-चिन्हार, भीड़ देइख भकुवाइ रहल हथ। कचरकुट भीड़ चाइरों बाटें छितराइल हे। पइछमें कमलिक दल खोपें झिंगा फुल खोंइस 20-20 के दु-पातिं नाचें गाँथाइल हथ। पुरबें कजरिक दल 25-25 के तीन पातिं जोराइल हथ। कमलिक पाँइत गीत उइवल हथ :-

कोन पतइ लांबा-लंबा, कोन पइत चिरा रे।
कोन पतइ हरि हर, फोरे-गोले गोल रे।

दूसरा पाँइत जबाब देला ...

आम पतइ लांबा-लंबा, तेंतइर पतइ चिरा रे।
नेंबो पतइ हरि-हर, फोरे गोले गोल रे।

पइछमें कजरिक पहिला पाँइत गावल हथ ...

हार जोते हरवा, कुकुरें बुने धान रे।
बोनेक बाँदर ढेंका फोरे, लेढ़वे किसान रे।
दोसरा पाँइत गीत लोकल हथ ...
बाधें खोजइ रोपनी, हवइते बिहान रे।
हाथी दादा कादो करइ, खाए जलपान रे।

तेसरा पाँइत गावल हथ ...

सोभिन मिली काज, करलें हतइ हित रे।
सभे मिली एहे तरि, जोरिहा पिरित रे।
देखीनिहार ...
अहइ, अहइ रे, सोभे मिली एहे तरि जोरिहा पिरित रे ...

मेलें खूब हुब हुलइर हरस हुलास हे। अंदोर आस-पास हे। राइत भइ गेल हे, मगुर दिन अइसन परकास हे। मंचे मुख पोहना बी.डी.ओ. साहेब, बगलें बड़की काकी से पुछलाः - ई जावा से काहे पिरित हे? काकी- आँकुर

अन्न के सक्ति हे। एकरे सें जिनगिक बरकइती हे। एकरे सक्ति सें माएक कोखें जिनगिक बिहिन पोरे हे। जिनगी बतरे हे।

मु पोहना :- करम डाइर के काहे चलन हे?

काकी :- झारखडीं "काम नाञ् तो भोजन नाञ के पन हे" सइले कर्म के चिन्हा रूपें **करम डाइर** के चलन हे।

मु पोहना :- आरो कुछ तुरूप हे?

काकी :- हामनिक आदि इतिहास कालेक खोहें चुप हे। करमा, इतिहासेक एगो रूप हे। ई परब-परथा, पुरवा पुरूमेक बेस बेवस्था हे। बेस गुन सोवाद हे, बेस-बेस गीत नाद हे। सोभेक समान मान-मरजाद हे। जाइत-पाइत, ऊँच-नीच, जनि-मरद के भिनाभेद नाञ। इजइतगर हथ बेटी माञ्, ई परकीरति-परब सहज, सरल, समरसता सें भोरल-पुरल हे।

सेसें मुख पोहरना भीड़ के हाँकाइ कहला :- बुझाइ गेल कि ई जगतें सुमति, सुदसा, सुख-साँति रीझ-रंग आने खातिर ई कइदगर करमा के जगवे जोगवे आर जग-जगवेक दरकार हइ। ई धरती के सिंगार हे। जइ करमा।

संगे जुमल जनेक, 'जइ करमाक' कन-फोरवा जइ जइ कार सें धरतीं आकास गरमाइ गेल। करमाक गउरव गममगाइ गेल। ●

करम परब के महातम

सोमवार, 24 सितंबर 2007

काइल करमाक भासान भइ गेल। आइज बेटी छउवा अजवाइर हथ। कुल्ही-कोचें कदकदाइ रहल हथ। एखन दुलरी दींदीक बइठकी में करमाक समीछा चरचा में काँव-काँव कइर रहल हथ। चिन्हा! कोनो चेहरा अन-चिन्हार नाञ् हे। दुलरी दीदीक धारीं, टहलु दादा के बहिन अकली आसनासिंघा से आइल हथ। ओकर धारीं, ढेमनाक बहिन ढिलमनी, ढोखरा से आइल ही। माँझे, लुरका के बहिन लखवा, लाल-बाजार सें आइल ही। भुखलाक बहिन भुटली भेलवा-टाँइड़ से आइल ही। डाँड़ाइ के बोले में नाकर-नुकुर करऽ हथ। कुचा-कुची करला पर कमर-टोली के कमली खेमसी के डा. कुमुद से कहली - तोहें ई बछर भासा-संसकीरति में पी.एच.डी. करल हा। तोहर कचरकूट कीरति सुनल हों। सइले करमा के कीरति फुरछाइ के

बुझावा। डा. कुमुद डाँड़ाइ के कहला :- अइसों करमा में बेस तामझाम देखलों। कोनोठिन कइसनों - मइसनों नाञ्। आबें बेटी सब पइढ़-गुइन के सिखित-सियान भेल हथ। सइले पुरखाक चलवल ई परकीरति-परब के गुन-सोवाद बेस कइर बुझल हथ। हाँ, करमा कोनो काना- पतियारी के परब नाञ लागइ। ई महान परकीरति परब हे। जे अन्न सक्ति सें जिनगी के लालन-पालन हवे हे। माएक पेटे जिनगी के आँकुर फुटे हे। आकार मिले हे। संसार के सिरजन हवे हे। अन्न के अंदर रहे ओला, ओहे महान सक्ति के जावा रूपें नौ दिन तक अखरें जाइ के, माला तरि गाँथाइ के, गीत गाइ के, नाइच के, उपास काइट के, सनमान देल जा हे। काँच-कुँआर सब सइज सँवइर के सरधा समरपन करऽ हथ। ई परकीरतिक पिरीत के गोटे पिरथिबी में पसारे चाही। परियाबरन बँचवे खातिर ई साफ-सुथर संसकीरति के आरो सँवारे चाही। ई परकीरति-परब में फेव-फेचांग के फचका-फाँदा नाञ्, मेढ़-मुरूत के धाँधा नाञ्। ढढ़नच के ढोल नाञ्। लुटे-कुटेक ढेंकी नाञ्। नफा-मुनाफा खातिर हबका-हबकी नाञ्। चाइरो बाटें काँच-कुँआर के कोकिल कंठे मन-मोहवा गीतेक गहगही हवे हे। ढोल, नगारा, माँदइर, बाँसिक सुरें झिंका झोइर झलका झुमइर में रइसका सब के चहचही हवे हे। गाँवे नौ दिन तक रीझें राँगल राइत आर हुबे भोरल दिन हवे हे। हड़पा-काल सें ई परब बिखियात हे। खरचा में सिरिफ खीरा-धान-पतई, बेलंदरी, झिंगा फूल आर बासी-भात हे। सोभिने ताली बजाइ के कुमुद के खूब जइ-जइकार करला। कमली कहली- "आइज हामनी गियानेक सागरें डूब देलों। दीदीक बातें दम हइ, जबरजस खेमोता हइ। दुनियाँइ के कान दिएक दरकार हइ। हामनी के आपन नेगाचार, परब-तिहार, रीझ-रंग, गीत-नाद, चाइल-चलन, उठन-बइसन के आरो मजगुत करे चाही। नाञ् तो सेठ सामंत नरेश सब माटिक मुरूत ठुइस के गरिबेक खुइन चुइस लेता।"

दुलरी दीदी कहला- "**करमा** देसेक सोब परब ले बेसी पुरान हे। सोबले बेसी ओसान हे, सोबले बेसी सोहान हे। करम गीत के कोनो किताप नाञ्, सी.डी. नाञ, इसकूल नाञ, सिछक नाञ्, मगुर एखन तक भारत के कोनो परबे एतना लोक-गीत नाञ् हे जतना **करम** गीत हे। सोबले कम खरच के रीत हे। अइसने सरल परबें गोटे मानुस जाइत के हित हे। सइले एकर नइतिक मुइल सोबले बेसी नीक-नीमन निसचित हे।" ●

पुस में सभे खुस

सोमवार, 21 जनवरी 2008

सोहराइ, सोब के खुसी से सोरोबोर कइर, पार भइ गेल हे। चार-धोवा, गुँड़ीकुटा, बँउडी, दही-चिरा, खिचरी, खुसी दइ के पुस-परब फक- पार भइ गेल हे। मगुर बाँचल-खचल पुस के खुसी एखनो पसरल हे। घरें-दुआरें पहारें परबतें एखनों डोहा, चाँचइर, घेरा गीतेक गूँज गनगना हे। हाँ, पुस में सोभिने खुस हे। छगरी चरवा भी खुसी से छाती चाकर कइर मलके हे। गरू-गोरखियाक हिएँ भी पिरीत छलके हे। रसिक के सँचल सपुन सिठाइ गेल हइ। ओकोर सुगा हेराइ गेल हइ। रसिक पहारेक मुँधने डाँड़ाइ के डोहाक डागर सुरें आपन हेराइल सुगा के हिया फाइर के, जिया जाइर के, हाँकाइ रहल हे। दरद सें आकास बोन-झार के करजी काँपाइ रहल हे। सुगा के सुनाइ रहल हे :-

आसा जे देलें नुनी गे..... भोरोसा जे देलें गे........
ओरे नीमा तरें राखऽ लें डाँड़ाइ।
नीमा पतइ झरी गेलइ गे..... भेंउरा गुजरी गेल,
ओ रे अबे नुनी नखो बिसुवास । ओ रे.......

ई रसिक फिल्मी रसिक रकम दारू पी के माताइ नाञ् जा हे। मगुर बिरह में एकाइ काने अँगरी दइके गाइ रहल हे। सांसे-मांसे रसल-बसल पिरीत के दरद बइराइ रहल हे, जीव जुड़ाइ रहल हे। ई ऊँचा हाँक अगम आकासें धूर-धूर तक छिरियाइ रहल हे। बदरी संग बतियाइ रहल हें, बोनेक पाल्हा-पात के बताइ रहल हे, हवा, हाँक के परकीरति में पसराइ रहल हे। गाँव तक पोंहचाइ रहल हे। पता नाञ् सुगा तक पोहँइच रहल हे कि नाञ। पुरन भी पारसनाथ पहारें डोहाक सुरें हाँक दइ रहल हे :-

परसनाथ पहारें दइया रे ...... छलऽ छलऽ चढे पोंठी माछ।
एके पोंठी धरऽलों, दुइयो पोंठी धरऽलों ...
ओरे .... तीने पोंठी भइ गेल बिहान।

आइज सात दिन भइ गेल, मगुर भेंडरा मेला एखनो भरखराइल हे। ढेमना, लुरका, बिगना भुटरी, भुखली, भंडारी दह भलसूंधा भटइक के आइज भेंटरा मेला गेल हथ। भेंडरा मेला में रकम रकम के खेला हे। दर-दोकान ठेलमठेला हे। आरी, कटारी, लोहारी समान के बिसेस दोकान-दारी हे। बरन-बरन के सर-समान हे। सभेक पसिंद के ठोर-ठिकान हे। किसान के कोदाइर, गाँइत, मुसकल, बकसा, बलम, बरछा हे। नउवा के खुर, कँइची, नरहइनी हे। बढ़ी के बइसला, रूखना, आरी, आगर हे। राज मिसतरी के करनी, बइसली, हे। जनी खातिर कराही करछुल, कजरोठी बँइठी तावा हे। आरो अरसी कंकवा हे। फोकना बेंचवा हे। गीदर-भुलुवा गुलगुलवा हे। मजा अउरी- पथारी हे। जादू के पेटारी हे। तमासा लबारी हे। मोहड़ा- मोहड़ी जइ-जोहरी हे। हित-नाता, सहिया, समधी-सोर के भेंट अँकवारी हे। पान-सुपारी हे। कतारी हे। सुकरी, लुखरी दिबधारा, सिसकारी, बोरवा-घाट आर गुइनघसा मेला घुइर के आइल हथ। गुजरी, गेंदिया, गहना-गुरिया भी नाञ् खोलल हथ।

डोहा हाँकते-हाँकते ढोढ़ा बइस गेल हइ। मंगरू सुकरिक खोपें फूल खोइस देल हे। सोब में मेला के खुसी हे। पुस के कसकसी हे। धइन हला हमनिक पुरबा-पुरूस। सोइंच-बुइझ चले ओला मानुस। परब खातिर चुनला भोरल-पुरल महिना पुस। छगइर-चरवा तक खुस। हाँ पुस के खुसी जग जाहिर हे। खुस गरीब-अमीर हे। सोब के हाँड़ी थिर हे। गोरखिया तइक निफिकिर हे।●

बँउड़ी परब

सोमवार, 14 जनवरी 2008

पुस-परब अइलइ रे। लाइ-पिठा घारें-घारें......
ताँता लाऽ गलइ रे पारस नाथ पहरी ऊपर......

गाँवें घारें, बोने, पहारें, डहरें, बाटें, सगरे पुस-परब के खुसी खदखदाइ उठल हे। पुस-परब काहा चाहें बँउड़ी-परब, सगरे 'पिरित' हॉक दइ रहल हे। सुकुरबार के चार-धोवा, सनिचर के गुँड़ी कुटा आर एतवार के बँउड़ी मनाइ, जनि- मरद, बुढ़-जुआन, चेंगइर सोब खुसी में बँउड़ाइ गेल हथ। घारें-घार घटरा अइरसा, मुंधी-पिठा, खपइर-पोड़ो छिलका रोटी बइगनी फुलउरी बरन-बरन के पुआ-पकवान आर चिचि-भात के चोंथा-चिरा चलइ रहल हे, सगरे हुब हुलइर हुलास गदगदाइ रहल हे। पुस महिना पुस-परब सोबले बेस महिना सोबले बेस परब। किसानेक घारें धान-चार, बिहिन, खदिहन, कुरथी, लाहइर,

मूंग, तिल, घंघरा के बिटा बाँधाइ गेल हे। पँच-पवनियाँ नउवा, धोबी, कमार, मुनिस, कमियाँ, गोड़ाइत, सोब के बछर पुरउती धान नपाइ गेल हे। पाँड़े के खरिहानी दिआइ गेल हे। सोब घार अछल-गदल अन-पानी हे। मउज मनमानी हे। "**घरें रहे खुदी, तबें चले बुधि**" सोक, मउज, साज-सिंगार सनसनाइ उठल हे। आइज पुस सँकराइत के दही, चिरा,लाइ, तिलोरी, के सरपट सोवाद के दिन लागइ। सुकरी, गुजरी, अकली, कुसमी, रूदनी, सुगनी गाँवेक सोब बेटी छउवा जोरिआक जनि घाटे मकर नहाइ के सइरसा भुँथि के आइग लहकाई डोहा हाँइक रहल हथ। जोरिआक ऊपर बाँटें, मरद घाटें, ढेमना, लुरका, भुखला, बिगना, सितला, डोहा हाँइक के हाथ मलकाइ रहल हथ, डोहा आर घेरा गीतें पिरित के हाँकाइ रहल हथ - **कहाँ जे उगलें चाँदा रे** ... जबाब हइ कि **कोना रसिके डाकई रे** ... हाँ, पुस परबें पिरित के पियास पन्हाइ उठल हे। लउतन पिरित पोंगाइ रहल हे, हाँक लगाइ रहल हे। पिरित रसें मन माताइ रहल हे। जोबन सताइ रहल हे। रसिक रिझाइ रहल हे, गीत लोकाइ रहल हे, डोहाक सुरें सवाल-जबाब भइ रहल हे। सुरें- सुरें तइ भइ गेल हे कि आइज रातीं पारसनाथेक डहर धरल जितइ। राइत भइ गेल। बिआरी खाइ के गिदर बुढ़ा सुइत गेल हथ। मगुर जुआन रसिक के आखीं नींद कहाँ? रसिक, झार-बोनेक डहरें जाइ, पिरित के डोहाक सुरें हाँक दे हे। 'धनी' भी बारी बाटेक दुआरीं साज-सिंगार कइर रसिक के सुर सुने खातिर कान-पाइत के डाँड़ाइल ही। हाँ, कुसमी, सुकरी रूदनी, गुजरी, सुगनी सोब पारसनाथेक डहर धइर लेल हथ। डोहाक सुरें रसिक के सोब बयान बतवल जाइ रहल हथ। मगुर पारसनाथें तो डहर देदार हे, डहरें लोक हजार हथ। राइत भोइर भिनु- भिनु डहरें डोहाक सुरें चलऽ हथ। रसिक हाँक दे हे। धनी के जबाब मिले हे। बिहाने पहारेक मुंधने भेंट हवे हे, मुचकी हाँसी से मोहड़ा-मोहड़ी हबऽ हथ। हुबेक ढेव टल-मल कइर उठे हे, मनेक मेंजुर नाइच उठे हे। फइर मन मोताबिक मिल- मेइस के मधुवन मेला, हेठ- नगर मेला, आर भेंडरा-मेला। साँझे घार। राइत दिन के चलल बाद भी पिरित में थकान नाञ्। परियाक परिया सें पुस-परबें पारसनाथें परकीरतिक पाल्हा-पातें कते पिरित पोंगा हे, कते पिरित जोरा हे, कते पियासल पिरित पतियार पावे हे। पता नाञ समय सिरें पइरबरतन भेल हे। मगुर पइतगर पिरित पेंदल नाञ भेल हे। ●

सोहराइ

सोमवार, 23 अक्टूबर 2006

देखा ने घार सें बहराइ। आइजे लागइ गोटे कोयलांचलें सदानी **सोहराइ**। गाँवे-गाँवें खपरा-माटी आर पोंआरेक घार गुला के रंग-बिरंग के माटी सें गोझी-अंगना, पींड़ा-पचरी, देवाल सब के किसिम-किसिम के कला सें नींप-बोइढ़, झाँइट-पोइत, के चिक-चिक चिकन कइर देल गेल हइ। गोंइठा, झूरी-काठी, तिहा-ततवीर सें सजाइ देल गेल हइ। हार-फार, रकसा, मइर, कार्हा, कोदाइर, गाँइत, साबल, हँसुआ, धोइ-पोंइछ के सनमान के साथ राखल गेल हइ। गरू-डांगर के नहाइ-धोइ के साफ-सुथर करल गेल हइ। सिघें तेल, सिन्दूर, आँखीं काजर, गातें गुड़ी अइरपन से रंग-बिरंग के छाप, आर मुँडे मोउर पिंधाइ के दुल्हा रकम साज-सिंगार करल गेल हइ। गोझी अँगने चोउक पुइर के, गोड़ धोइ के, पोंइछ-पोरइछ के, गोड़ लाइग, जोहार

कइर के, ढोल-माँदइर बजाइ, के सनमान करल गेल हइ। ढोल सुइन के काड़ा आनन्दें आँडराइ लागल हथ। माँदइर- ताल सुइन के मरखँड़िया डांगर मलके लागल हथ, बाँसी सुइन के बरियार बरद बमके लागल हथ, चमकें लागल हथ। आबट बाछा आँधें-पथारें अखारे लागल हथ, रंगचंगिया रइसका सब दु-टेंगिया धोती झाइर के, माथें पाटी फाइर के, कुल्हीं-डाड़ीं मलके लागल हथ! आइज रीठा-राँझा सें कुरता -धोती, गमछा, पगरी चमकऽहइ। टहलु-दादा भी टहटहिया पोसाकें टहल मारे लागल हथ। दुलरी-दीदी भी नहाइ-धोइ फुलेल तेल माइख, रेसम साड़ी पींध, कँकवा-अरसी लइ, साज-सिगारें लाइग गेल हथिन। आइज ककरो पींधना कइसनो-मइसनो नाञ् हे। सोहराइ माने रीझ- रंग के दिन, ढोल-माँदइर मिरदंग के दिन। झलका-झुमइर के दिन, खेमटा, झुमटा चाँचइर के दिन, हुब-हुलइर के दिन, आइज रइसका नाचे-गावे ले, आर कन-रइसका सब सुने ले बहराइ गेल हथ। आइज गाँवे-गाँवे सोहराइ के मेला। डांगर आर मीरा के खेला। जनी-मरद, चेंगा, चुटियाक भीड़ ठेलम ठेला। दुआरीं-दुआरीं काड़ा-बरद खुटाइ गेल हथ। गाँवें सात दिन सें हुब-हुलइर हइ, आइज सेंस, मगुर बिसेस हइ। आइज सगरे देखा डांगर आर मीरा के बरियारी। चाइरों बाटे ले हुब-हुलइर के होहारी। बाजे लागल नगाड़ा। उमके लागला खुंटाइल बरद-काड़ा। चाइरो बाटे ले हुरकुचा होहाइर। कन-फोरवा गुइल-गोहाइर। बरियार कड़े देला अखरा अखाइर- पखाइर, खूंटा कबाइर। आबट बाछा इड़इक के भाइग गेल गोंठवाइर। टहलु दादा के दामड़ा बछें देलइ बाजाइर, धुरें थासाइर। बहुते खइला लाथाइर। बरियार मरदें देला मरखँड़िया बरद के पछाइर। लिलि-लोहा में कते फुइट गेल माँदइर। बेरा गेलइ डुइब, मगुर सेंस नाञ् हुइब। लोक अखरें जुटे लागल हथ दोइर-दोइर, लागलइ झुमइर काँधा-जोइर। सोभे खातिर खुल्लम-खुल्ला खुसी गेल खदखदाइ, अमीर-गरीब सभेक कंठे गीत गेल गदगदाइ, सोभे में समान रूपें रीझ-रंग गेल रदबदाइ, सगरे सोलो अनियाँ सुख गेल सरसराइ। बाह रे **सोहराइ**। ●

सावन

एतवार, 27 जुलाई 2008

अहर गेल, पहर गेल, दिन महिना बछर गेल आर दाना के हजार गुना करे ओला सावन आइ गेल। बदरी गुड़गुड़ा हे, बिजरी चमके हे, ठेरठेरी ठेरके हे, पानी बइरसे हे, आर किसान हरसे हे। सावन मतलब माटी सें सोना सिरजेक सुतार, हिरा- मोती बनवेक बतर, एक सें हजार बनवेक मउका। मगुर, **जे रोपे हे, सइ काटे हे।** परकीरति, दाना के भीतर सिरजन के महान सक्ति संगाठल हे। सइले किसान एक से देदार हवेक ई सुतार के एको सेकेंड बेरबाद नाञ् करे चाहे हे। किसान सात महिना सें सावन खरचा खातिर चार, दाइल, नून, तेल, बरी, हँढुआ, पलवा, अमसी, झूरी- काठी, कोयला, किरासन, डुँड़कु, गोंइठा के तिहा-ततबिरें ततपर रहे हे। बर-बजार, पर-पोहनागी साइर लेहे। सावने साज-सिंगार अरसी-कँकवा, माँदइर, बाँसिक रीझ-रंग

तियाइग देहे। धान, मड़ुआ, गोंदली, गोड़ा, उरीद मूंग, घंघरा, सिम, झिंगा, खीरा, पपीता, कुदरूम सुरगुंजा, गाछ, बाँस-बिहिन के टावान, ठोर ठेकान कइर राखे हे। **बतर** के रोपा से किसान के घार भोरे हे। जे बेकति बतर सें भकुवाइ जाहे, से फकुवाइ जाहे। काहे कि **सो चास से एगो बतर बोड़ हे।** सइले किसान सावने डाँड़ा सकत कइर, गात झाइर रोपा-डोभा में जिरि-जिदि झपइट परल हथ। जनी, टेहुना तक लुगा समइट अनगुते से अड़बोरिया तक, खइट रहल रथ। चेंगा-चुटिआ भी हाथे-पाथें लाइग परल हथ। टहलु दादा, ढेमना, लुरका, मोहर माहतो, लुखरी, सुकरी, झनवाँ दहाँइदिस रोपें लागल हथ। काहे कि **खेती नाञ् हवे हे सेतिं**। कहबी हइ कि **दु झाँझ खेती, तीन साँझ गाय, जे नाञ देखे ओकरे जाय**। अइसों अदरा खूब बरइस के भदरिया खेती के भसकाइ देल हे। दादा कहबी कहला कि **बइरसे अदरा तो नाञ हवे भदरा।** अइसों पानी झमाझम हे। भदरिआ खेती खतम हे। जोंढराक बिहिन तक हजम हे। मगुर गाछ-बिरिछ लगवेक बेस मउसम हे। लगवल पोहा के बाइढ़ बमबम हे। लकलकाइ के बाइढ़ रहल सगुअन सरइ सिसम हे। कोह करम हे, कचनार-कदम हे। पोहा के सरकारी फारम हे। जहाँ गाछेक पोहा रकम-रकम हे। अन्न संगे गाछ लगवेक भी बोड़ महातम हे। गाछ लगवेक टा मानुसेक महान धरम हे। घोरना-बेरना करा टा महान अधिआतम हे। मेढ़-मुरूत भाइग भगति तो भरम हे। बिना खटल खाय खातिर तिरिथ-बरत भजन-किरतन हजार अगम-डिगम हे। देसें खटेक कमी सें अरजन कम हे। बेसी बंदूक-बम हे। देवा, ई बतर के दहिनाइ, दलबल संगे गेरुआ बसतर पिंध देवघर दनारे हे। कमियाँ, बहिआर छोइड़ जने-तने बाइद कनारी जोत-हथ। ताक गेले देवा के लेवा करे हतइ। दादा देवा पर कइ गो कहवी कहला- **दादाक भोरोसें कि कतारिक चास? बुरबक पुताक लेवा** चास। **गोला गेला घार, तो जने-जने हार**। **अनारी जोते कनारी, सिआन जोते बहिआर। बाप कालें चास नाञ, कोदो बारीं माचा।** देवा पर सोब कहवी लागु हे। सइले देवा खेत रहइतें भूखें ढनके हे। देखा, ढेमना के, असारे सें खेतें दइ रहल हे गोबर, काहे नाञ् हतइ दोबर? ●

अघन महिना

सोमवार, 3 दिसम्बर 2007

अघन आइ गेलइ। कटनी भरखराइ गेलइ। खरिहाने मइड़नी भी दरदराइ के चइल रहल हइ। टहलु दादाक टहल बंद हइ। दादा-दीदी कटनी में बेस्त हथ। ढेमना एखन ढेकइर के खाहे आर रगइर के धान काटे हे। लुरका भी कटनी में लाइग गेल हे। सुकरिक कटनी सनसनाइ के चइल रहल हइ। लुखरिक तीने गो खेत हइ। कटनी लागालगी हइ। मोहर माहतों तो मातबर किसान लागथ। मउका के मोताबिक काम में माहिर हथ। झनवाँ झपाझप बींड़ा ढोइ रहल ही। मुँड़े बीड़ा आर हाथें हँसुआ लइ के जखन कुल्हीं ठुमकी ठमर-ठमर चलऽ ही, तखन कते जुआन के मन डोले हे। दुलरी दीदी कमली भूखली, लुसरी, सोब मुँड़े कलवा आर हाँथें हँसुआ लइ के खेत जा हथ। बीस बछर सें धान के बतर बेड़ाइल हलइ। ई बछर बहुत

बेस बतर हइ। जोंख जोबर हइ। उपज दोबर हइ। बाइल जोरगर हइ। दाना दमगर हइ। **तीन खँखरी तेरो धान** के नछत्तर हइ। किसानेक छाती चाकर हइ। खुसी डागर हे। **खेतें** खरिहाने खुसी खदखदाइ रहल हइ। रोजी ओलइन के रोजगार भी रदबदाइ रहल हइ। परियाक परिया सें किसानी धान के ढेइर खोजवइया हथ। किसानी उपज के आसें बामन, नउवा, धोबी, मोची, मोहली, कमार, कहार के जतिया हथ। धान लिए खातिर हरदी, गोलकी, जीरा, धनियाँ लइ के बनियाँ हथ। बोहताइन धान खातिर तेल लइ के तेलिया हे। धान खातिर कुम्हार के हाँड़ी तेलाइ ढकनी दीया हे। हलवाइ के फुलोरी-पकोड़ी, भुजिया आर गुजिया हे। मोहली के डाली,दोरी, पथिया हे। मोची के जूता नारन सोंटिया हे। धान लिए खातिर दुआरी आवे हथिया हे। धान पावेक आसें मुनीस कमियाँ गोरखिया हे। चिरकुट्टी चीरा के बदल धान लइ रहल ही। कोइरी सकरकाँदा से धान बदइल रहल हे। धान लिए खातिर भँउरी ठेला धकइल रहल हे। बाँदर खेलवा बाँदर नचाइ रहल हे। साँप-खेलवा साँप देखाइ रहल हे। नट-नटनी तमासा लइ के आइल हथ। धइन हे धान। धान हे सब के परान। धान हे तो सब कुछ हे। घार गनगन हे। मानुस चनफन हे। धान हे तो घार हे, घर-करना हे, चकचक गोझी अंगना हे। सइले चाइरो बाटें धान के घारें ढुकवेक चपट-चाँड़ हे। खाली मानुस नाञ्, धान बिछे बिने में चरँइ-चिनगी पेरवा पाँड़ हे। मूसा भी बछर दिन के धान भूरें भोरल हे। सेठ-साहुकार भाँड़ारे कोकचल हथ। ई बछर मनेक मतन धान देइख के ढेमनाक सपुन भी गदगदाइ उठल हइ। बेटिक बीहा खातिर दिन धराइ राखल हे। माघ आवइते **डुड्ढ** बजवेक मने मन गुर-चीरा खाइ रहल हे। ई बछर ई धानें कते काँच-कुआँर के बेड़ा पार हइ जितइ। सइले धान समटे में सोभिन जमजमाइ के लागल हथ। धान कटाइ रहल हे। गाड़ी-सगर बोजाइ रहल हे। बींड़ा ढोवाइ रहल हे। धान पिटाइ रहल हे। किसान माड़ा घुराइ रहल हथ। धान-धुँकाइ रहल हे। बीटा बँधाइ रहल हे। बीटा पाड़न में रखाइ रहल हे। अइसों ढेमनाक करजा सोधाइ जितइ। बनियाँ घारें बँधकी धरल लुरकाक डुभा-छिपी थारा-लोटा छुइट जितइ। मोहर माहतोंक घारें टी.बी. रेडियो आर गहना- गुरिया लिएक तामझाम हइ। दखिन-भोर घार बनवेक सरंजाम हइ। बेसी धान भेलें बेसी कुद-फाँद हवे पारे। ●

सावन के गीत

एतवार, 3 अगस्त 2008

आइज एकदम अनगुते टहलु दादा ढेमना, लुरका हार-रकसा काँधाइर के बोन कनारी बाटें बोहोन करल हथ। दादा कहला- ई पिरथिवि में सिरिफ किसान परकिरतिक बेस दिन महिना आर बतर के चिन्हल-जानल हे। बतर सिरें जिनगिक जइर जिनिस के जोगाड़े जिरिजिदि जुइट जा हे। माटिक महातम, हवाक हिकमइत, ताप के ताकइत आर पानिक परजोग सें धरतिक धन के हजार गुना करे हे। देख, बतर पाइ के कँदना, कइसन कोड़ी-कोदाइरें कोंइड़ रहल हे। करमु, कार्हा कइर रहल हे। रेंगटा, रकसा रदबदाइ रहल हे। असरिआ, आँटी छिट रहल हे। टेपा-खुढ़ा, पानी टेक-टाक कइर रहल हे। मोहर बुढ़ाक, महुआ हिरें बारो जोर हार नाराइल हइ। कमियाँ, बरदकाड़ा के माइर- ढेढ़ाइ कादा कइर रहल हथ। समइ सिरें फारनी,

सोमारनी जाबड़ सारल हथ। ऊपर बाटें 72 गो रोपनी रोपाक रिझें रितुवाइल हथ। लुखरी, सुकरी 36-36 के भिनु-भिनु पाँइत जोरल हथ। लुखरिक पाँइत पाहि जोइर मनमनाइ के रोइप रहल हे आर गीत गनगनाइ रहल हे। :-

कोन पतइ लांबा-लांबा, कोन पइत चिरा रे।
कोन पतइ हरिअर, फोरे-गोले गोर रे।

सुकरिक पाँइत गीत लोकल हथ-

आम पतइ लांबा-लांबा, तेंतइर पतइ चिरा रे।
लेंबो पतइ हरिअर, फोरे गोले गोल रे।

टाँड़ी रइसका हाँक देल हे -

खेतें रो प ब इ धाना, टाँड़ी बुनऽ बइ दाना।
एहो! दुइब धानें धरती सोहान रे.......।

धुर सें गितेक लइर आइ रहल हे -

सभे मिलि काज करलें हतइ हित रे।
एहे तरि सभे लोकें जोरिहा पिरित रे।

धरती-आकास सोहान गीतें गनगन हे। गाँव, खेतें भरखर मगन हे। गाँव सून हे। गुजरी कइला जइसन छउवा गिदर खेलव ऽ हथ आर रिझें गावऽ हथ-

अटकन चटकन देहिआ चटकन।
बारा रे बरइली फुल, सावन में करइली फुल..।

तीन दिन से बदरी ढॉपल हे, रधिआ रेंगनी रइट रहल हथ -

रोउद उग रे बभना, देबो चरक चेंगना।

भुटरी, ढेलकी, ढेलुआ झुइक रहल हथ आर भुइक रहल हय -

धान बुनो, धान बुनो सुइया कनारी।
दलनी के तीन बेटा, तीनों अनारी।

कहुँ कोइथ, कहुँ कित-कित, कहुँ पँच-गुटिया चइल रहल हे। साँझ भइ गेल हइ। टहलु दादा ढेमना लुरका हार-रकसा काँधाइर घर-मोहड़ी भेल हथ। ढेमना पुछल- दादा, हामनी एते खटऽ हों, तावो एते अकाल, महंगाइ काहे? दादा फुरछाइ के कहला- देसें आधा सें कम लोक खटऽ हथ। आधा सें बेसी बइस-बुइल के खाऽ हथ। देख, ई पिरथिवी में कोनो जीव-जंतु, कोनो पसुः पँइखी कोनो भगवान के, कोनो देवी-देवता के, नाञ् जानऽहथ। सोब

आपन करम कइर के सुखें खा हथ। मगुर बुइधमान मानुस रकम-रकम के भगवान बनवल हथ। बरन-बरन के देवी देवता सिरजल हथ। नाञ् पुजलें रकम-रकम सें डेरवल हथ। मानुस खातिर सरग-नरक बनवल हथ। आधा से बेसी मानुस देवी-देवताक तेतारें लागल हथ। देवी देवता सें डेराइल मानुस एखनिक खइट-खइट खिवऽहथ। देख, देवा के ऊ बिहिन-बिचा रोपा-डोभा छोइड़ गेरूआ पिंधल हे। देवा एकाइ नाञ् लाखों लाख मानुस पोंगबल रकम खेत परती छोइड़ भागल हथ। उपज कम भेला सें अकाल मंहगाइ सोभाविक हइ। कपार पिटला सें, ताबिज मदोली सें, महंगाई नाञ मिटतइ। लुरका कहल - देस आजाद हइ। जकराँ जहाँ बेस बुझा हइ, पानी पटवे पारे। ●

सगरे करमा

सोमवार, 17 सितम्बर 2007

*

खेमसी के उतर भोरें, बुनलों माञ् जावा रे
फोरें-फूलें झबऽरल, पातो बहुत............

टहलु दादा देखला कि गोटे कोयलांचलें **करम-परब** के कचरकूट कदकदी हे। गाँवे-गाँवे करम गीतेक गदगदी हे। हुब-हुलइर हुलास आर हरस के हदहदी हे। चास, चलकरी, चेलांगी सगरे करम के चहचही हे। सोब खेतें हरियरी हे। सोभेक गाते फरहरी हे। आँधे-मुँधें अछल- गछल उतसाह हे। कुल्ही-कोचें कइदगर करम के चाह हे। मिलन सुख के गुन-सोबाद चाखे खातिर करम सोबले बेस बतर हे। माञ्-मोसी खुसी-खुसी करजिक टोना दुलरू बेटी सें मिलल हथ। बाप-जेठा काका संगी, सहिया, फूल, जनम-थान सें धीया, मोहड़ा-मोहड़िक मउका पाइल हथ। ई मिलन मीठ हे, बड़ी नीठ हे।

सोभेक मनेक मेंजुर नाइच उठल हे। हिएँ, हुबेक ढेव उमइक उठल हे। खुसी सें मनेक पाँखी आकासें उड़े लागल हे। गाँवे बेटी छउवा गजगजा हथ। सोब घारें खँइचलाक-खँइचला खुसी खदखदा हे। बेटी छउवा रीझें-रितुवाइ के घुइल-मिल के, जुइम-जुइट के, घारें-घार आवा जाही, पानी-पिर्हा, पाना-सरबत, खान-पान, सागत-सनमान, जोड़ा-जोड़ी, गोड़लगी, दोसती-पिरती के जोहा-जोही खोजा-खोजी, बरजोरी, झिंका-झोरी, कइर खिलखिलाइ रहल हथ। चाइरों बाटें मनेक मतन चमक-दमक, चहका-चहकी, बइजका-बइजकी, फुसका-फसकी, पटका-पटकी उमका-उमकी कइर, हाथ मलकाइ रहल हथ। बछर दिनेक हेराइल मन मिलन सुखें सोरोबोर हे। जनम थाने मन-मोहवा मजा हे। धीया सोब, बछर दिने जोइर तोइर, सँइच-पँइच के जते जमवल हथ, ओकर सें रंग-बिरंग सिंगार-पटार अरसी-कँकवा, कजरोठी, कनबाली, कनपासा, करनफूल, करधनी, चुटि-चुरी, चुइल-सपटा, अलता, खोपा, फुलकारी लुगा-लाता लइ के आपन रुचि-रोख पूरा कइर रहल हथ। हाँ करम के रातीं आर करम मिलन के दिनें, ई तरतरिया उमइरें, चनफनियाँ चेहरें, हतइ बरन-बरन साज-सिंगार, रकम-रकम, नावा चिकन रूप रंगेक पिंधान-ओढ़ान, खोपें खोसता बोनफूलेक माला। काहे कि भादर के ई सुल-सुल हावा, कहे हे, ऐ! आदि निवासी! परकीरति के पुजारी! आवा! परकीरति के बँचावा! करम के सजावा! आर ऐ! सिरिसटी के काँच-कुआँर करमइती,! तोहनी लागे परकीरति के अपरूप सुन्दर फूल, पींध के नावा-नावा, गाँथाइ के आवा! आर जावा रूपें हामर सिरजन सक्ति के जगावा। नाचा! गावा! खुशी मनावा! परकीरति के हँसावा। ऐ! रंग-चंगिया रसिक देखावा, रीझ-रंगेक रसरसी। करम करेक कसकसी। गावा गीत ढोल-नगाड़ा माँदइर बाँसिक सुरें, खेला करम के अखरें, झिंकाझोइर झलका-झुमइर। रीझ-रंगे राँइंग दे करम राइत के, हुबें भोइर दे करम-मिलन दिन के। गहगहाइ उठे गाँव-गाँव। खतम हवे सामंती पाखंड-परपँच के काँव-काँव। डुइब जाइ देखनिहार- सुन निहार खुसिक समुंदरें। हाँ, **चाकें सुरूज बइस गेल हइ। फूल सुन्दरिक बेरा** भइ गेल हइ। नील आकासें चाँद दग-दग इंजिरिया दिए खातिर पहिले सें तइयार हे। ओनवा! करम अखरें गीत सुरू भइ गेल हइ। **सुऽखल खेतें देवरा, बोकऽली न चेरे ...**

सेहो देखि। देवरा चलऽलइ पराए। सेहो देखि .....

हाँ! ई हड़पा कालेक गीत। हड़पा ढीपा-ढान हे। अन-पानी लुगा-लाता के टान हे। देवर हड़पा छोइड़ पराइ रहल हे। भोजी लुगा खातिर नेहोर करऽही। एहे मुँहेक गीत गुला के गर्हे-जोरे पारलें आपन बाप-दादाक इतिहास तक पोंहचल जाइ पारे। ●

आदमिक असमिता हदइर रहल हे

एतवार, 20 जुलाई 2008

टहलु दादाक बइठकी में ढेमना, लुरका, देवा, मोहर माहतो, लुखरी, सुकरी, झनवाँ सभिनें बत-कूचन करऽहला।

देवा कहल- दादा आइज तो गजट पइढ़ के हामर मगज अइसन ठनकल कि **हेंठेक सांस हेंठ,आर उपरेक सांस उपरें रहइ गेल**। बुझाइल कि उलटी गंगा बोहे लागल हइ। **मानुसेक आँइख के पानी खतम भइ गेल हइ**। आँइख उलइट गेल हइ। मानुस के फइल-फरिछ नइतिक मुइल निरलज भइ गेल हइ।

ढेमना टोकल- हाँ तो बताव ने कि पोढ़लें?

देवा कहल - पढलों कि आबें कोहबर के काम अखरें हाँक दइ रहल हइ। बइस-बुलुवा जनी सब देही देखाइ के दुनिआँइ लुटल बाद आबें अखरा में खुल्लम-खुल्ला चुमा के निलामी हतइ। चुमा

खातिर हाँक लगवल जाइ रहल हइ। डाक बोलेक अइगटंगी हतइ। चुमा के चरपटाली हतइ। **आँधी अइलें आम सोसता हवे हे**। पता नाञ ई आँधी सें कि कि सोसता हवत? बुझा हइ अस्तें-अस्तें मानुसेक लिला-खेला छगरी-भेड़ी कुकुर-बिलाइर गरू-गायों सें बेसी गेल गुजरल भइ जितइ।

आबें बरतुपात बोहरोता बिहा कोहबर के दरकार नाञ् हतइ। सइभता के पेस-गबती बात नाञ् रहतइ। लुखरी कहली-कबिलाइ आदि मानुस पिंधनाक अभावें टुअर-टापर, टेपरा-टेपरी गुलें चेथरा पिंधऽहला एखन सोखिन सब सोभाबें पिंधना खोइल के नंगटा निरलज बइन रहल हथ। जकर सें नइतिकता छितिछिन हे, हेंठ बइन के हिन हे। निरलज फिलिम के जनी गुला एकर नाठेक गुरु लागथ। बइस-बुलुवा समाज के फिलमी जनी अइसने फिलमी अइना चमकाइ के डगडगाइ के बाइढ़ रहल हथ। ढढ़नच के ढाँक ढोल **बजाइ के डिंड़ा-पिंड़ा ऊँचा कइर रहल हथ**।

आइज दुनिआएं अइसने बिना खटले पइसा जटेक जोगाड़ जबरजस हे। खइट के खाइ ओला बेबस हे, दुबर-पातर हे, मुराइ गाजर हे, नमर -निगम हे। देही चमकाइ के चुमा बेचनिहार बइस-बुलुवा समाजेक - चालाँकी चोंख हे। ओकर समाज बोलगर हे। पँच-तरवा जिनगी हे। लाखो के ठोनगी हे। छप्पन भोग हे, निरमल पानी हे, हवा गाड़ी हे। अइसने घूस कमीसन खाइ ओला सरकारी क्लर्क, किरानी, अफसर, नेता, मंतरी, ठिकेदार, बेपारी, सूदखोर, महाजन, सउसन के चक्की से मधु रस चिपइर रहल हथ। खटनिहार गुलाक खटाली खाइ के ढकइर रहल हथ। खइट के खाइ ओला हदइर रहल हथ, मानुस रकम बाँचेक बकार बिसइर रहल हथ। ओकर उपर मंहगाइ के डांग बजइर रहल हे। ऊ गरीब बइन के आलाचार हे, भुखें अधसेंस हे, अधपेटा हे, अधमोरवा हे, हर-जोतवा हे। हर-जोतवा के कोदो करहइनी, गोंदली-गोड़ा भी नसीब नाञ हे। हर-जोतवा हलुवा-हारान हे। सइले दिकिआइ के आबें बहुत हर-जोतवा मुड़-कटवा बइन रहल हथ। ई संखिया बइढ़ गेलें मानुस समाज छितिछिन हइ जितइ। भुखें हिन हइ जितइ।

दादा कहला- हलदिल भेलें चलतो नाञ्। साँथाइ-साँथाइ के सोंचा। मन के सलसँत करा। डाँड़ा सकत करा। मनुस समाजें बहुत झन हइ जकर सांसे- मासें सुध-सुपट मन हइ। अइसन जन के जोरो करा। नइतिक मुइल खतम नाञ् हवे। मनुसता के नाँव बुचा नाञ हवे। **आँइख के पानी खतम**

नाञ हवे। नावा किरिन लइ के, पूरबें सोनइली सुरूज उइग रहल हे। आसाक फुल फुइट रहल हे। पइरबरतन के आँधी चइल रहल हे। समएक चाक चइल रहल हे। बस, बेस दिसा दिएक दरकार हइ। ●

भासाक मामा घार

सोमवार, 14 अप्रैल 2008

ढेमना, लुरका, देवा, मोहर माहतो, लुखरी, सुकरी, झनवाँ, सुगनी, कजरी सोब के गुम बाँइध बइसल देइख के टहलु दादा कहला - आइज सोभिन गुमसुम काहें? ढेमना कहल - दादा, हिआँक पहिचान के झंझट, पट-पट, टाना-झिंका टा कधिओ मेटतइ कि नाञ्? सटले मोहर माहतो कहला - हिआँ माञ-माटी, मानुस आर मातरिभासाक अलग पहचान पावे खातिर पचास बछर सें बुढ़-जुआन, जनी-मरद लड़ला, जेहल गेला, सहीद भेला, आर पहिचान के फइल-फरिछ करे खातिर अलग झारखंड राइज पइला। मगुर एखनु सोब मटिआ-मिलान करेक खडजंतर हइ। किसिम-किसिम के कुचनाठी सें झारखंडी पहिचान कुचल जा हे। कजरी कहली- गतें- गतें अइसन सउसन भेल हे कि झारखंडे, झारखंडी भासा-संसकीरतिक परतिसत कम भइ गेल

हे। **"पुत खोइज पइलों तो भतारे भाइग गेल हे"**। झारखंडे बंगला-भासी **आँगन कादो करल हथ**। दादा कहला- इटा भासाक लड़ाइ नाञ् लागो। इटा ऊँचा लादाक राजनीति लागों। हामर देसें सोब भासा के आपन घार हइ। कोनो भासा घार छाड़ा नाञ् हे। जे रंग भोटर लिस्टें एक बेकति के नाँव एके जोघो हवे हे, दोसर जोघो में होवा टा गइर कानूनी लागइ। ओइसने एक भासा के नाँव, एक सें बेसी जोघो में होवा टा गइर कानूनी हवेक चाही। आपन घार छाड़ा दोसर जोघो गुला, ऊ भासाक मामा घर रकम हवेक चाही, जहाँ ओकरों भइगना रकम पुरा मान-सनमान, खटे-खाइ, नाचे-गावे, आर मतदान करेक अधिकार हवेक चाही। आपन घर, आर मामा घारेक फरक टा सभेक बुझेक चाही। मामा-घार के आपन घार बुझलें तो 2775 गो भासा हइ। सोब के जहाँ-तहाँ माइनता मिललें खाली झारखंडे नाञ् बंगाल-बिहार, उड़िसा, महाराष्ट्र गोटे देसें-देसें अइसने ढढ़नच के ढाँक-ढोल बाजे लागतइ। भासाक अड़गाही माइर सें मानुस-मानुस के दोसती में दराइर हतइ, सिरिफ गाँदर-गुँदुर नाँञ् पुरा गुइल-गोहाइर हतइ। भासाक झगरें देस दुनिआँइ तिनबेनवाँ हतइ। कोनो भासा परगतिक डहरें बाढ़े नाञ् पारतइ। भासा कभुँ नेसनाबुत नाञ् हवेक चाही। काहे कि भासाक बोलें मानुस-समाज सिरिसिटी में सोबले बेस बनेक खेमोता-जुटवे पारल हे। भासाक बोलें मानुस भाव-अनुभव आर अधिअन के बुझे आर बुझवे पारल हे। भाव, अनुभव आर अधियान सें उपजल गुन गिआन के संगारे-सँइते पारल हे। कोनो भासा बोड़-छोट नाञ् हे। सोब में भाव अनुभव आर अधिअन के बुझे बुझवेक अलग- अलग खेमोता हइ। नीमर सें नीमर भासाक भाव, अनुभव आर अधिआन के जोरगर से जोरगर भासा भी हुबहु अनुबाद करेक खेमोता नाञ् जुटवे पारे। सइले सोब भासा के आपन -आपन घारें फुले-फोरेक आर झबरेक पुरा-पुरा संरजाम हवेक चाही। सोब भासा के भाव-अनुभव के संगारे-सँइते पारलें, गिआनेक महान भंडार के सिरजन हतइ, जकर खेमोता सें नसल, बरन, बरग, रंग, जाइत के अरगुझाइल गाँइठ अस्तें-अस्तें खतम हइ जितई। ●

गइर भासाक जइर

सोमवार, 29 अक्टूबर 2007

आइज टहलु दादाक बइठकी में ढेमना, लुरका, मोहर महतो, लुखरी, सुकरी सभे हला। सुकरी पुछली कि दादा! झारखंड भिनु राइज काहे बनवल गेलइ, तनि फुरछाइ के बतावा। दादा कहला- हामर देस बरन-बरन के भासा-संसकीरति के मेल सें बनल हे। सोब भासा-संसकीरति के बेस सिरें बिकास हवे, कोनो भासा-संसकीरति नरम नीमर नाञ् रहे, सइले भासा-संसकीरति के मोताबिक रकम-रकम के राइज रचल गेल हइ। बंगला भासा संसकीरति के बंगाल, उड़िया भासा, संसकीरति के उड़िसा, पंजाबी भासा-संसकीरति के पंजाब, गुजराती भासा-संसकीरति के गुजरात बनवल गेल हे। अइसने अबरी झारखंडी भासा-संसकीरति के जगवे-जोगवे आर जग-जगवे खातिर भिनु झारखंड राइज बनवल गेल हइ। ढेमना टोकल -"मगुर दादा

झारखण्डी भासा संसकीरति के सइर सरजुइत करे खातिर तो कोनो उता-सुता नाञ् भेल हइ। हियाँ माटिक भासा-संसकीरति तो सिटपिटाइ के सपटल ही। हदियाइ के हदसल ही। उर्दू द्वितीय राज-भासा रूपे उठल हे। बंगला, दाँत पजवल हे। राजभासा बने खातिर **आँगना कादो करल** हे। खूभे कुइद-फाँइद रहल हे। मोहर माहतों कहला- मगुर 1956 में जखन बंगला भासा-भासी के देखे खातिर केन्द्र सें कमीशन धनबाइद गोल्फ ग्राउण्ड में आइल हलइ तखन तो एको बंगला भासा-भासी सें भेंठ नाञ् भेलइ। तब एखन 60% कइसें हथ। लुरका कहल- अरे भाइ, **"मुरखा के मउगी सभे के भउजी", "गलगल काठे सभे बलगर, "कदुआ में हसुँआ चोंख** हवे हे, **सुधुवाक धन सभे खा हे**। जखन बंगला भासी के पेटेक आइग हदकल, तखन दाइल-रोटिक जोगाड़े गाँइठ-मोट लइ के, बराकर डेइंग के खाताक-खात लोक उफइर अइला। झारखंडेक धन चिपइर खइला। घर-घरकरना करला, बेटी-रोटिक जोरनार रचला। **घर-भतुआ बइन गेला। एकें-एकें एक सें एकइस भेला। लुती सें हाथी भेला। लिख सें लाख भेला।** आपन गोझी गनगन करला। झारखंडेक छातीं-भात राँधला। बहुत मने मन बंगाल बनवेक गुरचिरा खइला। दादा कहला-हाम **"कि कहबो बोन में, इटा बुझा आपन मोन में।"** मगुर गजटे भासाक पेंच पइढ़ के हमराँ काठ माइर देल। हेंठेक सांस हेंठ आर ऊपरेक सांस ऊपरे रहइ गेल। कंठ सुइख गेल। कपार ठोंइक के, दम साइध के, गुम बाँइध के, थोथम थोथ थसइक गेलों। गोड़-हाथ छिरियाइ गेल। हामर पासें **आँखा हे तो पाँखा नाञ्, बुइध हे तो भोरोसा नाञ्**। मन भेल खूब गुइल-गोहाइल करों। मगुर सोचलों- **"कउवा-कुकुर भूकलें कि बदरी नाञ फाटे हे?** सइले हुड़गुम तरि बइस गेलों। जरूर जाना! खुंटाक बोले काड़ा उमके हें। हियाँ कोनो खुंटा मजगुत नाञ्। माटिक पुता **"तीन कनोजिया तेरो चुल्हा"** हथ। मंतरी, सांसद, बिधायक ककरो कंठ नाञ् फुटल हे। **कउआ-कुकुर काँदले ककरो कि हरजा!** हियाँ भोट के राजनीति **कुकुर पुँइछ रकम घुमचल** हे। नीमर के भोट तो थारी के बइगन हे। माँड़ाक बरद भागता काहाँ? सइले तेलगराक मुँड़े तेल हे। झारखंडी के दिन-दासा गरू-गायो सें बेसी गेल गुजरल हे। हियाँ उड़िया अंगिका, भोजपुरी, मगही के मानइता हे। बंगाल, बिहार, उड़िसा, पंजाब के दादा हथ। **दादाक भोरोसें कतारी हे**। ई अलग राइज के बात अलग हे। हियाँ सुख के सरग हे। **हाँसी हे, हाँसी ने हाँसी बापे पर फाँसी हे।** ●

भदरिया दुख

सोमवार, 1 अक्टूबर 2007

टहलु दादा गोटे कोयलांचलें टहल माइर रहल हथ। खेतें-खेत आर घारें-घार घुइर-घाइर के अबधइर घार घुरल हथ। खेंते धानेक हरियरी देइख मन हरियाइ गेल हइ। अइसों अगरीं धान पाकेक कहावत टा पतियाइ रहल हइ। किसान मने मन गुर-चीरा खाइ रहल हथ। सकत किसान गुला तो ढोल, नगारा, माँदइर, बाँसिक सुरें गीत गाइ रहल हथ। झिंका झोइर झलका झुमइर रदबदाइ रहल हथ। मगुर नीमर किसान गुला हँइड़सार के हालइत देइख के हदियाइ रहल हथ। पेटेक आइग निंझवेक जोगाड़ें घारें-घार घिघियाइ रहल हथ। ढेमनाक खेतें भी धान लहलहाइ रहल हइ, मगुर घारें भदरिया दुख **छाइन चइढ़ के हाँकाइ रहल हइ**। घारें भुजी- भाँग नाञ हइ। खाइ-पिएक टाना-टानी हइ। पेटेक आइग निंझवे खातिर गीदर गोंदली-गोड़ा,

घाठा-लपसी, खुदी-चुनी, मोटा-सोंटा, कुछो खाइले तइयार हथ। मगुर मिले तब ने। खेतेक सार, दवाइ-पानी बिहिन- चोंचें, करजें लेसाइ गेल हे। गाँठी काचा-कउड़ी के कोनो ठेकान नाञ् हइ। माँइग-चाँइग के हारित परान भइ गेल हइ। अइसों टुंगरी टाँइड़-टिकुरें खूब घाँस भेल हइ। सइले गरू काड़ा गुला सनसनाइ के चेइर अघाइ के आवऽ हथ आर खुसी-खुसी पागुर काटऽ हथ। मगुर ढेमनाक हाइलत तो गरू-गायों सें बेसी गेल गुजरल भइ गेल हथ। घारे गँठरी-पोटरी, हाँड़ी-तेलाइ, चुका-चुकरी, सोब टोइ-टोमइड के देइख चुकल हे, कहीं एगो दाना नखइ। एखन अधन चढ़ाइ के चारेक फिकिरें फिफियाइ रहल हे। नाइर-पाइर के फइर पादु साव घर गेल हे। कहल "अइसों धान के बेस बतर हइ। सोब खेत हरियर हइ। कुछु दे, अघनें सोब सूदें-मूरें घुराइ देबो, आर एकरों से आरो आगु कहभे तो गइया गाभिन हइ। आगु हपता ढेनुवाइ जितइ, दूधवे सें सूद-मूर सोइध देबो। मगुर लादु साव एगो कहावत कहइ उठला कि **"हरियर खेती गाभिन गाय, एकर भोरोसा करल ने जाय"**। सइले 15 दिन बाद जखन दूध दिए लागबें तख़नें एक कोरी बइना दइ देबों। ढेमना खिसियाइ उठल आर कहावत के जबाव कहावतें में देल कि **"जाड़ गेलें जड़ावर, आर उमइर गेले भतार"। मोइर जाइत जीव, तो बादें खाइत घीव।"** हमरा एखन के दरकार हे। देखा ने गीदर गुला के, डँड़े मइलाइल चीकठ-चेंथरा पींध के हेंडर-हेटंग बुइल बुलऽ हथ। सेंप ढोंइक के दिन काटऽ हथ। मेहरारू ताली साटल लुगा पींध के बहराइ नाञ् पारऽही। टेपरा-टेपरी नाती-पुता गुला भूखें कोंआँइर कइर रहल हथ। जान-पानी कइर मारल हथ। मेहरारू भुखें कलइप रहल ही। पेंटे तीन दिन सें अन नाञ ढुकल हइ। अँतरी सुखल हइ। थने दूध नखइ। दूध-पिया गीदर सुखल थन चुइस-चुइस भूखें लेरबेराइ गेल हे। दादी दोतइन बेंइच के, कोनो रकम तोइर-जोइर के कइसनों-मइसनों चलवऽ हली। ओहो बेजार पोइर गेल ही। गीदर भूखें छछंदल बुलऽ हथ। गीदर के गेंगइनी सें हाम नेसनाबुत हों। ढनइक ढुसइम के आइल हों। हथजोरी कइर रहल हियो, कुछ सुना। मगुर धने माताइल पादु, भटभटिया चइढ़ तगादा खातिर फुर्र उइड़ गेला। ढेमनाक अघन डबकइते हइ। पाता नाञ् कखन चार परतइ। ●

झिंगा लतें कोंहड़ा

सोमवार, 25 दिसम्बर 2006

आइज ढेर लोक माड़ा खिजाइ के टहलु दादाक पंसगी में जुइट गेला। ढेमना लुरका, मोहर महतों ठिठरल गोड़ हाथ सेंके लागला। ढेमना पुछल, "दादा! सुनल हिए थाना में सोब काम जन सहजोग से हतइ"। दादा कहला "असंभव, **झिंगा लतें कहुँ कोंहड़ा फोरे हे**"? लुरका कहल "जोदि झिंगा लतें कोहड़ा नाँय फोरे हे, तबे झारखंड सरकार दोसर राइज के राज-भासा के हियाँक राज भासा बनवेक घोसना कइसें कर$\smile$हइ? सोब राइज तो आपन भासा-संसकीरति के जगवे जोगवे आर सरगतवे में लागल हथ, मगुर हियाँ उलट बाँसी बाजे हे। दादा कहला हियाँ भासा नाँय गद्दी जोगवेक बात हइ, सइलें **"तेल गराक मुँड़े तेल आर उखराक मुँड़े बेल"** हइ। **"घर के जोगी जोगिड़ा आर बाहर के जोगी "सिंध"** भेल हइ। सरकार आपने बाँचे

खातिर सिखित-सिआन आर संगठित समाज के समटेक फेरें हइ। झारखंडी भासा नरम-नीमर सोसित-दलित, पिछरल अनपढ़ गँवार के भासा लागइ।" **बुरबक के धन सियाने खाय**। ई माटी के बाइल काटे ओला अफसर नेता हुसिंयार खुँट के लागथ। एखनिक हुसिंयारी बुझना मसकिल हइ। एखनी **तरें-तरें गुर-चिरा आर ऊपरें एकादसी"** कर हथ। एखनी माटिक पुता खातिर पेंदले धाम बोहबऽ हथ। **"हेंठे बोहाय के उपरें खोजऽ हथ।" गोहाइलें ढुकाइ के पुँइछ काइट ले हथ**। मोहर माहतों कहला, **"खेरहा मोरे गुहेक दोसें, आर मुनस मोरे मुँहेक दोसें"** मगुर हामनी मोरऽ ही आपन गुनगर माटिक दोसें। ई माटिक संपइत रकम-रकम के भास भासी आनल हे, आर बरन-बरन के ठेनमेस ठानल हे।" लोक अइला दोना खोजे आर कोना खोजे लागल हथ" **"अंगरी धरल बादें पोहँची पकरे लागल हथ**। दीदी कहलथिन **"मानुस पेटेक आइग निंझवे खातिर** जहाँ भी जाइ मगुर **"जइसन देस ओइसन भेस हवेक चाही" "जकर नुन खाय ओकर गुन गावेक चाही।"** हियाँक मानुस में **"सोझ कोह, सुखे रोह"** के माइनता हइ। मगुर सोझ कहलें मानुस फँइस जाऽ हथ। अदना के तो बात छाड़ा। दिसोम गुरू शिबु सोरेन सोझ कहे में अदालतें फँइस गेला। अरूण जेटली रकम चलाँक भेलें नाँय फँस-तला। नटवर लाल खातिर कानून कहाँ हइ? सइले **"अनारी जोते कनारी आर सियान जाते बहियार" "चलाँक के चोरासी बुइध"।** चलाँक **"उलटी गंगा बोहवे पारे" "तर हाथें चुइल जमवे पारे" "झिंगा लतें कोहड़ा फोरवे पारे"** आपन भासा कहुँ पसारे पारे। **"जाना नीमर के बहोरिया सभेक भोजाइ" सहले, खूब खटा आर पेट उर्राइ के खा।" पेटें रहतो खुदी तभीं चलतो बुधी" परेक भोरोसा छाड़ा "पर घारेक भूत, आर पर माएक पूत सहाय नाँय हवे हे।"** आँइख मइस-मइस देखा, सरकार घारें **"मुँह चिन्ह'-चिन्ह जीरा, आर लुगा चिन्ह-चिन्ह पीर्हा "देल जा हइ। छुछा के, के पुछा**? जाना, **"नरहड़ाक घाव आर दुआरिक साव सहजें नाँय जितो**। पइढ़ के सिखित सियान बना। काहे कि **"अंधराक जइसन सुतल तइसन जागल" "बारो बेगइत तेरो चुल्हा"** छोइड़ **जोरो** होवा। आपन भासा-संसकीरति के जगवा, जोगवा, आर जगजगवा। उठा संगी! छोड़ा ठोनगी, आर सजवा चेंगा-चुटियाक जिनगी। हाँकाय रहल हियो भाय। जलदी जागा! नाँय तो "सोब माछ बेंग बुझा। ●

बेस बतर

सोमवार, 17 दिसम्बर 2007

बहुत बछर बाद, ऊपर ओला हियाँक किसान के ताकल हे। "किसान के भाइग जागल हे। एखन खेतें खरिहानें घारें अंगनें कोठें धान पसरल हे। बाँध-पोखइर टलमल हे। खुसी अछल-गदल हे। सभेक हाँड़ी थिर हे। गाँव निफिकिर हे। नावा-नावा काम के तिहा ततविर हे। टहलु दादाक पसंगी में ढेमना-लुरका देवा, मोहर माहतों, लुखरी, सुकरी झनवाँ आर कुछ चेंगा-चुटिया टिडुवाइल हाथ-गोड़ टनटन करऽ हथ। आर बत-कूचन करऽहथ।

ढेमना कहल - अइसों गाँव गनगन हे। भोरल-पुरल हे। सभेक छाती चाकर हे। सइले नावा बछरें नावा काम निसचइ हवेक चाहीं।

दादा कहला - हाम कहबो एगो पुस्तकालय हवेक चाही।

मोहर माहतों कहला- 'तत्काल हामर माँझ कुल्हिक घर टा फाँका हे। बोड़ो नुनु दु अढ़ाइ सो कितापो राखल हे।'

ढेमना कहल हामरो नुनु पास 40-50 गो किताप हइ। देवा कहल हामरो ठिन कुछ किताप हे। काइल गोटे गाँव सें किताप जमा करब। बोलोक आर राइज पुस्तकलाय से मदइत मिले पारे। ढेमना कहल एगो मातरिभासा -संसकीरति बखाने ओला गजट चाही। सुकरिक पढ़वइया बेटा सुंदर कहल- सिक्षा के लउतन-लउतन डहर बतवे ओला गजट चाही। लुखरी कहली-जनि जाइत के जगवे-जोगवे आर जग-जगवे ओला गजट चाही। चेंगा-चुटिया गुलें चेंचाइ के कहला - चेंगइर के चनफन करे ओला गजट चाही। देवा कहल- राजधानी राँची सिटी के गुन गउरब गावे ओला गजट चाही। झनवाँ झनझनाइ के कहली- हमराँ तो फिल्मी झलक-मलक चाहीं मोहर माहतो कहला- गाँव नगर, जिला, राइज, देस-बिदेस के पयान चाही। बेपार खेल-कूद, उदियोग, जोग-बेयाम, कला, बिगियान चाही। परब, पहेली, पंचाग, खेती-बारी के बखान चाही। कभुँ-कभुँ हाँसी-खुसी के भी जोगान चाही। टहलु दादा कहला- एकर मतलब कि 'हिन्दुस्तान' चाही।

हाँ हिन्दुस्तान सभेक मन मोताबिक हे। सोमबार के "कहता कोयलांचल" ढेमनाक मांग मोताबिक हें। खोरठा, मैथली-मगही, भोजपुरी के सोवाद हे। सोहराइ, सरहुल, बँउड़ी करमा के संसकीरति हे, परकीरति हे, रकम-रकम के कीरति हे। मंगर के 'नई दिशाएं' में 'सुंदर' के संगे पढ़वइया गिदर के जिनिस हे। उजवल भविस हे, बुध के अंगना हे, सुकरिक सपना हे। जनिक जिनगिक जबरजस जुइत-जोगाड़ हे। बिरसपइत के चेंगा-चुटिया बजइता थपड़ी, जखन मिलतइ "धमा पौकड़ी"। सुकुरबार के देवा के दिरिसटी, अइतइ रीमिक्स सिटीं। सनिचर के फिल्मी ठिठोली, झनवाँ खातिर रंगोली। फिल्मी ढंग, रंग-बिरंग। एतवार के हित-मितर आपुस कुटुम, पढ़ता- "हम तुम"। हिन्दुस्तान' गुनगर गजट हे। सोब खभर चोंख चट-पट हे। रकम -रकम के सोबाद हे। बरन-बरन के लेख, कथा कहनी गीतनाद हें। समाजें पेटें ढुइक के खभर बहरवेक खेमोता हे। सोब सामग्री पइतगर पोखता हे। हिन्दुस्ताने देसेक सकत माने नुकाइल हइ। गोटे दुनियाँइ गुल-मुटाइल हइ। रकम-रकम के रंग गजगजा हे। ई गजट के राजा हे।

देसेक साँसें-माँसें रसल -बसल हे हिन्दुस्तान। लिखवइया हथ लाखों

बिद्मान! पढ़वइया गोटे हिन्दुस्तान। गउरब गनगन हे, पइढ़ के दुनियाँइ चनफन हे। देस दुनियांइ। के बिरतांत, हवा-बसात एकदम जुनजुनात। जइर बात, बिना पछपात। हर घर, घरी-सगर, तातल खभर। देवा कहल- दादा सिरिफ आपन गाँवें नाञ् गोटे कोयलांचलेक गाँवे-गाँवे पुस्तकालय के डुग-डुगी पिटाइ चाही। गाँवे-गाँवे गजट गजगजाइ चाही। गियानेक रंग रदबदाइ चाही। नावा बछरें नावा खुसी खदखदाइ चाही। ●

बतर भेल बातर

21 जनवरी 2009

सावन बीत गेल हे। किसान खातिर तीत भेल हे। भादो, सेंस हे, मगुर बेस हे। पानी बइरसल हे, खेतें-खेत पानी टोभरल हे, कुआँ-डाड़ी सरसल हे, बाँध-पोखइर टलमल हे। हदसल किसान तनि हरसल हे, खेत बाटें लपकल हे। लुरका हार-रकसा काँधाइर हथियाहिर रोपे खातिर पोंहचल हे। हुएँ सँझवा, सुकरी और लुसरी भउजी जिरि-जिदि बिहिन मारे में मातल हथ। लुरका लइर लगवल :- भुटकी भउजी, पानी तो खूब पाइल हा, तनि गीतवा गइभे तब ने धान बोलतो, बाइलें रस भोरतो।

भुटकी :- हाँ, गो **"जाड़ गेलें जड़ावर, आर उमइर गेलें बतार"** सावान सें भादर, बतर भेल बातर। बतर गेलें, कठर हतइ।

लागले लुसरी कहली :- "**मोरलें बइद आर बिकलें गहँकिया।**

बतर गेल फुराइ, तो किसान गेला थुराइ।"

सटले सँझवा कहली :- **"जाड़ गेले जड़ोरी, आर मोरल बाद फुलोरी"**। भादरे रोपतइ किसान तो मेहनइतो हतइ जिआन।

लुरका :- धान खूब हतइ, तनिको सक नखइ। काहे कि कहबी हे कि "पुरबा रोपे पूरा किसान, तीन खँखरी, तेरो धान"।

भुटकी :- तोहें तो उलटी भाखा कुंदा हा। सुना सही टा- **भादर मासें नाभे बान, तेरो खँखरी तीन धान**"। भुटकी भउजिक भाखा सुइन ढेमना देवा आर लेपा भी काँधे कोदाइर लेले हुआँ मोहड़ला, आर हुमइच के हुंकारी देला।

ढेमना :- भउजिक भाखा सोलो आना सच, लुरका तो बके हे ढढ़नच।

देवा :- हाँ, एखन रोपा तो हामिन मन भुलवे खातिर गेंजो थोथो-कइर रहल हों, बेकारी सें बेस खेतीं मोइर रहल हों।

लेपा : - हाँ, भाइ! इटा तो डंग-ढेढ़वा रोपा लागे। काहे कि **बिना बतर सभे बातर**। कहबी हइ कि सो गो चास सें बेसी एगो **बतर** हवे हे।

लेपा :- सावने रोपा डाँड़ाइ गेलो, माने बतर बोंड़ाइ गेलो, बिहिन-बिचा बेंड़ाइ गेलो।

लुरका :- मगुर किसान तो दहाँइ-दीस खेतें लागल हथ ' बिस-पिपरी रकम लोक जीओ- मोरों खइट रहल हथ।

लेपा :- ई तो लागो **बिना आँतर के हार जोता। बइसल बनियाँ कि करे, ई कोठा के धान ऊ कोठा में धरे**। पानिक बतर नात्र पाइ के किसान फचका- फाँदे पोरल हथ सोंइच रहल हथ कि लपइट-झपइट के जे कुछ होवे।

"भागल भूत के लंगाटिए लाभ" बतर के बातर भेल सें तो धान तिन-बेनवाँ भइ चुकल हे। भदरिया खेती भी मटिया-मिलान हें, काहे कि **"बइरसे अदरा तो हवे हे भदरा"। सइले भादरेक रोपा टा सिरिप मन, कान, जुड़वेक बात लागइ**। देखा ने पुरूब बाटें सोनइली सुरुज उइग रहल हइ। जरूर बेस फूल फुटतइ।

बेसी गिदर सुअर नियर

सोमवार, 12 नवम्बर 2007

आइज टहलु दादाक बइठकी में ढेमना, मोहर माहतो, लुखरी, सुकरी, झनवाँ बइसल हला आर आँइख इंडाइर के लुरकाक डहर ताकऽ हला। लुरका सात गिदरेक बाप रोजे बिलम से जुटे हे। आइज तो देरी के हदे करल हे। झनवा कहली - "देखा आइ रहल हो लुरका कोरें काँखें आर घेचें तीन गो छउवा लादले। लुरका आवइते सोब के जोहार करल, माफी माँगल, आर कहल - "छउवा-पुताक तेरो तालें फँसल हलों भाय। बड़ी कचकच। रोज लुइट आनऽहो आर कुइट खाऽहों। दिन भोइर दाइल रोटिक कोसिसें भटइक बुलऽहों। कि करब? एको उपाय नाम सूझे हे। एगो कमनिहार आर नौ गो पेटेक आइग निझवे पड़े हे। तगादा में पादु साव पोंहचल हला। पाछु महीने एक कोरी टाका रिन लेल हलिए। पाँच हपता पाँच-पाँच टाका देलिए,

मगुर कहे हे कि मूर तो जस के तस हो। मोहर माहतो कहला कि पादु साव आर ओकर भाइ लादु साव दुइयो **"किरी दइ, कोरी टाने"** ओला महाजन लागथुन। ओखनी खोंटा चिप के गुर बहर-वऽ हथ। फइर कहला- तोर सात गो गीदर हथुन मगुर सोब **"करिया अछर भैंस बराबइर"**। एको पढ़इलें नाञ। लुरका कहला -**"हाँड़ी थिर नाञ्"** दु-ढाइढ़ छगरी हथ। एक पाल सुअर हथ। लेढ़ा छगरी चेरवे हे। गुडरा सुअइर टेके हें, कामें काम हे। रूदनी, भुटरी, झूरी-काठी, गोंइठा, गोबर में लागल रहऽहथ। पेनका मुनीस खटे हे। बेसे खा हे। बाकि सींघन चाटऽ हथ।" लुखरी कहली -"तोर गीदर केव नंगटे हेंडरे, केव झोलोंग- झोपोर, उखर मुड़ रह-हथुन।" ढेमना कहल- "हाम तो एगो कविता पढ़ल हों कि **"बारो गीदर तेरो ताल**।" मतलब बेसी गीदरें बेसी झंझट। लुरका कहल- "भगवान दे हथिन तो हामें कि करबइ?" ढेमना फइर कहल - "छाइन छुवा गीदर भेल थुन, रूदनी- भुटरिक बिहाक उपाइ कर।" लुरका कहल- **"भाय आँखा हे तो पाँखा नाञ्, बुइध हे तो भोरोसा नाञ्"** रूदनी- भुटरी तो सियान भइ गेल हथ। ओकोर मामू के कहल हिए। उपाय हतइ।" मोहर माहतो कहला - **"हाँ बेटा-बेटी ककरो, घी ढारत मंगरो"** ई **लघें घाँस आर ढोंगे पानी** देलें बेटिक बिहा नाञ हे। बेटिक बिहा लगवइतें कइ जोर जूता खियाइ जा हे।" लुरका कहला -"**छुछा के, के पुछा?**"

टहलु दादा कहला - "लुरका सोब तोर गलती हो। देख ढेमना के, दु गो बेटिक बाद ओपरेसन। बोड़ बेटी सुमन बी.ए. पइढ़ गाँवें आँगनबाड़ी चलवऽ ही। "कन्या-दान योजना" से बिहा भी फक पार। गैस चूल्हा, बासन-बरतन टाका सोब मिलल हइ। दामाद गाँवे पारा सिछक लागइ। दोसरा बेटी कुसुम, कोलज पोढ़ा पइढ़ रहल ही। हलदिल हवेक दरकार नाञ। ढेमना रकम तोरो नाँव गरीबी रेखा के हेंठे हो। चाँड़ाचाँड़ी बोर खोज। रूदनी, भुटरिक गाँइठ जोराइ जितो। **"आव खीर मुँहे गिर"** कहलें नाञ चलतो। तोञ् नरेगा में काम कर। "स्वयं सहायता समूह" बनाव। तोर पास जमीन भी हो। इंदिरा आवास बइन गेल हो। किसान क्रेडिट काड बइन जितो। पचास हजार रिन पइबें। अइसों धान बेस हो। धान टंगे काटबें। तोतरी, घेंघरी, बितना, फुदना, धेंधा सोब के इसकुल भेज। किताप-पोथी खरचा मिलतो। खिचरी खाइ के पइढ़ जिबथुन।

कोंड़लँइ पानी, पोढ़लँइ बिद्दा

सोमवार, 5 फरवरी 2007

टहलु दादाक पंसगी टा गाँवेक अइना लागइ। हियाँ रकम रकम के जनी-मरद जुटऽ हथ आर बरन-बरन, निमन-चिकन, मनेक मतन बतकुचन करऽ हथ। ढेमना टहलु दादा के कहल- "दादा तोहें तो सोरोसोती पूजा में गोटे छेतर दानाइर के आइल हा, तोहराँ छेतर के हाल बनार बखानेक चाही।" दादा कहला, "हाँ हाम तो पुजाक हुलहुली में धनबाइद, झरिया, भागा भौंरा, भूली, कतरास, बाघमारा, केंदुआ, करकेंद, बरोरा, बोकारो, तोपचाँची, गिरिडीह डोंइग के आइल हों। रसता-घाटें, कुल्ही- कोचे, हजारों जोघो में पुजाक हुब-हुलइर हुलासें सोरोबोर भेल हों। चेंगा-चुटियाक चनफनियाँ चेहरा देइख के बेसी खुसी भेल हे। सोब जोघो में तरतरिया साज-सिंगार, धूप-धुना,

खेमोता मोताविक पंडाल देखल हों। बाजारें माटिक मुरूत, फल-फूल, बुंदिया, मिठाइ ढेलम ठेला देखलों। पुजाक दिनें छोट-छोट छउवा गुला पँइट-सलवार छोइड़, बेस-बेस साड़ी-धोती पींध के, खोपें फूल खोंइस के कपारें टिकली साइट के, सुपती गोड़ ले चुंदी तक गहना-गुरिया पींध के, पंडाल आर मुरूत देखे में मातल हला। एखनिक हरस देइख के बुझइलइ कि सचे में बसंत रितु खुसिक खँइचली लइ के आइ गेल हइ। गेंदा-गुलाब, बोन-झुर, पात-पाल्हा, पाँड-पेरवा, पोका-माकर, पसु-पँइखी, हावा-बसात में खुसी के लछन बुझे पइलों। देवा कहल - "गाँवेक गीदर बुतरू के सिखित सियान बनवे खातिर गाँवे धूम-धाम से सोरोसोती मांय के पुजाक दरकार हइ। सोरोसोती माएक किरपा सें गाँव सें अगियान के आँधार भाइग जितइ"। ढेमना टोइक के कहल- "सुन, **हाम कहबो खर्रा, गोली लागे चाहे छर्रा**, सिखित-सियान बने खातिर कोनो पुजा-पासाक दरकार नाञ हइ। खेसमी के चमन माहतों कहल हथिन कि **"कोंड़लँइ पानी, पोढ़लँइ बिदा"** लुरका कहल" हाँ बोकारो के शाँति भारत कविता सुनवल हथ कि **सोरोसोती पुजा हामनी करों आर रूस गेल चाँदे।" लछमी पुजा हामनी करों, भूखें गीदर काँदें"।**

पेटरवाइर के ए. के. झा कविता में पुछल हथ कि -

"जहाँ देवी-देवता रहऽहथ से सरग टा कहाँ हइ"?

बोकारो के गिरधारी गोस्वामी कहल हथ कि -

सुनतो नाञ्‌ माटिक मांय, पथल कधियों बोलतो नाँय।

बंशी लालाःवंशी कहल हथ -**"धरमेक धुनी धुंका हे, लाख- करोड़ टाका।**

छोड़ा भाय काना पतियारी विगियान बाटें ताका।"

शिवनाथ परामानिक के कवितां कहल हइ - **"बोल हरि बोल रे माटिक मुरूत जइग - जाप ढढ़नच के ढोल रे"...।**

गिरिडीह के शिवनंदन पाण्डे गरीब पुछल हथ - **"अगम- डिगम पवन पानी। पाँड़े कइसें अगम जानी?** बी. एन ओहदार कहला- **"जइग-जाप मेढ़-मुरूत, एकरों चलवल कोन धुरूत"?**

सेसें दुलरी दीदी कहलथिन - "थिरा, थामा, डाँड़ा, भाय, हामर बाटें हुलका! हामर देसें सोब के आपन बिचार कहे के हक हइ। हामरो बिचार सें पूजा सें अगिआन नाँय भागे पारे। काहे कि पिरथिवबी में हामर देस सोबले

बेसी पूजा करे हे, मगुर बोले, बुइधे, खेल कूदें बहुत पाछु हे। मगुर देसें जे रकम बाल दिवस, महिला दिवस, सिछक दिवस मनवल जा हइ, तइसने इटा के "विवेक दिवस" बुइझ के ई दिने सोब के बुइध, विवेक गियान-विगियान के बारे माथा खटवेक आटा-पाटा करेक चाही। एके बात जानेक चाही कि मानुस सें बोड़ केव नाँय। मानुस महान हे। ●

घूसखोर

सोमवार, 12 मार्च 2007

टहलु दादाक पसंगी एखनो साँझ-बिहान गनगनाइ उठऽहइ। गँवइया सब चुकुमुकु बइस के आइग तापऽहथ आर बत-कूचन करऽहथ। आइज मोहर माहतों पोहँचला तो देखला कि ढेमना, लुरका, देबा, सुकरी, लुखरी, खेदनी, भूखली सोब के बीच जान-कहनी (बुझोवल) के दौर चइल रहल हइ। ढेमना कहल- **"टुटल घरें नटुवा नाच"** बुझ कि लागो। फट, सुकरी जबाब देली- **'लावा'**। लुरका कहल - **"टिक चरइंयाँ मुडीं मास"** देवा जबाब देल- **भेलवा**। भूखली पुछलीं- **"कार चुका धुंध नुका"** सुकरी जबाब देली **बइगन**। फइर लुरका पुछल - **"फोरे ने फुले मगुर रोजे एक सूप बहराइ।"** लुखरी जबाब देली - **"साँकार"**। बीचे में मोहोर महतो कहला कि ई गुला तो पुरना परिया के जान-कहनी लागो। सुना लोतन जुग के तातल

कहनी। हियाँ रकम-रकम के जीव रहऽ हथ। केव आदम-खोर, केव मइला-खोर, "कोन अइसन" खोर हे, जकर कतनो खइलें पेट नाँय भोरे हे।" सोभिन चुप! तब जबाब खातिर टहलु दादा सें नेहोर करल गेलइ। दादा फट जबाब देला - **'घूसखोर'**। दीदी कहलथिन एकदम सोलो आना सही। घूस खाइ ओला के कधियों पेट नाँय भोरे हे। तभीं तो धनबाइद के सिविल सर्जन के घूस दिए खातिर अनुबंध सिछा कर्मी सब भीख माँइग- माँइग के घूस दिएक पइसा जमा करऽ हला। मोहर माहतो फइर पुछला कि कौन अइसन मानुस हे जकराँ पइसा खरच करेक लुइर नाँय। दादा जबाब देला - "**मंतरी** के"। दीदी कहलथिन तभीं हियाँ इंदिरा आवास बनवे खातिर 289.15 लाख टाका देल गेलइ, मगुर एकर सिरिफ 69.24% खरच करे पारला। 2138 गो इंदिरा आवास के जोघो में 1582 गो इंदिरा आवास बनें पइलइ। मोहर माहतो फइर पुछला- कोयलांचलें कोन अइसन काम हइ। जकराँ नेता मंतरी अधिकारी केव नाँय रोके पारऽ हथ। ढेमना कहला "घूसखोरी आर कोयला चोरी" । दीदी कहली, हाँ ई बात के तो हियाँ के नामी स्थानीय विधायक मानिन मथुरा माहतो भी सिकार करल हथ। मोहर माहतो आरो पुछला- बताव, ककर डरें, हियाँ सेठ साहुकार आपन के बोड़ नाँय गनवे पारऽ हथ। लुरका जबाव देल - **"इनकम टेक्स के डर सें"** दीदी कहलाथिन कि हाँ, हियाँक आयकर विभाग कहल हइ कि एखनी तीन हजार के साड़ी, पाँच हजार में बेंचऽ हथ, मगुर लाभ, टा एक-दु परतिसत देखवऽ हथ। मोहर माहतो फइर कहला - कोयलांचलें कोन अइसन काम हइ जकर सुधार अधिकारी मंतरी केव नाँय करे पारऽ हथ। लुरका जबाब देल- "बिजली के सुधार"। दीदी कहला, हाँ बहुत बछर सें बिजली के दुरदासा जस के तस हइ। दादा कहला - "हाम धनबाइद में रामकथा सुने ले गेल हलों, हुआँ सिरी बिजय कौशल जी कहलथिन कि मानुस धन आर पद के मद में पागल भइ जा हथ"। मगुर स्वर्गीय कमलेश 'हिन्दुस्तान' में एगो लेखें कहल हथिन कि मंदिर आर मठ में एते धन कोंइच के राखल गेल हइ कि ई धन गुला बाहर भेलें देस के सोब करजा सोध हइ जितइ, आर देस सें गरीबी टा भाइग जितइ। एखन बलियापुरी के पाँड़े डीह में सिधु-कान्हु सेवा दल बाटे ले दु- दिनवा सिधु- कान्हु मेला लगवल गेल हइ। दादा ओकरे में सामिल हवे खातिर चइल गेला। ●

गरीब किसान

सोमवार, 10 दिसम्बर 2007

ई बछर धान के उपज खास हइ। ढेमना के हिया में खूब हुब हरस, हुलास हइ। अबरी लादु साव आर पादु साव के करजा खलास कइर दिएक आस हइ। सइले ढेमनाक घर-गुसटी कचकचाइ के कटनी आर मनमनाइ के मइड़नी कइर रहल हथ। खेतें खरिहानें तीन बजा भोर सें गारो बजा राइत तक दरदराइ के काम करऽ हथ। खँइचली, दुउरी, डेमनी में धान धरऽ हथ। धान तो कसमकस हे, टहलु दादाक दुआरीं पसंगी भी जबरजस हें। ठिठरल हाथ- गोड़ सेंके खातिर ढेमना, लुरका, देवा, लुखरी, सुकरी, झनवा सोब पंसगी में जुटऽ हथ आर गोंठाइ के भाखा कुंदऽ हथ। बत-कुचन करऽ हथ।

ढेमना कहल - "हाम ई बछर बोड़ो नुनु के कोलेज पोढ़ा पढे खातिर धनबाइद पठवब।"

आइग के झरक सें लुरकाक बोली भी टनटनाइ गेलइ तो कहल- "हाम्हु लुसरी मुसरी के गोंइठा- गोबर छोड़वब। बितना, फुचना, घेंघना, ढेना, मेना सातो चेंगा चुटिया इसकुल जइता। खिचरी खइता आर पोथी पढ़ता।"

लुखरी कहलीं- **"पेट में रहे खुदी तो सभेक चले बुधि"** ई बछर जकर खेत हइ। खेतें खटेक चेत हइ, ओकर बेस धान हइ। बेस मान हइ। बेस ठोर ठेकान हइ। मगुर 'घोघना', ओकर कहुँ खेत-पथार नाञ। रोजी-रोजगार नाञ। ओकर खातिर कोन्हो विचार नाञ्। एक खेचा जमीन नाञ् तो सरकार के भी ओकर पर एकिन नाञ्। कोनो धार-रिन नाञ। बेचारा हेंजामारा-चेठाहारा हे। सेंप ढोइक के दिन काटे हे। तीन बेटिक दहेज दिए में बेचारा दिकदिकाइ गेल हे। टोपरा-टोपरी घर-डींड़ा तक बिकाइ गेल हे। सुनल कि सिजुआ शक्ति-मेला में मुख मंतरी गरीब के कम्बल बाँटता। बड़ी आस लइ के पइदले दउड़ल। ढुसमल-बजरल, ठिके लुटे-कुटेक बेरा में मेला पोंहचल। चिन्ह-परिचित खातिर चकर-मकर ताकल। ककरो नाञ पावल। सगरे पोंगबल रकम पुलिस, निसपिटर जोबर-जोबर टोपी ओला ओफिसर। बेचारा 'घोघना' हल, पिंधल झोलोंग-झोपोर। जँदे गेल तधीं सिपाही रोकल। एगो सिपाही तो आतंकवादी बुझ के टोकल। भिड़े धक्का खाइ के गिरल। भइ गेल लहुआ-लोखर। कधुँ समसे नाञ् पारल। भकुवाइ गेल बेचारा। फकुवाइ गेल बेचारा। बहुत नेहोर विनती करल सिपाही के आर जकरा-तकरा। सिठाइ के भइ गेल अधनिंधरा। दोना रकम मुँह भेलइ। सकें एगो सिपाही आँइख इंडाइर-इंडाइर कुंधराइ के ताकल। घोघना बेचारा बहुत भाभल-गुनल। मीन-मेख निकालल। सात-पाँच भाइभ-गुइन के चुपे घार घुरल। घारें साँथाइ-साँथाइ खुब सोंचल कि सरकार बेकार गरीब गुला खातिर मगज मारी करे हे। सरकारी खरच सें गरीब गुलाक मुँहे ठोना ठोकवाइ देलें सोब समइसा फक-पार होइ जितलइ। खाली अमीर मजा सें राज कर तला। झारखंडे तो माञ् मातिरभासा, माटी आर माटिक मानस सोब हामरे नियर कंगाल भइ गेल हथ। धरती माएक भोटी भसइक चुकल हे। मातरिभासाक भोर-भाँज सिराइ रहल हे। माटी भोंभोर-फाँक भइ सोसान नियर डरडरान हें। माटिक मानुस हदइर के हलुवा-हारान हे।" घोघना सोंचते सोंचते सुइत गेल।

सपना देखल- "घोघना बिधायक आर बिधायक सें मंतरी बइन गेल हे। डींड़ा- पींड़ा बहुत ऊँचा भइ गेल हइ। टेपरा-टेपरी टेना-मेना सोब दूधें

पुरकुचा करऽ हथ। ऊँचा घार, लंबा कार, रकम-रकम साज सिंगार हे। तेंतार में चमचा देदार हथ, हजारों हजार हथ। एते धन कि दस पुस्त मालामाल रहता। ●

मानुस एका भइ रहल

शुक्रवार, 11 जुलाई 2008

टहलु दादाक बइठकी में लुखरी एकाइ बइसल हली। दादा चोकाइ के पुछला- आइज कोन कारन सें गोठें लोक नाञ?

लुखरी कहली - सोभिन आपन-आपन घारें मजा लिए में मातल हथुन। सुगनी-घार टी. बी. किनाइल हइ। देवा मोबाइल में एकाइ खेला खेइल रहल हे! ढेमना विडिओ गेमे हो। लुरका इंटरनेट देखऽ हो। आब एका खेल के हजार बेबस्था हो, घार बइसले दिल्ली, बंबे, कलकत्ता, इंगलैंड अमरिका के नाच-गान, सिनेमा थिएटर समाचार आर घारे सें कथा-बरता के संरजाम हो। आब अखरा बइठकी बेकार हो। हाम्हु काइल सें नाञ् अइबो।

दादा कहला- लुखरी तोञ् ठीक कहलें। पुरना परिआ में सामूहिकता मानुस के संसकीरति हलइ। मानुसें पिरती हलइ। मगुर

आधुनिकता एकराँ चबाइ-चबाइ के खाइ रहल हइ। अस्तें-अस्तें मानुस एका भेल जाइ रहल हे। इलेक्ट्रानिक अउजार आदमी के एका बनेक आदइत दइ रहल हइ। आबें संगी-सहिया के दरकार नाञ्।

मोहर माहतों कहऽहला कि पुरना परिआ में गिदरे घरी सें मानुस समाजें गाँथाइ जा हला। नान्हें उमइर सें कहुँ - **"झिम झिमालो झिमा लो, माएँ- बापें खाइ लो**। कहुँ - **"ढाँस, कोस, फिंगी, बुलबुल, मेदा, मेसतर"**। कहुँ- **"घोघो रानी, कतना पानी"**, कहुँ **"झलका झुमइर खेले दे, लिख पटापइट मारे दे"**। कुल्हीं-बारीं छुर्र, कबड्उी, कोइथ के कबकबी रहऽ हल। बोड़ भेलें केव हार जोतऽ हल, केव ढेंका फोरऽ हल, केव बिहिन बुनऽ हल। ई एकता पर महान गवइआ सुकुमार गीत जोरल हथ **'हार जोते हरऽवा, कुकुरें बुने धान रे, बोनेक बाँदर ढेंका फोरे, खेरवे किसान रे, एहे तरि सभे मिली करिऽ हा पिरित रे।"**

हजार-हजार रोपनी पाँइत जोइर के आर कंठ सें कंठ मिलाइ के गीत गावऽ हला, आर धान रोपऽहला। सावने धरती आकास झुइम उठऽहल। अइसने धान काटे, मइड़े में, बिटा बाँधे में, गुड़े में, घार भीतर ढुकबे में, पाड़न चढ़वे में, मोरखी-बिहा में, गाँवे सामुहिकता गजगजा हल। कामेक बाद अखरें जनी-मरद, बुढ़ जुआन, काँधा जोइर ढोल, माँदइर, नगाड़ा, बाँसिक सुरें झलका झुमइर, खेमटा, झुमटा डमकच के हुब हुलइर हरस हुलासें हेराइ जा हला। तन-मन हालुक हवऽ हल। हुबे भोरल दिन आर रीझें राँगल राइत हव हल। एखन पइरबरतन के आँधी आइल हे। ई बेलुइराहा बेबस्था में फोटो नाचे हे, मानुस बइस के काँदें हे। गाँवे मोसी-पिसी, जेठा-काकाक रिस्ता सिराइ रहल हे। अपनउतिक असमिता अरगुझाइ के नंगटा हें। रीत-रेवाज रेंइग-रेंइग के रेंगटा हें। चाइरो बाटे हाही-दाँदी हे। काँदा-काँदी हे। मानुस हेंसइर-हदइर के हलुवा-हारान हे, हारित परान हें। हर बेगइत बेआकुल हे, बेबस हे, हरनठ हे, हाइ-निसार हे, हताइ के अधसेंस हे, अधमोरवा हे। मेल-मोहबइत के लकलकिया गाछ, बिसाहा नेति सें लटवा-लाहइर हे। लोक लाज के लिलि-छिछि हइ रहल हे। असलिल ओडिओ-बिडिओ केसेट सें देही दरसन के बिजनेस हे। असलिल गीतेक गाछें पइसा फुइल फोइर रहल हे, लिलज तोइर रहल हे। पूंजी-पतिक घारें बिना खटले पइसा झइर रहल हे। लिलज लुटे- कुटे खातिर निरलज बनल हथ। आँखिक पानी हेराइ गेल हे। पइसाक लोभे आर

बासनाक बासें छोंड़ा-छोंड़िक गात उघइर रहल हे। गीत गइराइ गेल हे। बासनाक बासें भासाक सोवाद बिसाइ रहल हे। नइतिक मुइल पइसें बिकाइ रहल हे। ●

गरीब के करजा सूदखोर के मजा

सोमवार, 8 अक्टूबर 2007

टहलु दादाक बइठकी तो जुमल हइ, मगुर ढेमना मुँड़ गइड के मनझान सपटल हे। मुँड उखर, देही रूखड़, हेंडर-हेटंग गात, डँड़े सिरिफ भगवा। पुछला पर आँइख डबडबाइ गेलइ, कहल- दादा! ई भादर-आसिन के घोंघचल दिन गुला ठेला दाइ भेल हे। अइसों अइग टंगवा बइरसा अखरखँड करल हें। अनखाही बइरसा सें हामर पोंआँर छपरी रटपटाइ गेल हे। रहे के, खटे के, खाइ के, पींधे के, कोनो ठीक नाञ् हे। भूख हे, हाथ हे, गोड़ हे, चाइर बेगइत हों, पाँच चेंगा-चुटिया हथ। धाम गारे पारऽहों, हाड़ हिलाइ के काम करे पारऽ हों। मगुर ई झइर-बदरी में काम काहाँ? नाइर-पाइर भींज-भाँइज पादु साव के घोरना घोरलों, मगुर दोंदइर के आधा मजुरी काइट लेला। सावन के कुरइ- खटाली सोब सेंस हें। खरचाक भारी टानाटानी हे।

जान-पानी हे। एक दिन हमार भुटरी-माञ् पइला आधेक बिना बोकरल खजारिक चार आनली ढपइच के। चेंगा-चुटिया दिन भोइर रहइ गेला ओकरे माड़ ढकइच के। कधियो साग-पात, कधियों खुदी-चुनिक माड़भात सुरइप के चेंगा दिन काटऽ हथ। कइ दिन गीदर, बुटु-जोंढरा-भुंजा फाँइक के हथ। एक दिन चिनल जोंढरा कुइट छनइक के घाठा-लपसी भेल। कधियो गोंदलिक-भात खाइ के, कधियों गोड़ाक-भात डबकाइ के, दिन काटऽ हथ। काइल खुदी-चुनी पीस- घँइस के कोनो रकम तीन रोटी भेलइ। मगुर चेंगा पाँच हथ। टोना-टुकरा लुटा-लुटी कइर सुइत गेला। हामनियों दुइयों बेगइत सेंप ढोंइक के सुइत गेलों। आइज कोनो जुइत जोगाड़ नाञ् हे। घर-गुसटिक मुँहें फेफरी फूटे हें। गीदर भूखें सींधन चाटऽ हथ। भूखें ठेना भी मीठ लागे हें। दादा! चेंगा- चुटिया के बाँइच रहल हे खाली सुखल हाड़। लोटा, गिलास, थारा सोब पादु साव हियाँ बँधकी हे। खाँड़ा मइधें जार-मनिक डुभा, छिपी, माटिक हाँड़ी, माटिक तावा, माटिक दीया हे। गीदर, परास-पातेक पतरी-दोना खाला में खा-हथ। खिजुर पातेक पटिया में सुतऽ हथ। भुटरी माञ् बखरी सें फाटल-फेंकाइल लुगा-फाटा आनल ही, ओहे गुलइन सोभिन टोना-टुकरा पींध के दिन काटऽ हथ। हाम अबस हों, आलाचार हों, हरनठ हों, हाइनिसाार हों। दुख ढोबइत-ढोवइत आनसाइ गेल हों, दिकियाइ गेल हों। जिनगी भोइर हाड़तोरवा काम करलों, कामें देही दुहराइ गेल। मगुर कधियो बेस सिरें दु गाल भात-दाइल नाञ् पइलों। चेंगा, चीरा-दहिक मरम नाञ् जानला। चिलुम-तमखुर के चाट तो जिएक बइरी बइन गेल हे। दादा! हाम साँथइ-साँथाइ सोचऽ हों, हामनी दुबर नाञ् भेलें सेठ साहुकार गुला कइसें मोटा भेता। देसें हामर अइसन कोटि-कोटि गरीब भूखें पटपटा हथ। हामर डीड़े पादु साव के गढ़-गुढ़ा हइ। हाम पादु साव के हित बुइझ गुरवा बातें बोका बनलों। लोभें ई सूद खोरके फाँदे फँइस गेलों। बपउती जमीं-जोघो गुचाइ देलों। काइल हामर अंगरी पकइर नतिया पादु साव के बखरी गेल हल। बाँधल मोराइ बीटा देखल। पादु साव तीन तियन संगे हिंका तक दाइल-रोटी तुबल। कोराक कुकुर भी तीन रोटी आर पइला-भोइर दूध चटइक गेल। भूखें फुकुर-फुकुर नतिया आँइख फाइर के टुकुर-टुकुर ताकते रहल, टकटकाइ के। हामरा आँखिक आगु दिनें आँधार बुझाइल, ढुसमते बाहर भेलों अकबकाइ के। अबुझ नतिएँ उठाइ लेल हाथें एगो पथल, चमकाइ के। ●

पहनु परब होली

सोमवार, 17 मार्च 2007

टहलु दादाक दुआरीं आइज होली खातिर हाँकाइर भेल हइ। ढेमना, लुरका, देवा, मोहर माहतो, लुखरी, सुकरी, झनवाँ संगे गोटे गाँव के गोंठवाइर भेल हइ। झुमरी, झुपरी, झुनकी, भुटनी, थेथरी, सोब डँगुआ बेटी छउवा गुला भुएँ थसकले हथ! जुआन छोंड़ गुला आपन जोरापारी संग जमकल हथ। बुढ़ा-बुढ़ी गुला माँझे बइसल हथ। अधिअछ पद टहलु दादा के थोपल हथ। माताल गुला सोब पाछु बाटें दबरल हथ। दादा बाटे सें रंग-अबीर गुलाल के पूरा संरजाम हइ। ढोल, नगारा, माँदइर, बाँसी, ढोलक, पखाज, मिरदंग सें तो गोझी आँगना जाम हइ। होली में नाञ हाँसे ओला के हुका-पानी बंद करके फरमान हइ। आदर्श होली मनवेक राय हइ। दारू, गांजा, चरस, गारी-गुपता रोकेक पुरा-पुरी उपाय हइ। मगुर हाँ, हँडिआक छूट तो

घारें-घार हइ। दादा हिआँ तो भांग के तगार हइ। गाँवे कादा-माटी अँध-पथार हे। रंग-अबीर गुलाल सें भोरल बाजार हे। पुआ-पकवान देदार हे। हुड़दंग के सर-सामान हजार हे। बइठकी खतम हवइते मतर चाइरो बाटे होली-होली के होहाइर हे। हुड़दंग के गुइल-गोहाइर हे। ढोलक नगाड़ा, पखाज, मिरदंग ऊपर माइर हे। देखा ने, करूआ के करमा कादों थसारल हे। भुखला, भउजी ऊपर पिचकारी तानल हे। पोखना, रंग पोते में पागल हे। भगलुआ, डरें भागल हे। पोचना, ओकराँ पकइर के आनल हे। ओकराँ माटीं सानल हे, आर कादो में थसारल हे। ओकर ऊपर बिगना के बजारल हे। गोटे गाँवेक जनी-मरद माँड़ी-भाँगें मातल हथ। थुमना, थोथरा के थसाइर भेंट अँकवाइर कइर रहल हे। मदना, माड़िक निसें सोब के जोहाइर- जोहाइर कइर रहल हे। जाइत-पाइत, ऊँच-नीच, भिन-भेद, अमीरी-गरीबी सोब फुराइ गेल हे। झगरा-तकरार सोब हजम हे। हाँसिक हदहदी खातिर हँस-डीहा में मुरूख-माताल कवि सम्मेलन पसरल हे। मुख -मुरूख रूपें **खोरठा के हाथी रसी राम शरण विश्वकर्मा** के गधा-गाड़ी सें मँगवल गेल हइ। उनखाँ आलु- बइगन, पयाज के कनबाला पिंधाइ के, मुँह करिआ कइर निंगछल गेल हइ। मुँड़ धुने खातिर एखन अखरा में धकलल गेल हथ। मुख मुरूख जी गोड़ें कुरता, घेचें पइजामा आर हाथें जूता पिंध के अखरा में ढेचों- ढेचों कइर रहल हथ। चेंगा चुंटिआ के हँसगुल्ला पोरइस रहल हथ। लुखरी खोपा में फुलकोबी खोंइस के अखरा में पधारल ही। ढाँगा, जनिक लुगा-लाता पेटें बाँइध के ढिढरपेटा बनल हे। मतलु माहतो 16 हाथ के पुँइछ बनवल हे। लुरका हिंका तक चोरोबोरो छाँकल रोटी खोखोबोरो तुइब के पोरखइर आवा-जाही में नेसनाबुत हे। रमना रंग-अबीर के डरें हुड़का लगाइ के हुड़गुम बनल हे। लुरका लुगा-लाता खराप हवेक डरें हेडर-हेटेंग हें। पसना परास-फुल पानी में पोचाइ के पिअरी बनवल हे। पिचकारी लइ भुटका, भउजी के रगदल हे। ढोल-नगाड़ा रकम-रकम के बाज-बजनें बरिआत बहराइल हे। फोगला दादु बोर आर फोगली दादी कनिआँइ साजल ही। लेपा लबार बनल हें। होपना हरिआ हाँसते-हाँसते हलुआ-हारान हथ। गाँवें हाँसी हदहदाइ उठल हइ। खुसी खदखदाइ उठल हइ। सगरे हुब हुलइर हुलास हरस ऊँचके लागल हें खुसी जागल हे। साँझे दादा के दुआरीं गँवइआ सबके पुआ-पकवान देखेक नेवता हइ। ●

पिंकी- साबास !

सोमवार, 18 फरवरी 2007

जाड़ के जुवानी सेंस हइ। मगुर महुआ-जाड़ के जिकिर एखनो हइ। रोज साँझ-बिहान सब संगी टहलु दादाक पंसगी में जरूर जोरो हवऽ हथ। आइज आवइते मतर ढेमना, दादा सें कहल - "तोहें तो बेसी पुराना परिया के बखान करऽ हा। अबरी तो गोटे छेतर टहइल के आइल हा, कुछ टटका-टटकी सुनावा। बीचे में मोहर माहतो कहला - "हाम तो हड़पा जुग तक के हाल बनार जानों हों, जखन कचा-कउड़ी नोट कुछ नाञ् हल। चीज बसुत के अदला- बदली सें समाज चलऽ हल। ढेमना कहल - "मगुर आइज नोट सें कते काम ओसान भेल हइ। टहलु दादा कहला - "ओसान कि भेल हइ।' एखन तो नकली नोट सें गोटे छेतर छप-छपाइ गेल हइ। दस लाख जाली नोट बरामद भइ चुकल हइ। पुरना-परिया में तिलक दहेज के गोज

नाञ् हल। बोर के रूसला पर खुसी सें खेमोता मोताबिक गाय-महीस दइ खुस करेक खपसूरत विध-विधान हल। मगुर एखन चास के गुजरात भवन में देखलों कि तेली डीह के मुकेश बर्णवाल मड़वा-तर सिंदरा-दान के घरीं कहल कि "मोटर साइकिल नाञ् देलें कनियाँइ के मुड़ें सिंदूर नाञ् घँसबो"। कनियाँइ नवादा के पिंकी तितकी तरी तेज आर कड़कड़ हली। ऊ तड़ातड़ झापड़ रसीद कइर देली। लुरका हकइंद उठल- "पिंकी साबास, हमराँ हे बिसवास, तोरे अइसन धीया सें हतइ तिलक के लोभी गुलइन के सतियानास। दादा आरो इमानदारी के बाबत कहला "पुरना परिया में घारें ताला नाञ् लागऽ हल। मगुर देखलों एखन दिने माँझे झरिया में एगो मेहरारू के हतिया कइर 50 हजार के डकइती भेलइ। निरसा के पेट्रोल पम्पें लूट भेलइ तखन माइन-गइन लोक में नइतिक मुइल बहुत बेसी हलइ मगुर एखन अफसर नेता घूस-कमीसन सें अइसन सोरोबोर हथ कि बलियापुरें मानिन विडियो **जय ज्योति सामंता** पिटाइ गेला। आइज मनुसता मथराइ रहल हइ। मानुस, मानुस के दुसमन भइ उठल हइ। तभीं तो बासे पुर धनबाइद में एगो मानुस के माइर- माइर के मोराइ देल गेलइ। तखन टाकाक तीन पइला घीव हल, एखन पयाज 25 टाका कीलो, रसुन तिगुना।

मगुर पेटरवार में बेस काम के जुगुत भेल हइ। हुआँ खोरठा साहित संसकीरति के जगवे जोगवे आर जगजगवे खातिर अखिल झारखंड खोरठा परिषद के जुटान करल गेलइ। जकर में गोटे झारखंड सें मानिन डा. ए. के झा, श्याम सुन्दर महतो 'श्याम', प्राचार्य पारसनाथ महतो, व्याख्याता भोग नाथ ओहदार, भुनेश्वर साहु, बीरबल महतो, शाँति भारत, दिनेश दिनभणि, परितोष प्रजापति, गिरधारी गोस्वामी, श्याम सुन्दर केवट, प्रदीप कु. दीपक, अर्जुन पानुरी, वंशी लाल वंशी जइसन विद्मान मुख रूप सें जुटल हला। राज्य संसाधन केन्द्र आद्री पुस्तक मैत्री जातरा कइर के जन-जागरण के काम करल हे। बरवा-अड्डा में किसान खातिर कनकन कोठरी के गरोड़ करल गेल हइ। कतरास काँको में मंडल समाज के जगवे खातिर मिटींग करल गेल हइ। जकर में सिछा पर विसेस जोर देल गेल हइ। एगो दुखेक खबर हइ कि नावागढ़ के माननीया राज-माता **ज्ञानी माहरानी** के 5 फरवरी 07 के महा-प्रयाण कइर गेला। ई नेपाल महाराजा के शाही खानदान के खुइन हला आर सात भासा के विदमान हला। खोरठा छेतर के वरदान हला। ●

मानिन रामदेव के विचार

सोमवार, 16 अप्रैल 2007

टहलु दादा सें ढेमना लुरका अकबकाइ के पुछला - धनबाइद के मधुलिका में लउवा टांगल देखलों, मधुलिका कि मिठाइ छोइड़ तरकारी बेंचे लागल? दादा कहला - राम देव बाबा धनबाइद सें चइल गेला मगुर ई जोगी के जोग आर जुगुत, सोब मकानें- दोकानें पसरल हे। मधुलिका मिठाइ संगे लउवा- जूस बेंचे हे। चाट, पकोड़ा, गोल-गप्पा कोल्ड ड ्रिंक के दोकाने छांछ, दही, बेल के सरबत, बिके लागल हे। लुरका कहल- दादा, तोहें बाबाक सरंजामें रोजे सामिल हा। गजट भी पढ़ल हा। हामीन तो मुरूख निपट-काना, सइले बाबाक बेस-बेस बात गुला के फुरछाइ के बतावा। दादा कहला- बाबा कैंसर ब्लड-प्रेसर, मधुमेह, मोटापा, बहइरा, गुंगा, चेडरा, पाइरिया, दरद-पीरा के असली निदान **जोग** कहला। रोज कम सें कम आधा घंटा

अनुलोम-बिलोम, प्राणायाम करेक चाही। दवाई, दारू, गांजा, गुटका, बिड़ी, चुटी, फिका सें परहेज करे कहला। भूख लागले उचित पहरें, उचित मातरा में, सॉंति आर खुसी से सादा प्राकृतिक आहार करेक चाही। हरिहर तियन-सालन के विसेस दरकार हइ। दाँत के काम आँत सें नाञ् लिएक चाही। आहार सें देही में 200 रकम के जोगिक तइयार हवे हे। जे देहिक आचार-बिचार बेबहार आर नींद के सइर करे हे। 'जखन मन तखन' सुतेक नाञ् चाही। उचित बेरा में 6-8 घंटा सुखेक नींद चाही। बिहाने अनगुते उइठ के माञ्-बाप आर मातरिभूमि के गोड़ लाइग बेस कामेक पन लिएक चाही। बाबा, माञ्-बाप के सोबले बोड़ तिरिथ कहल हथ। फिल्मी उघार के निंदल हथ। बाबा, हाथ-कपार के रेखा, जनम-पत्री के, सुभ-असुभ मुहुर्त के, सुरूज-गहना, चाँद-गहना से हानी के लाभ गन-पढ के, काना-पतियारी कहल हथ। आपन पटतइर दइ के बुझबल हथ कि "हामर हाथ में कोन्हो भाइग रेखा नाञ् हे। हाम आइज तक सुभ मुहुर्त्त देइख के जातरा नाञ् करल हों। हाम आपन करम आर आचरण सें पद, पइसा आर परतिसठा पाइल हों। हिमइत सें मानुस सोब कुछ करे पारे। खाली भारत में जाइत-पाइत हइ, एकराँ लाइत माइर भगवेक चाही। ऊँच- नीच, गरीब-अमीर छुआछुत, भिनभेद के मेटवेक चाही। कुछ तलियाइल गुले लोक सत्ता के मड़ियाइ लेल हथ। सोसित दलित के भी ऊपर उठेक मउका मिलेक चाही।" देवा बीचे में टोइक के कहल- मगुर बाबा तो आरक्षण के विरोध करल हथ। दादा कहला - हाँ करल हथ, काहे कि सरकार आरक्षण सें गरीबी-अमीरी जाइत-पाइत मेटवेक लइछ पुरा नाञ् करे पारल हे। दुलरी दीदी कहलथिन - बाबा तो खाली अमीर गुला सें घेराइल हथ। दादा कहला - बिलकुल सही घेराइल हथ, काहे कि सोसित-दलित के उठवे खातिर गरीब-गुरवा के पास दर-दरइब नाञ् हइ। बिना संसाधन के विकास नाञ् हवे पारे। सइले सोसित-दलित के तारे खातिर तलियाइल गुला सें धन लेल जाइ रहल हइ। मोहर माहतों कहला। सौ गो गरीब के दुबर कइर एगो मोटा हवे हे। ई बइस बुलुआ गुलइन के रोज दु-घंटा देही झाइर के खटेक सलाह दिएक चाही। एकर सें देस आर देही दुइयोक बरकइत हतइ। दीदी कहलथिन- ई गुर टा टहलु दादा से जाने हतइ। ●

छउवाक दिन

14 नवम्बर 2009

14 नवम्बर, आजाद भारत के पहिल परधान मंतरी मानिन पं. जवाहर लाल नेहरूक जनम दिन लागइ। देसेक बुतरू सब के दुलरू हला नेहरू। दुलरू बुतरूक पिरित आर पतियार इनखाँ बहुत पसिंद हलइ। सइले ऊ आपन जनम दिन के खुसी में चेंगा-चुटिया संग बेसी चहकऽ हला। चेंगा सब उनखाँ पियार सें चाचा कहऽ हला। चेंगा आर चाचा के ई पियार बहुत बिखियात भइ गेल। सइले सरकार चेंगा आर चाचा के ई पियार के जगवे, जोगवे, आर जगजगवे खातिर ई मन-परवा-दिन के **'छउवाक दिन'** रूपें परसिध करल हे। चाचाक मान-सनमान देस बिदेसें हलइ। सइले गोटे दुनियाँएं ई दिन के छउवा दिनेक रूपें मनवल जाहे। इनखर छउवा-पिरति के इसमिरति में सोब छउवाक इसकुलें, कल्बें रकम-रकम के खेल-कूद, बाद-बिवाद, गीत-नाद,

नाटक, टाटक के सर-सरंजाम जोहवल जाहे। नेहरूक नाँव सजवल जाहें। गिदर, रकम-रकम के साजसिंगारें जुइम-जुइट नमन करऽ हथ। आपन सरधा-परेम समरपन करऽहथ, आर नेहरूक गुन- सोवाद गरहन करऽ हथ। सरकार, समाज सेवी संस्था, आर उनखर परेमी समुदाय, ई हुब-हुलइर हुलास हरस में हिया खलास जोगदान करऽ हथ। चाचाक मान-सनमान करऽहथं चेंगा-चुटियाक माँझें चाचाक पियार बाँटऽ हथ। निसचित रूपें नेहरू निक-निमन, निरठ आर नेहायत महान पुरूस हला। देसेक करता-धरता हला। धरम निरपेछता के असल सिपाही हला। कभुँ कोनो कामें कोताही नाञ् करला। अनबरत कामें रत रहला। नावा-भारत के निरमान में इनखर देस-बेयापि काम देइख के आइज भी दूनियाँइ चकरी-घूम हे। गाँव-सहर नदी-नाला, बोन-पहार, सागर, सगरे इनखर काम के हुजूम हे। अइसन कीरति आर करतब करे ओला महान पुरूस दुनियाँइ में गनल-गुथल हथ। चाचा सिरिफ गिदर के गउरब नाञ् गोटे मानुस समाज के गउरब हला। देस खातिर सिरिफ जीवन नाञ् जर-जजाइज भी झाइर के निछावर कइर देला। इनखर सीख मोताबिक इनखर बेटी आर नाती भी देस खातिर रकता-रहइन भइ सहीद भेला। आइज नेहरू नाञ् हथ, मगुर जहाँ भी हथ, गिदर सब के टकटकी लगाइ जरूर देइख रहल हथ। आइज देसें मानुस मलिन हे, झगरा-झाँटी से छितिछिन हे। छल-छइब हे, जाइत-धरम के अइब हे। धरम-निरपेछता चकता हे, समता निपाता हे, पूंजीवाद के जूता हे। नेताक टोली छिरियाछाट हे, खाली टाट-बाट हे। मंदिल-मसजिद के बोल हे, ढढ़नच के ढाँक-ढोल हे, कानून गोल हे। ओ! देसेक बेटा-बेटी छउवा! खाली जनम दिन के खुसी में जीव नाञ् जुड़वा। चाचाक सपना के फुँइक नाञ् फुरूवा, आवा। उनखर बारल बाती के उसकुवा। समरथ बना, चनफन चेठगर बना, जलदि जुआन बना, सिखित सियान बना, विद्मान बना, नेहरू नियर महान बना। चाचाक बलिदान हवे नाञ् जिआन, हटवा सोब बेबधान, आर बनवा देस के महान। दुनियाँइ में हवे भारत के सोबले बोड़ पहिचान। चाचा नेहरू जिंदा-बाद, जय भारत। ●

मधु मास आइल हे

एतवार, 1 मार्च 2009

धरतीं परकीरतिक खातिर रकम-रकम रितुक राज हे। गरम, सरद, बइरसा, सिसिर, हेमंत, बसंत, छः रकमेक साज-बाज हे। छवोक मइधें बसंत के मुँडे 'रितु-राज' के ताज हे। हाँ, बसंत सोब रितुक राजा हे, सोबले बेसी ताजा हे, बेसी माजा हे। बसंतें सोबले बेसी हुब हुलइर हरस हुलास हे। मनेक मतन मधुक सुवास हे। सइले एकर नाम 'मधु-मास' हे। मधु-मास के महत गुन हे, एकर पहिला महिना फागुन हे। पात-पाल्हा नइजगा नतुन हे। जाड़ कटि कुन हे। कटि कुन माने थोड़-थाड़, बस महुआ जाड़। दोसरा महिना चइत हे। आनंद अनइत हे। बोलें बरकइत हे। तने बेसी ताकइत हे। कामें बाइढ़-बढ़इत हे। खुस सोब बेगइत हे। खतम जाड़ेक आफइत-बिपइत हे। खतम छोट दिनेक दिकइत हे। खतम झइर-बदरी, झाँइझ,

लू आँधी तूफान के फझइत हे। छाता-छोपी, बिसेस जूता-टोपी, कीचड़-कादो सें फुरसइत हे। घरें-घर अन हे। नदी-नाला बाँध कुआँ-डाड़ी हेमाल निरमल जल हे। बाताबरन सितल मंद सुगंध हावा सें भोरल-पुरल हे। बोने सोयाँ-कोइर, केंद, पिआर, कनोद, पाकल हे। बोर-पिपर, डोह-डुमइर, माँदल हे।मानुस समेत जीव-जंतु पसु-पँइखी के आहार अछल-गदल हे। सोवाद सर-सल हे। मधु-मास सोब खातिर खुसी आनल हे। गोटे परकीरति के मधु रसें टसटसाइ देल हे। साजन-सजनीक सोक सनसनाइ देल हे। गेंदा-गुलाब बेली-चमेली जुही जगजगाइ गेल हे। मन मोहवा महक से वातावरण महमहाइ गेल हे। बोन-झार, पहार-पहरी, नइजगा नतुन पातें, फुलें-फोरे लादाइ गेल हे। आम मंजरेक मधु रसे पात-पाल्हा लसलसाइ गेल हे। डोड़गा सिमर, खोराहा परास भी लाल लाल फुलें लदबदाइ गेल हे। सादा फुलें कोनार, पिअर फुलें कनेर, निखराइ गेल हे। पिरितेक नेवता पाइ रसिक भँवरा नितराइ लागल हे। मधु रस चुसे खातिर मँडराइ रहल हे। तितली, फुलें-फुल हरसाइ रहल ही। धधकी, धोवा, सीधा, सिहली, सिसम, सरइ मधुक महमही सें मधुवाइ गेल हथ। महुआ रस सोब के माताइ देल हे। गुदगुदाइ देल हे। खुसी खदखदाइ रहल हे। तभीं तो अखरें ढोल-नगाड़ा गड़गड़ाइ लागल हे! गीत-नाद गदगदाइ लागल हे! खेमटा, झुमटा, झलका, झुमइर गनगनाइ रहल हे। रीझें राँगल राइत आर हुबे भोरल दिन हे। खुस खेरहा, बाघ, हाथी, हरिन हे। चरँइ-चिनगिन हे। सगरे पिआर जागल हे। मोर, मोरनिक पुँइछ सुंघें लागल हे। मइना, तितिर, पेरवा-पाँड़ सोब हथ मधु रसें सोरोबोर। सटाइ रहल हथ ठोरें-ठोर। सगरे पिरित हे, निरित हे, कोयल के गीत हे, मइना-मइनिक बात-चित हे। परकीरतिं एहे परेमेक रित हे। सगरे हुब हे, खुसी खुब हे। कनइ फुनगल हे बाँसें! सोब तरींगन चमकल हथ मधुमासें। झक-झक इंजरिया लइ चाँद हाँसे हे आकासें। सोनइली सुरूज, कमल सालुक के हँसवे हे एहे मासें। खुसी रसल-बसल हे सोभेक साँसे-मासें। परानी नाचऽ हथ हुलासें। मधु मासें परेम जोहाइर हे! भेंट-अँकवाइर हे। बरतुपात बिहा जोर नार हे। नावा घार-दुआर के सुतार हे। खेतें गोहुम गदराइ गेल हे! गरमा लउवा झिंगा, खीरा, कंकड़ी, तरबुजा झकझकाइ के जनमल हे। लकलकाइ के बाढ़ल हे। धकधकाइ के फोरल हे। खेती बतराइ गेल हे। किसान अदराइ रहल हे। मलकिनी मुसकाइ रहल ही। बसंत के बरनने कते कवि लेखक घइख गेला, गते थइक गेला, कते

भटइक गेला, कते चमइक गेला। सुना खोरठा कवि लेखक कि कहऽ हथ-

मधु मासें :-

माते हे, गोटे मधु वोन, कोकिलेक कुहु-कुहु सुना घने-घन।
रीझ-रंगे सरहुल चइत मासें,
सरइ के पात नजिगे खसें-खसें। **पारामाणिक**

सरहुल, परबेक राजा झारखंडे दादा,
गाछे पाते फुल फुटइ लाला पिअर सादा।
मधु चुवइ मन मातइ, माइत जा हइ हावा,
परकीरति सिंगार करे, रोज नावा-नावा। **सुकुमार**

सइयाँ चला, चला ना हो
वोने पा-कलइ सोयाँ कोइर। **दिनेश दिन मणि**

सोहान लागे रे, धरती के अँचरा सोहान लागे रे। **शाँति भारत**

फुलऽ लइ कोरइया फुल, फुलऽलइ, परास हो सहिया,
बोनऽवाहीं लागाऽलइ हुलास। **वासु विहारी**

बसंत फागुनेक दिने, टेसु फुले बोने वोन,
मना नहीं माने। **झिंग फुलिया ●**

अकली

एतवार, 11 नवम्बर 2008

आइज टहलु दादा आपन बहिन अकली घार गेल हथ, काहे कि ई बछर करम करे खातिर अकली नाञ आइल हली। अकलिक सास गइर राहज के रहेक चलते झारखंडी संसकीरति के नाञ् जानऽ हथ। सइले फोनें दादा के लिआन करे से बारन करल हला। दादा के देखते अकली सुबइक उठली आर कहे लागली, दादा, तन तो सासेक बसें हइ, मगुर मने करम करेक जे कचट हइ, करम नाचेक जे छटपट हइ, संगी सहेली माञ्-मोसी, जेठी-काकी, संग मिलेक जे कुलबुल हइ, जे चुहुल हइ, ऊ आकुल टा ककरो बसें नाञ्, ककरो आसें नाञ्, ऊ तो पाँइख लगाइ रोज रातीं उड़े हे, सुने हे, नइहर के कुल्ही-कोचें, डहरें-अखरें, करम गीतेक गलबली, देखे हे, नाचेक हुलहुली, कखनो नाइच ले हे एकाध दुलदली। अजगइबी आँखीं देखऽ हों करमी,

कजरी, कमली, झुनकी, चुनियाँ, धनियाँ, सोब संगी-सहेली करम करे खातिर नइहर आइ गेल हथ, करम गाइ रहल हथ, हमराँ हँकाइ रहल हथ, हांथ मलकाइ रहल हथ, कखनु, नाञ् पाइ अकबकाइ रहल हथ। कहुँ काँच कुआँर के कोकिल कंठ गीत गनगनाइ रहल हे, खुसी खदखदाइ रहल हे। कखनों हमरो मनेक कोइल गावे हे, मनेक मेंजुर नाचे हे। कखनो जोरिया में जावा उठवऽ हों। कखनों जावा, जगवऽ हों, कखनो पानी में भँसवऽ हों, कखनों करम मिलन में चनफन रहऽ हों। कखनो रसिक सब अखरा बाँधल हथ, काँधें ढोल, ढाँक, ढाँसा, टाँगल हथ, आर झलका झुमइरें मातल हथ। कखनो जुमल-जुटल बेटी छउवा, ई बखरी सें ऊ बखरी कदकदाइ रहल हथ, रीझ-रंगे रदबदाइ रहल हथ, फेरी ओला ठिन गोंठाइ रहल हथ, अरसी, करवा फुदना मोलाइ रहल हथ।

हाँ दादा! करमा कबें पार भइ गेल हे, मगुर हाम एखनो, कखनों सखी सहेली संग पिंड़ें पाँइत जोइर बइस जाहो, माँञ् संगे गप-सपें फँइस जाहों, कखनो अचक्के उइठ निंद-मासनें हदइस जाहों। अकली मुँड़ गइड़ सपुन सुनवेक सुमारें सोरो-बोर हली। मुँड़ उठाइ के देखली तो दादाक आँखी लोर झोरोबोर हलइ। अकली दादाक मुँड़ पकइर डाँड़ाइ गेली, लुकाक टेपें लोर पोंछे लागली आर कहली-दादा। हरिहर धान, झिंगाफुल देइख के मन परफुल नाञ, आकुल बेयाकुल हवे। हिएँ हुलुस्थुल हवे हे। दादा! हियाँ हाम चुपें, जावा उठवल हलो टुपें। परना दिन, झाँइप के झिंगा-पात, आइन देली बासी भात, पासेक ननद फुल कुवाँरीं, नुकाइ खइलों फरकवा धारीं।

दादा कहला- नुनी! करमी, चुनियाँ, झुनकी हमरो बासी भातेक नेवता देल हला, मगुर तोर बिनु कहुँ सोवाद नाञ्, सगरे तोरे चरचा, तारे खोज, तोरे इआइद। तोरे देखेक आसें हथुन सोब बेहाल, सइले एक दिन खातिर हामर संगे चाल, सोभेक हिया हतइ हेमाल।

अकली कहली- नाञ् दादा! बितल बछर सिखित सिआन कुमुद दीदी करम-धरम फुरछाइ के कहल ही, कि धरम सक्ति मन गढ़वा हे, मन भुलुवा हे, मन डेरवा हे, भिन-भेदवा हे, मानुस मरवा हे। मगुर करम सक्ति आँइख देखवा हे, आँइख खोलवा हे। आवे ओला दिनें खाली हामर सास नाञ्, संसार करम सक्ति के जानतइ, रूस-चीन, जापान रकम धरम छोइड़ करम सक्ति के मानतइ। करम के उपज अन्न सक्ति के पहिचानतइ। सोंचल हलों ई बछर

कुमुद दीदी से आरो बेसी जानब, आरो परकीरति परब के पाता पावब, मगुर आब मनेक बात सँइत राखब।

दादा! तोञ घार घुइर जो एकाइ, जीअब- जागब तो जरूर करम करे आवब, सास संगे, करमाक रंगे। अवइया बछरें। ●

खोरठा महान

सोमवार, 13 नवम्बर 2007

अबरी हपता टहलु दादा बस में खाड़ा-खाड़ा माटीगाढ़ा पोहँइच गेला। आर खोरठा एलबम "भोजिक बहिन" के सूटिंग में सामिल भेला। सूटिंग देख-निहार के मेला ठेलमठेला हलइ। दादा के मान-मरजादा खातिर जुनजुगात पानी-पिर्हा के तिहा भेलइ। बइस के देखेक बेस बेबस्था भेलइ। मगुर घोच-पोच खोरठा में गोबर-गिधा गीत आर नाढ़ा नाच गुला, दादा के बिख नियर तिख लागलइ। दुसान दिरिस देइख के **गोड़ेक लहइर चाँदी चढ़लइ**। सूटिंग के बादें दादा सें दू सबद कहेक नेहोर करल गेलइ। दादा दरसइला कि खोरठा हामनिक मातरि भासा रूपें माञ् लागइ। खोरठाक उमइर कहल नाञ् जाइ पारे। शोध मोताबिक खोरठा भासा संसकीरति हड़प्पा कालीन खरोष्ठी सें जनमल सोबले पुरान समतावादी सइभगर भासा लागइ।

पुरखा सदाइ एकर सनमान करल हथ। पुरबा-पुरुस ई पुसतइनी भासा में किसिम-किसिम के कइदा सें अनगइन खेमटा, झुमटा, झलका झुमइर, झुलरी, झिंगफुलिया, मलहरिया, भदरिया, हरबदिया, गोलवारी, चिकन चाँचइर, डेगें-डेगें डोहा, डमकच, बरन-बरन के बिहा गीत, करम के मरम, रीझें राँगल रितु गीत, टुसु गीत, सोवादगर सोहइर, सहियारी गीत, सुध-सुथर, सइभगर, गीत आर नाच रचल हथ। रकम-रकम के सुरें लाखों-लाख गीत गुला कोन्हो कितापें कैसेटें नाञ् हइ। सोब लाखों लाख रसिक के कोकिल कंठे सँइतल हइ। जेटा सुगुम बासी सगरखिन बरसते रहऽहइ। सइले झारखंडी भासा संसकीरति के महान विद्वान डा. रामदयाल मुंडा कहल हथिन कि हियाँ के चाइल टा निरित आर बोली आ गीत लागई। बेनामी गीत के छाड़ा ई जुगेक नामी रसिक भवप्रीता, तितकी राय, चामु कमार, बिनोदिया, गोरंगिया, हाड़ी राम, रूटुवा गोड़ाइत, चपला देवी जइसन झुमरिया सब ठेठ खोरठा में मन मोहवा सुध सइभगर गीत-निरित के सिरजन कहल हथ। श्रीनिवास पानुरी, महेश गोलवार, भुनेश्वर दत्त शर्मा 'व्याकुल' जइसन विद्वान खोरठा के जोरगर बनवे में जिनगी दइ देला। बरतमाने डा. ए. के झा, डा. चतुर्भुज, शिवनंदन पांडेय', 'गरीब', भोगनाथ ओहदार चितरंजन महतसोमवार, 12 मार्च 2007 शिवनाथ पारामानिक, शाँति भारत, बहादुर पांडेय, सुकुमार, बंशी लाल 'बंशी', दिनेक दिनमणि जइसन सइकड़ों विद्वान खोरठाक खेमोता के विश्व विद्यालय में बइसवल हथ। जहाँ सइकड़ो सिछक हजारो धिया-पुता अधियन, शोध, खोज में खोरठा के चकचकवे में लागल हथ। हजारों सम्मेलन, कार्य-शाला सेमिनार डहर जातरा सें खोरठाक खजाना के खास बनवल हथ, सइभ इतिहास रचल हथ। आदि जुग सें आइज तक कभुँ, केव, कधुँ गइर सबद सें ई भल भासा के भाँड़ेक काम नाञ् करल हथ। विश्व के भासा सरबेछन कहल हइ कि खोरठा में असलिल सबद सोबले कम हइ। मगुर अपसोच कि आइज एकर सुन्दर, उजर असमिता के, बम्बइया बकबक में बेरबाद करेक काम दरदराइ के चइल रहल हइ। घोच-पोच के घचक्का सें माञ्-माटिक मान घिनाइ रहल हइ। बासना बासाइ रहल हइ। नइतिक मुइल टा नासाइ रहल हइ। फचका फाँदा के धाँधा सें पारंपरिक पहिचान के चिन्हा लोकगीत, लोकनिरित, बिहा, परब, गाँव-घर, अखरा सें छपित भइ रहल हइ। आँइख मइस-मइस के देखा खोरठा पइरवार में **बारो बेगइत तेरो चुल्हा** भइ रहल हइ। जोरो हवेक दरकार हइ। ●

गाँवेक गरिमा

सोमवार, 28 जनवरी 2008

टहलु दादा सहरिया गाँवे आर बोनतरिया गाँवें टहल माइर के अबगे घुरल हथ। सहरिया गाँव मइधें भूली, भूदा, भेला टाँइड़, भागा बाँध, भौंरा, भिसती-पाड़ा, भोजू डीह, भूत गढिया के भूगोल बदइल चुकल हे। मगुर एखनों बोनतरिया गाँवे पारसनाथ, लुगु-जिनगा, जइसन पहार-पहरी हे। टुंगरा-टुंगरी हे। गाछ-पात झाँख-झाँखरी हे। भोरल-पुरल गाँव-बखरी हे। खेते टाँइड़ टिकुरें, धान, गोहुम, कुरथी, मूंग, घंघरी हे। बुट ढंगरी हे। अइसने गाँव चलकरी, चपरी, नगरी, रंगरी हे। गाँवे एखनो बोनझार हे। हरियरी हजार हे। गंधी गजार हे। गाछ-पात सें पियार हे। बोन फुलेक सिंगार हे। गँवइ संसकीरतिक परब-तिहार हे। आचार-विचार हे। नेगाचार हे, पिरित पतियार हे। बेस बेबहार हे। परब-परथा नरता बिहा में गँवइ गीत-मल्हार हे।

धुरेक गाँव, सहरी संसकीरति सें अनचिन्हार हे। जोरिया नाला नदी हे। झरझर झरना के हदहदी हे। गरइ चेंग पोंठी माछ हे। घोंघी झिनुक काछ हे। ताड़ खिजुर के गाछ हे। सरइ सिसम के राख हे। आम जामुन महुआ गम्हाइर हे। गरू-डांगर के गोंठ-गोंठवाइर हे। घोरना लेवाइर हे। हित-मितर समधी सहिया-सोर संग भेंठ आँकवाइर हे। डेगें-डेगें, नेगें-नेगें गँवइ गीत-नाद हे। सरधा के सोवाद हे। मानुस के मान-मरजाद हे। सर-सवागत में पिर्हा-पानी, पाना, गुर हे। हुंका-चिलुम, चुटी, चुन तमखुर हे। गाँवेंक गउरब गोटा-गोटी हे। पिंधान-ओढ़ान मोटा-मोटी हे। घाम चुआ रोटी हे। छात नाञ छाइन हे। माटिक मुंधाइन हे। सिमिट के चबुतरा नाञ सही, मगुर चिकन चटाइन हे। सगरे बोन-बनिज हे, बरन-बरन चीज हे। गरू गाड़ी हे, चुआँ डाड़ी हे, पाँता जोइर खेतेक सिआँड़ी हे। सागरे गाछ बिरिछ हे। हावा पानी फरिछ हे। परियाबरन सरग तुइल हे। नइतिक मुइल हे। गाछें-पातें चरँइ चिनगिक गुइल हे। गाँवे मोसी-पिसी जेठा-काका के पिरित खुलम-खुइल हे। सादा-माठा घार, घार करना हे। गात ढाँपे ओला जानिक पिंधना हे। साफ-सुथर डीड़ा-पिड़ा घार गोझी अंगना हे। मुरगी-चेंगना हे। गँवइ बाज-बजना हे। असुक बेसुक में जरी-बुटी हे। गीदर के घोंटी हे। चोट-घाटें काँचा हरदी तेंतइर पात हे। हइरला, बेहरा, आँवला अफरात हे। साग-पात हे। माड़-भात हे। सुध हावा-बसात हे। जीव जुड़वे खातिर चिकन पिड़ा हे। सुथर कुल्ही मुड़ा हे। गाछेक जुड़ा हे। रीझ-रंग खातिर ढोल, नगाड़ा, बाँसी, माँदइर हे। झलका झुमइर हे। खेमटा, झुमटा, नटुआ के हुब-हुलइर हे। जीव-जंतु के भी आदर हे। देखा ने कते मजा सें टोभरल पानी में जोबरल डांगर हे। खुसी में छगरी-पठरू कउवा, कुकुर, पोका-माकर हे। घारें-घार काड़ा बरद के जोड़ा हे। गाड़ी घोड़ा हे। खेत-बारी के जोता-कोड़ा हे। मीठ बोली हे। ननद-भोजाइ के ठिठोली हे। फुरसइत में डोंरा बाँटा-बाँटी हे। टुन-टुन, टुन-टुन गरू काड़ा के घाँटी हे। सँइतल पोंआर आँटी हे। झूरी झाँटी हे। देवालें चकचक चरक दुधी-माटी हे। गाँवें सोब चीज खाँटी हे। उखइर, जाँता, ढेकिक हकड़दम हे। मानुसें लाज सरम हे। रकम-रकम जिनिस हे। नजइर जुड़वा दिरिस हे। टाँइड़ में छगरी, जोभी में महिस हे। पाँड़-पेरवा सुगा मइना तितिर हे। सोब नि फिकिर हे। सब के तिहा ततबिर हे। गाछें कटहर हे। बरद-मुता डहर हे। पइदल आवा जाही घरी सगर हे। सच में धुरेक गाँव अपरूप सुंदर हे। ●

हूल दिवस

सोमवार, 16 जुलाई 2007

आइज टहलु दादा हपता भोइर "30 जून हुल दिवस" समारोह में धन बाइद, झरिया, बोकारो गिरिडीह घुइर के बइठकी में बइसल हथ। एहे दिन संथाल परगना के संथाल सब सिधू-कानू, चाँद-भैरव के अगुवाइ में अंग्रेजी हुकूम आर जिमींदारी जुलूम के खिलापें **'हुल'** के बिगुल फुँकल हला। **कार्ल मार्क्स के मोताबिक** ई भारत के **पहिला स्वतंत्रता संगराम** हलइ। कास्तकारी अधिनियम एकरे फल लागइ। ढेमना ई वीर गुलाक गाथा कहेक खातिर, दादा सें नेहोर करल। दादा कहला- सिधू-कानू, चाँद-भैरव माने देस आर झारखंड के गउरब। सन् 1763 ई. में उधवा नदी के जुध में अंग्रेज सेनापति मेजर एडम, मीर कासिम के पछाइर संथाल परगना के कब्जा करल। 1823 ई में बुक ब्राउन आर क्लीवलैंड राज महल में गोड़

धरला। सउसन खातिर जिमिंदार महाजन के सिरजन करला। जल, जंगल, जमीन, आर जोरू तक के लुट सुरू करला। भगनाडीह के सिधू-कानू, चाँद-भैरव हला ममुली रेल कुली। सहे नात्र पारला अंग्रेजी कुट चाइल आर सउसन के कुलकुली। ई जोरगार जुआन सब बलगर आर चालाँक हला। संथाल के नाक हला। डंग-ढेढ़वा डाक हला। **'हुल'** के हाँक देला। अंग्रेजी अतियाचार के खिलापें हकइंद उठला। **बिदरोह** के बिगुल फुँकला। **उलगुलान** के ठेकान करला। 400 पंचाहितें सरइ डोहंगी-डोहरा घुराइ के हँकाइर करला। डीहें-डीहें डर-भगवा डुगडुगी ठोंकला। मुँड़े कपन बाँइध के जुमे-जुटेक सुड़सुड़ी फुँसला। 30 जून 1855 के झकझकिया पुरनिमा के इंजिरिया रातीं भगनाडीह के फइलगर फादा, बलम, बरछा, फरसा, टाँगी, धनुक-काँड लइ के दस हजार हेंडर-हेटंग सकत संथाल के जबरजस जुटान भेलइ। अंग्रेजी सासन, सउसन के सतियानास खातिर शक्ति के सिरजन भेलइ। जिमींदारी जोर जुलूम के जारे खातिर हजारों हाथ तनतन भेलइ। पहिचान बँचवेक **'पन'** भेलइ। 20 हजार हाथ उठाइ के 10 हजार कंठ सें हुल-हुल-हुल कहइ हुलुस्थुल के आइग गनगन भेइल। सिधू-कानू, सुन्ना, किरता आर भादू, पाँच गो मरखँड़िया महाजन के माइर **'हुल'** के सुरू करला। 'हुल' के हंगामा सें अंग्रेज के अकिल अकबकाइ गेल। दिघी के दरोगा सिधू-कानू के गिरिफतार करे गेल मगुर खुद धराइ गेल। 'हुल' के अदालत में पसन-दंड के सिकार भेल। 7 जुलाई 1855 तक वीरभूम, बाँकूड़ा, हजारीबाग, गोला, चास, कुजू, झरपो, बगोदर में 'हुल' के चिनगिनी हदइक उठल। लुबिया माँझी, बेरू माँझी, अर्जुन माँझी के दल दिक-दिक करे ओला दरोगा प्रताप नारायण के खतम कइर देला। हुल के हुरे खातिर बहारनपुर में मजिसटेट टूगुड सेना के साथ भेजल गेल। राज महल में मार्सल लो लागु भेल। भागलपुर में सिधू आर लटाइ माँझी पकराइ गेला। हजारीबाग-माँडू के तीन जिमींदार हुल के संग देला। अंग्रेज ओखनिक गढ़ ढीपाढान कइर फाँसिक फाँदे लटकाइ देल। आसी कोस में 'हुल' के हुइलमाइल फइलल। हुल के हड़कवे आर हचपचवे खातिर 15 हजार सैनिक ई जुधें झोंकल गेला। ई महासंगराम में सिधू-कानू समेत 200 संथाल विदरोही अंग्रेजी बंदूक के सिकार भेला। 'हुल' के हाला-हुजरा में भागलपुरें चाँद-भैरव भी बीर गति पहला। एगो घारें ठसमठस बिदरोही बंद हला। हवाक भुरकी गुला में बंदूक नली ढुकाइ के अंग्रेजी सेना सब के भीतरे में भुइंज देला। केंवाइर कोचें एगो बुढ़ा

फरसा लइ के सपटल हल। केंवाइर खोलते मतर मेजर के मुँड़ी टोइन देल। मगुर हाय! बाकि बिदरोही लास बइन के पथाइर हला। ई नर-हतिया में 251 गो सकत संथाल, 191 गो डोम, धांगर, गोवार आर 46 गो 9-10 बछर के गीदर हला। सोब मातरिभूमि के खातिर निछावर भइ गेला। आवा! सोभिन एखनिक समाधि में सरधा-सुमन चढ़वब। ●

महुआ

सोमवार, 7 अप्रैल 2008

एखन टहलु दादा, दुलरी दीदी, ढेमना, लुरका, देवा मोहर माहतो, लुखरी, सुकरी झनवाँ, सुगनी, कजरी गोटे गाँवेक जनी-मरद, बुढ़-जुआन, चेंगा-चुटिया महुएँ मातल हथ। सोब काम छोइड़ के महुआ डोंगे बिछे सुखवे राखे धरे बेंचे-कीने में लागल हथ। टहलु दादा, दुलरी दीदी टहल मारे छोइड़ के महुएँ बाझल हथ। ढेमना आर लुरका तो महुआ सुखाइ-सुखाइ तीन बिटा बाँधल हथ। कइ झने तो मउज-मसती खातिर रस भी गारल हथ, आर ठोनगी ढारल हथ। महुआ दर-दइइब दिए ओला सोबले बोड़ साधन लागइ। इटा सोब बोनतरिआ गुलें बेस कइर बुझे पारल हथ। गाछें महुआ आइल सें बोन तरिआ गुला में असली मधुमास आइल हे। सच में गाछ तर महुआ पाथाइर देखल सें पिधान-ओढ़ान, खान-पान, रूप रगें विकास आइल

हे। गँवइआक हिएं हुब-हुलइर हुलास आइल हे। परकीरति पुजक सरहुल के तालें मुंडा, माझी, माहतों विरोहोर हे। ढोल, नगारा, माँदइर, बाँसी, नाच-गाने सोरोबोर हे। खाली मानुस नाञ्, बोने पाल्हा-पातेक जुआनी भी गदराइ रहल हे। हेंडर-हेटंग गाछें भी नावा-नावा पतइ बहराइ रहल हे। बोन सुंदरिक रूप-रंग निखराइ रहल हे। गरू-डांगर के दल भी नउतन पाल्हा-पात खाइ के पोगराइ रहल हे। सल-सलिआ सरइ राख गुला लउतन पातें सइज सँवइर के अप रूप सुंदर बइन गेल हथ। बोनेक रखवइआ गुला बोनेक समरिधि देइख के धइन भेल हथ। कोइल कुहकऽ-हथ, चरँइ चिनगी चहकऽ-हथ, पाँड़-पेरवा मलकऽ-हथ, मइना-मेंजुर नाचऽ-हथ। कजरी भी मधु मासेक रंगें रांगाइल ही। नावा-नावा पिंध के डहरें डाँड़ाइल ही। सहेलिक काँधें हाथ दइ गाल मारे में रितुआइल ही। कजरिक काँचा उमइर भी गदराइ गेल हइ।

साँझे टहलु दादाक बइठकी में बत-कुचन सुरू भइ गेल हे। दादा कहला - ई मधु मासें भी सहर बाटें साँति नाञ् हे। रकम-रकम हुइल माइल हे, मानुस मारा चाइल हे, मानुस समाज काना पतिआरी सें चाँताइल-चिपाइल हे। पंचेत में एगो बुढ़ी के डाइन बोइल के पिटल गेल हइ। नावाडिहें जादु-पटिया सरग-नरक के फेव-फेचांग रइच, हजार टाका ठइक लेल हें ई बइगिआनिक जुगें काना-पतिआरी नाञ हवेक चाही। मगुर मानुस माटिक मुरुत से **डेरवल** जा हथ। धूप-धुनाक धुंगे फँसवल जा हथ। सिरिसटी के सोबले बेस सिरजन लाखों मानुस के गुलगुलिया कहल जा हइ। जकराँ पेट भोइर जुठा भी नसीब नाञ् हवे हे। लाखों मुरुत खातिर लाखों मन दूध-घी के भोग चढ़े हे। देसेक **संकट-मोचन** खातिर मुानस नित नावा-नावा मुरुत गढ़े हे। पतरा में देसेक भविस खोजे हे। जाइत-धरम के राजनीति में दाव-पेंच चले हे। जाइत-पाइत के संगठन बेसी बइन रहल हे। दुलरी दीदी कहला- बेस भविस खातिर सोब रकम के काना-पतिआरी छोइड़ बइगिआनिक विधि सें चललें गोटे मानुस समाज सुख-चइन सें सजतइ। ●

भगता परब

सोमवार, 30 अप्रैल 2007

भेलाटाँइड़, गोबिन्दपुर, सिजुआ, बरवाअड्डा जइसन दर्जनों गाँवें भोगता परब पार भेलइ। टहलु दादाक गाँवे भी भोगता के डुगडुगी पिटाइ गेल हइ। पसना नाया संजोत-उपास के दिन धइर देल हथ। गाँवेक मंडा, माने सिब-थान के धोइ-धाइ, रगइद-हँसइत के चिकचिकाइ देल गेल हइ। बुझा-मता खातिर टहलु दादाक दुआरीं गोटे गाँव जुमल-जुटल हथ। काइल से बिहरी आर अछत उठवेक काम सुरू हतइ। देवा, दादा सें कहल कि भोगता परब हामनिक खुँट दर खुँट सें पुस्त-दर पुस्त सें चलल आइ रहल हइ। सइले एकर इतिहास के फरनाइ के बतावा। दादा कहला- एकर इतिहास के बहुत अरगुझाइ देल गेल हइ। एखन ई कालेक खोहें चाँताइल चिपाइल हइ। मगुर ई परब में सकत माने नुकाइल हइ। मुदइ गुलें इतिहासेक

पतइ फाइर देल हथ। मगुर परम्परा परथें, नेगाचारें, लोकगीतें एकर इतिहास एखनो गुलमुटाइल हइ। लोक गीतेक गोड़ा धइर समसे पारलें, से बेराक सइभता आर पुरखा-पुरूस के बीरता गुलाबुझल जाइ पारे। हाँ एखन खेपचा बुढ़ा सें बेसी जानल जाइ पारे। खेपचा बुढ़ा एकाइ एकधारीं चुकुमुकु बइसल हला। उनखर मुड़ेक चुइल पाइक के सोन भइ गेल हइ। चाम चिमइस के झोलइंग गेल हइ। पुछला पर साँथाइ- साँथाइ सोंइच के बजइक उठला- हाम्हु देखल तो नाञ् हों, मगुर बुढ़-पुरनियाँ सें, खोजवइया गुला सें, कानाकानी सुनल हों कि भोगता परब के **तारा माचा** टा, **फुलखुँदी** टा, **पाट** आर **परबइती** गुला कोनों **'खेला-मामा'** नाञ् लागइ। ई माटिक पेटें खाली खाइन-खनिज नाञ्, इतिहासेक खजाना भी नुकाइल हइ। हियाँ हीरा, सोना, मानिक मुक्ता, नीलम, मूंगा, जइसन रतन, पसु धन, दामी काठेक बोल ठसमठस हलइ। चोरी-हेरी, मोद-जुहा, बरनबाद, जाइत-पाइत, राजा-रानी, ऊँच-नीच, तिलक-दहेज जइसन दुरगुन नाञ् हलइ। सभीन सामूहिक रूपें खइट के सुखें-सुखें खान-पान करऽ-हला। माटी के रछा में विक्रम, बिरोचन, बालि, भैरव, मुचकुंद अंधक कपिला सुर, सहस्रबाहु, त्रिपुर जइसन बीर हला। पराक्रमी पुरुस 'सिब' एखनिक निआयी नेता हला। हियाँक धनेक लोभ लोलोसें बिदेसी लुट के लीला सुरू भेलइ। आइर्ज-अनाइर्ज के जुध बहुत परसिध हइ। विदेसी लुटेरा सब घोड़ें चइढ़ के आवऽ-हला आर कबिला सब के लुइट-पाइट के भाइग जा हला। भागल बाद झुरी-झाँख, काठ-पात डिंगाइ के आइग लगाइ अइसन डहर बंद कइर दे हला कि हियाँक आदिनिवासी वीर एखनिक रगदे नाञ् पारऽ हला। सइले मुदइ गुला के रगदे खातिर सिब रकम-रकम के जुगुत आर सीख देला।

इ **'तारा-माचा'** टा सिबेक बनवल लड़ाइ के एगो 'साना फाना' लागइ। ई गाढ़ा-ढोढ़ा आर आइग डेगेक कामे आवऽ हल। बीर गुला के बाज-बजना के संगे खुसी-खुसी गनगन आइग के, फूल बुइझ के, कांटा-कुसा से नोचाइ भोंसाइ के, आगीं डिगबाजी दइ के, नाइच गाइ के, पार हवेक सीख देला आइज भी परबइती खूब बीरता सें खुसी-खुसी पेटें, पीठें, जीभें-काँटा भोंसाइ के परथा के करऽ हथ। आगीं चलेक नेगाचार के **फुलखुँदी** कहऽ-हथ। बीर रसें खूब नटुआ नाइच के लहकल आगीं खुसी सें पार हबऽ-हथ। धइन हला हामनिक बीर पुरबा-पुरुस। ●

झारखंडी जिनगी

21 जुलाई 2009

टहलु दादा कहला - ई माटिक जिनगी, सुध-सुपट हे। नाञ् झगरु से ढंढट हे, नाञ् ललचु सें लटपट हे। एकदम सादा-माठा। नाञ् सहुवा सें साठा, नाञ् लपकु सें लाइ-लाठा। कभुँ छल-छइब नाञ्, दागी दर-दरइब नाञ्। बिसाहा नेति नाञ्, मानुस-मरवा परबिरती नाञ्। भिनभेदवा चाइल नाञ्, केव धने माताइल नाञ्। असमियाँ रकम अइग टंगवा नाञ्! मराठी रकम मरखँड़ नाञ्। माटिक मानुस सातु-साग माँड़, खुदी-चुनी, मेरखु, महुआ, कोदो, करहइनी, महुआ, गोंदली, दोतइन दोनाक बोल सें दमगर हे। गाढ़ा-ढोड़ाक पानी ढकइच हुबगर हे। बोनेक लत-पात, फल-फुल, चिहंइर-चोप, सबइ-डोरा सें गुजर-बसर हे, चित चेठगर हे, कामें पइतगर हे। बिना खटल खाइ नाञ्। काम नाञ् तो भोजन नाञ् के रेवाज हे, बिता भोइर भगवें

नुकाइ जाहे लाज हे। देहीं कुरता नाञ्, गोड़ें जुता नाञ्। मुँड़ उखर हे, मगुर खुसी घरी-सगर हे। रहेक कुंबा-कुरिया हे, काम हाजरी-फुटिया हे। माटिक मानुस कभुँ पेट सें बेसी सोंचल नाञ् ककरो धन नोचल नाञ् कभुँ। इमान सें पेट के जुध लड़े हे, पेट लइ दउड़े हे। कभुँ जिनगीं कचा-कउड़िक खुसहाली नाञ्, गदा-नेहाली नाञ्। मगुर माटिक समरिध संसकीरति के कारन अनवरत रीझें राँगल राइत हे, हुबे भोरल दिन हे। गरीब हे, मगुर खुस सगरखिन हे। हाड़ हिलाइ **जनि-मरद** संगे खटे हे, संगे खा हे, आर अखरें खुसी-खुसी संगे नाचे हे, गावे हे। झारखंडी जिनगी में नाच-गान के एते महत्‌ हे कि झारखंडी संसकीरति के बिखिआत बिद्‌मान मानिन डा. राम दयाल मुंडा जी कहल हथ कि "झारखंडियों का चलना ही नृत्य हे, और बोलना ही गीत है"। हाँ, आदिबासिक खुसी देइख दुनिआँइ चकित हे। अखरा में जनि-मरद-बुढ़-जुआन, गिदर सोब काँधा जोइर, डाँड़ा पकइर, हिया खोइल नाचऽ हथ। लय-ताल के रस सोभिन चाखऽ हथ। अखरें केव देख-निहार नाञ्, सभे नचनिहार।

झारखंडी जिनगीं, परकीरतिं परब बतर सिरें आवे हे। जखन खेतेक काम जाहे सिराइ, धान जाहे हरियाइ, परकीरतिं जाही गदराइ, धरती सरइस के लेही आकास के चुमा, तो खुसी लइके आवे हे करमा। सावने साँथाइल, माँदरें थाप पड़े हे, ढोल नगाड़ा गड़गड़ाइ उठे हे। बाँसी बोले हे। अखरें झिंकाझोइर झलका-झुमइर के तामझाम हवे हे। जुमल-जुटल जुआन बेटी छउवाक करम मिलन के सरंजाम हवे हे।

धन कटनिक बाद झारखंडी हवऽ हथ निफिकिर। सोब के हाँड़ी हइ जा हे थिर। कुल्ही-कोचें गीत गनगना हे

"अइलइ पुस-परब लाइ-पिठा घारें-घारें .....।

रसिक डोहाक सुरे पिरित के हाँक देहे.... आसा जे देले नुनी गे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ भोरोसा जे देले गे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ओरे निमा तरें राखऽ लें डाँड़ाइ ...."

जखन खुसी जा हे बतराइ, तो खुब हुब हुलइर हरस हुलास लइ के आवे हे सोहराइ। मिरा संग खटे ओला बरद-काड़ा के सनमान मिले हे। दुल्हा रकम चुमान मिले हे।

झारखंडी जिनगीं जाइत-पाइत, ऊँच -निच, छुआछुत भिनाभेद के बिसाहा नेति नाञ हे। मानुस मारा चाइल नाञ हे।

मगुर अपसोच कि आबे झारखंडी आचार-बिचार, संसकार, परब-तिहार, उठन-बइसन, चाइल-चलन मोइर रहल हे। करमा कोंकइर रहल हे। सोहराइ सकपकाइ रहल हे। बँउड़ी बोंड़ाइ रहल हे। सरहुल सरमाइ रहल हे। **अखरा** गुला **अखाड़ा** बइन रहल हे। सादा जिनगी करिया होइ के कॉइद रहल हे। नइतिक मुइल कलइप रहल हे। असमिता अध-मोरवा हे। रसम-रेवाज रगदाइ रहल हे। पहिचान के पाँइख पुदकाइ रहल हे। ढेइर भासाक मेसर-कोसर भेला सें झारखंडी भासाक भइरता बइन रहल हे। पइजामा के कुरता बइन रहल हे, ढढ़नच के ढाँक-ढोल बाइज रहल हे। सोब जन दोसर के ढेंकी कुइट रहल हे। झारखंडिक उजर छबि छुइट रहे हे। झारखंडी जिनगी के जगवे जोगवे आर जगजगवे के दरकार हइ। आरो हँकइबो। ●

लउतन जुग

एतवार, 15 मार्च 2009

मानुस महान हे। मानुसें सोबले बोड़ जिनिस ओकर बुइध-गियान हे। बुइध-गियान के चलते ई पिरथिवि में मानुस के बिसेस पहिचान हे। मगुर ई देसें मानुस से बेसी जानवर के मान हे, बेसी गुनगान हे। आरो जाना कि मानुस आपन बुइध गियान सें बिगियान के पाइल हे। माथा खटाइ-खटाइ मानुस बिगियान के मदइत सें सुइया सें जहाज तइक आर पेंपटी सें मोबाइल तइक अनगइन आबिसकार छिरियाछाट करल हे। चाइल-चलन, उठन-बइसन, आवा-जाही बात-चित, पिंधना, ओढ़ना, गढ़-गुढ़ा सिंगार-पटार रिझ-रंग के समान अनठेकान करल हे। दोसर बाटें मेढ़-मुरूत जइग-जाप, भजन-किरतन, तिरिथ बरत के नावें धरमेक धुनी में ढेइर धन धुँकल जाहे। किताप, अखबार, टी.बी. चेनल, फिलिम, जते बुइध गियान बढ़वेक अउजार

हे, सोब गुला के बुइधमान पूंजीपति आर धार्मिक गुलें आपन-आपन धाँधा बढ़वेक अउजार बनाइ देल हथ। ई धाँधा सें पुंजीपति आर संत नावा रकम के जिमिंदार बइन गेल हथ। एखनिक लोभ-लोलोस पिरथिवि के ढिपाढान कइर रहल हे। माटिक पेट फाइर-चिर के पिरथिविक नेसनाबुत करल जाइ रहल हे। सरगत माटी के पाकाइ-पकाइ पँच-तरवा गढ़-गुढ़ा गढ़ल जाइ रहल हे। रकम-रकम झूठ आर पाखंड रचल जाइ रहल हे। बुइधमान गुलें आपन पुंजी आर बरच बढ़वे खातिर रकम-रकम ढढ़नच के ढेंकी कुइट रहल हथ। मानुस-मारा चाइल, बिसाहा नेति, गुला के बढ़ाइ रहल हथ। आइज हड़-तोरवा काम करे ओला समाज भुखा-दुखा हे, रूखा-सुखा खाना खाइ रहल हे। पेटें भात नाञ, देहिं कुरता नाञ्, गोड़ें जुता नाञ। पिएक बेस पानी नाञ। खटे ओला केव धनी-मानी नाञ। मगुर बइस-बुलुवा बुइधमान, रकम-रकम के बुइध रइच विगियान आर धरम के मदइत सें बिना खटले जिंमिदार बइन जा हथ। सरू बासमती चारेक भात खा-हथ। छप्पन भोग के सोवाद चाखऽ-हथ। काल्हा हावाक कोठरीं रहऽ-हथ। पँच-तरवा जिनगी जिअऽ-हथ। गरीब गुला के गुलाम बनवे खातिर सिछा के दोकान खोइल महंगा बेंच हथ। गरीब के देवालें **'पूर्ण साक्षर'** लिख देल जा हे। गरीब के बेटा-बेटी कधियो केम्ब्रीज के मुँह नाञ् देखे पइता। गरीब के संकट मेटे खातिर गाँवें-गाँवें **संकट मोचन** के मुरुत कइर देल गेल हइ। गरीब मुँड़ पटइक रहलं हथ। देखल जाइ गरिबेक संकट कधिया खतम हवे हे।

बिहा

15 फरवरी 2009

मधुमास आइल हे। महुआ मह-महाइल हे। मइना-मेंजुर मिलन मउजें मोक-मोकाइ रहल हथ। मानुसो मिलन खातिर मन मनाइल हथ। कोइल कुहके हे, मेंजुर नाचे हे, गाछें पात-पाल्हा फुनगल हे। बेटा-बेटिक बिहा खातिर बतर सुतरल हे। बिहा माने जनि-मरद के रद-बद रहेक रिसता। जोरो हइ जिनगी जिएक माइनता। धिया-पुताक बिहा देवा टा माञ्-बापेक करतप हे। सइले धिया-पुताक सिआन हवइते माञ्-बाप जोर-नारेक उता-सुता सुरू करऽ-हथ। बेटिक बाप भोरल-पुरल घार, आर गुनगर रूपगर बोरेक तिहा-तलास करे हे। बेटाक बाप अपरूप सुन्दर चनफन चिकन कनिआँइ आर माइन-गइन परिवार के जुगुत लगवे हे। ई महिने, ई काम खातिर पर-पोहनाक आना-गोना, उठन-बइसन, खाना-पान, मान-सनमान, कथा-बतरा खुब

चले हे। मनेक मतन गनगन घार, बोर, कनिआँइ के जोड़ लागलें बरतु-पातेक तइ-तपाटा हइ जा हे। बिहाक नेगाचार रसम-रेवाज सुरू हवे हे। आपुस-कुटुम गोतिया, हित-मितर नेवतल जा-हथ। झाँटल-पोतल, निपल-बोढ़ल चिकन घार गोझी-अंगना, पोहना-पर सें गन गनाइ उठे हे। नेगें-नेगें गीत-नाद, डेगें-डेगें बाज-बजना, पेंपटी ढाँक, ढोल, नगाड़ा गड़ गड़ाइ लागे हे। बतर सिरें "**बोर देखाइ कनिआँइ सही, लगन-बाँधा, उबटन मखवा, मड़वा छारा, कलस रांगा, हरदी रांगा, घी-ढारा, पानी-साहा, बाँध-कोंड़ा, आम-बिहा, अमिलो-पिया, बोर-तर जावा, बरिआत जावा, समधी-मिलन, बरिआती मिलन, नटुआ मिलन, घोड़ा-नाच, सारा-धोती लुटा**" हवे हे। बोर, पोरछन, महुआ बिहा, सोना-पितर हवे हे। पिअर धोतीं बोर पिअर लुगें कनिआँइ, मँड़वे आनल जा-हथ। समधिक गोड़ धोवाइ, लावा-पोंछरा, सिनइ फेरा, आर सेसें **सिंदरा दान** हवे हे। खिर खावान हवे हे, चुमान बइसे हे, घार-भोरा हे, आर बेटिक बिदाइ भइ जा हे। गाँवेक सिआँड़ी सखी-सहेली "संग छोड़ाइ" ले हथ। बोर-बरिआत, कनिआँइ लइ आपन गाँव बाटें मोहड़ऽ-हथ। गाँव पोंहचल पर घारें-घार सें गुर-पानी पिवेक रित हे। आपन दुआरीं पोरछन हवे हे। बोरेक बहिन सब दुआइर छेंकऽ-हथ, चुमान बइसे हे! चोठारी। अठ-मंगला, सिकार-खेला आर घुरा-फिरा हवे हे। दोंगा, तेंगा, बरिआत के मरजादी, लोकदिन, सोहरिया-लिआन, आर नटुआक नेग नरम पइर गेल हे।

बिहा मिलन दु रंग हे। पहिला माञ-बापेक तिहा सें जोहड़वल बंधन हे। दोसरा परकीरतिक रूप सें लड़का-लड़किक मने उपजल परेम मिलत हे। बाँधल-छाँदल बिहाक कारन सें संग-संग रहे में, आर परेम के कारन संग-संग रहे में, ढांगा फरक हे। पहिला में दु-अनजान जबरजसती बिहाक रातीं मिलऽ हथ। इ मिलने कुन-मुन के रेस रहे पारे। तिलक-दहेज तेज हे। मगुर परेम-मिलन बिहाक पहिले सें मनेक-मतन हे, चिकन-निमन हे। ई परेम परकी-रतिक हे। जिनगी भइर ठिक रहे हे। खुसी खदखदा हे। रिझें रांगल राइत आर हुबे भोरल दिन हवे हे। जोड़ी परेमे लिन रहे हे, खुसी सगरखिन रहे हे। तिलक दहेज सें परहेज रहे हे। ●

श्याम सुन्दर महतो 'श्याम'

श्याम सुन्दर महतो 'श्याम', खोरठा जगते एगो जानल चिन्हल नाम, जाव जिनगी लिखेक काम। ई मन गड़ाई, माथा खटाइ, साँथाइ साँथाइ, सोंइच-समझ, रकम-रकम, बरन-बरन, निमन-चिकन, कहनी, काइब, लेख, नाटक रिपोताज लिखल हथ, लिख रहल हथ। नान्हे उमइर सें सुतल के हाँक देते- देते, एखन मुड़ेक चुइल पाइक गेल हे जखन ई माटीं बिसाहा नेति आर मानुस मारा चाइल लइ, हतियारा ढुकला आर लुटे- कुटेक फेरें जइसन जुआन के माइर देला तो इनखर कलम 'मक्तिक डहर' रूपें हकइंद उठल। फइर जखन माटिक बेटा के लटवा-लाहइर कइर पँच-तरवा गढ़-गुढ़ा गढ़े लागला तो इनखर कलम गुरगुराइ उठल आर ई "तोञ् आर हाम" के रचना कइर देला। अइसने भाइगेक भोला गुला के परखउका गुलाक फचका फाँदे फँसल देइख के पोंगा पथिक खिलापे "चेडराक मुँडे बेल" लिखला। खोरठा लोक गीत आर आदि बासी वनवासी क्यों? (हिन्दी) छपइला आर 40 गो झारखंडी सहीदक संगिया रूपे गाथा 2700 विलोम साड़ा, 1000 एक रंगिया शबद, 1400 आहना, 1100 पटतइर, 1300 बुझवइल 1100 संगिया सबद, 2500 ढेइर सवदेक एक सबद आर 70 हजार सबदेक शबदकोस लिखला।

ई दैनिक अखबार, हिन्दुस्तानें चाइर बछर तइक पइत हपता 'हाँकाय रहल हियो भाय' सिरसकें 200 हाँक देल हथ। हियाँक सोब अखबारें इनखर रचना आवे हे आर आकास बानी सें भी परसार हवे हे। अखिल भारतीय सुरक्षा प्रतियोगिता में इनखर रचना परथम असथाने आइल हे। परिया वरन के ओदाबादी में इनखाँ राष्ट्रीय पुरूसकार मिलल हे, सुरक्षा, परियाबरन, परिवार नियोजन, राजभासा, कउमी एकता, गुणवत्ता सुझाव, उत्पादकता के नारा लेख कविता में सउ से वेसी पुरूसकार पाइल हथ। इनखर रचना के देसेक दु गो प्रधान मंत्री, परिया वरन मंतरी, तीन डी.सी, तीन एस.पी., एस.डी.ओ., डी.एफ.ओ. सराहना करल हथ। ई 1991 से 1997 तइक वोकारो खोरठा कमिटिक निदेसक, 2004 से 2010 तइक अखड़ा के उपाधइछ आर 2010 से 2013 तक अखड़ा के अधियक्ष रहल हथ। ई अखिल झारखण्ड खोरठो परिषद बाँटे ले श्रीनिवास पानुरी पुरूसकार आर अखड़ा वाटे ले 'अखड़ा सम्मान' पाइल हथ। एखनो इनखर लेखन दरदराइ के चइल रहल हे।

- दिनेश दिनमणि



श्याम सुन्दर महतो 'श्याम'

जनम तिथि : 3 सितम्बर 1939

जनम थान : गाँव- खेसमी, पो.- गोमो, जिला- धनबाद

बाप : केदार नाथ महतो (सिराइल)

माञ् : गंगा मणि (सिराइल)

जिनगिक संगी : इन्दु बाला

सिछा : स्नातक (राँची कॉलेज, राँची)

धिया पुता : कनक कान्ति, कुमुद कला (पति- अमर कुमार चौधरी, चिलदाग) आर कमल कान्ति.

कर्म थान : 1. एन.सी.डी.सी. सयाल कोलियरी (1962 से 1972)
2. बोकारो स्टील प्लांट (1972 से 1997)

साहितिक सांगठनिक जोगदान :

1991 से 1997 तक 'बोकारो खोरठा कमिटी' के निदेशक, 2004 से 2010 तक 'झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा' के उपाध्यक्ष और फिर 2010 से 2013 तक अध्यक्ष रहे।

छपल रचना :

1. मुक्तिक डहर, 2. तोञ् आर हाम, 3. चेड्राक मुँड़े बेल (खण्ड काइब), 4. खोरठा लोकगीत (लोक साहित), 5. आदिवासी वनवासी क्यों? (विचार), 6. मित्रता की मिठास (कहनी). 7. वृहत् प्रकीर्ण साहित्य (लोक साहित).

दैनिक हिन्दुस्तान अखबारें पइत हपता 500 सबदेक 200 हाँक 2006 से 2009 तक. हिन्दुस्तान, प्रभात खबर, रश्मि जइसन अखबारें आर पतरिका ले करीब 200 आलेख कबिता.

छपे खातिर तइयार :

1. 70000 सबद के 'खोरठा सबद कोस' 2. 2000 सबद कें 'बाल सबद कोस' आर 3. चालीस गो झारखण्डी सहीद के जीवन गाथा.

पुरस्कार-सम्मान :

इस्पात विभाग, बोकारो आर भारत सरकार द्वारा राजभासा, पर्यावरण, सुरक्षा, कउमी एकता, उत्पादकता, गुणवत्ता, कविता लेखन आदि विषयों पर आयोजित अनेक प्रतियोगिताओं में राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में प्रथम व अन्य पुरस्कारों से सम्मानित।

प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई, राजीव गाँधी, पर्यावरण मंत्री कमलनाथ, पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव, शिबू सोरेन और अनेक प्रशासकों व संस्थाओं द्वारा प्रशंसा पत्रों एवं सम्मानों से अलकृंत।

सम्पर्क : खेसमी, गोमो, धनबाद (झारखण्ड), चलभास : 9470367406

₹ 120

PYARA FOUNDATION

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन

चेशायर होम रोड, बरियातु, राँची-834009 झारखण्ड

www.kharia.in | www.akhra.org.in | pkfranchi@gmail.com

9 789381 056660